संक्षेप

साहित्य अकादेमी की द्विमासिक समाचार पत्रिका

सितंबर-अक्टूबर 2015

झलकियाँ

अनुवाद पुरस्कार समारोह
•
अनुवादक सम्मिलन
•
अभिव्यक्ति
•
राष्ट्रीय/ क्षेत्रीय संगोष्ठी
परिसंवाद
•
लेखक से भेंट
अनुवाद कार्यशाला
•
व्यक्ति एवं कृति
•
साहित्य मंच
•
कथा संधि
•
कवि संधि
•
कार्यक्रम सूची
•
नये प्रकाशन

सचिव की क़लम से...

साहित्य अकादेमी अपने सम्मानित लेखकों/कवियों के सहयोग से सदैव साहित्यिक गतिविधियों में सक्रिय रहती है। अकादेमी द्वारा हर वर्ष की भाँति इस वर्ष भी साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन किया गया। समारोह का आयोजन डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में हुआ। अनुवाद ही एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा हम भारत की भाषायी विविधता में भारत की विभिन्न संस्कृतियों, सभ्यताओं एवं साहित्य का रसास्वादन कर पाते हैं। इस समारोह में 'अनुवादक सम्मिलन' के अवसर पर अनुवादकों ने अपने अनुभव को श्रोताओं के साथ साझा किया, साथ ही 'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम के अंतर्गत विभिन्न भारतीय भाषाओं के रचनाकारों ने अपनी रचनाओं का पाठ किया। अनुवाद पुरस्कार अर्पण समारोह के बाद राजस्थान के लोक कलाकारों द्वारा लोकगीतों की प्रस्तुति इस समारोह का विशेष आकर्षण रही। 'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम के समापन के बाद सेंटर फ़ॉर परफ़ॉर्मिंग आर्ट्स के छात्रों की सुंदर प्रस्तुति ने इस पूरे समारोह को यादगार बना दिया। अकादेमी द्वारा आयोजित देश के विभिन्न क्षेत्रों में संगोष्ठी, परिसंवाद, साहित्य मंच तथा अन्य नियमित कार्यक्रमों की झलक इस अंक में प्रस्तुत है।

इस बीच कन्नड भाषा के सशक्त रचनाकार एवं अकादेमी पुरस्कार से पुरस्कृत, डॉ. एम.एम. कलबुर्गी हमारे बीच नहीं रहे। अकादेमी द्वारा अपने क्षेत्रीय कार्यालय में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया जिसमें उपस्थित लेखकों, विचारकों द्वारा श्री कलबुर्गी की हत्या पर शोक प्रगट किया गया तथा इस अप्रिय घटना की निंदा की गई। अकादेमी इस दुख की बेला में कलबुर्गी परिवार के साथ है।

डॉ. के. श्रीनिवासराव

संपादक की ओर से

आज एक लेखक के लिए यह दुनिया जितनी विचारवान है पहले कभी न थी। फ़ैसले, नज़रिये, राजनैतिक और व्यवहारिक सिद्धांत, प्यार व मुहब्बत के रिश्ते, सब विज्ञान और राजनीति की बढ़ती हुई ताक़त ने बदल दिए हैं।

वर्तमान सदी हमारे सामने बहुत सी समस्याएँ ले कर आई है। ग़ौर कीजिए कि आज हम कहाँ खड़े हैं? सारी दुनिया के लिखने वाले एक दूसरे के क़रीब आ रहे हैं, एक दूसरे की समस्याओं से परिचित हैं। कहानी और कविताओं के नए अंदाज़ और नए विषय बन रहे हैं। इसीलिए आज एक अजीब-सी ज़िम्मेदारी और भी बढ़ गई हैं। आने वाले युग की समस्याओं और उलझनों के लिए अमन और इंसाफ़ के रास्ते ढूँढ रहे हैं क्योंकि दुनिया के सभी अदीबों और रचनाकारों ने हमेशा हक़ और सच्चाई के चिराग़ अपने क़लम और कला से रौशन किए हैं और आने वाले शुभ दिनों की तरफ़ इशारे किए हैं। इसीलिए आज विज्ञान और राजनीति से मायूस दुनिया की नज़रें लेखक और कला की तरफ़ हैं। आज विज्ञान और तकनीक के आविष्कारों ने केवल हमारे आर्थिक तंत्र को ही नहीं बदला है बल्कि हमारे व्यवहारिक और सामाजिक व्यवस्था को भी बदल डाला है। कंप्यूटर ने किताब और क़लम की अहमियत कम कर दी है, ई-मेल ने पत्र और टेलीग्राम की ज़रूरत बाक़ी नहीं रखी। दुनिया अच्छाई की तरफ़ जा रही या बुराई की तरफ़, ये बातें सोचते रहिए, लेकिन विज्ञान की इस बढ़ती हुई रफ़्तार को रोक नहीं सकते। रोशनी से ज़्यादा तेज़ दौड़ने वाले इंसान के लिए अदब और आर्ट की क्या अहमियत होगी? इस बदलती हुई दुनिया के साथ अदीब को भी अपना अंदाज़ बदलना होगा।

कन्नड भाषा के विद्वान, विचारक, लेखक डॉ. एम.एम. कुलबर्गी की हत्या भारतीय साहित्य के लिए अपूर्णनीय क्षति है। इस कृत्य की जितनी भी निंदा की जाए कम है। श्री कुलबर्गी को शत् शत् नमन।

संपादक : डॉ. ख़ुर्शीद आलम
ई-मेल : po.ho1@sahitya-akademi.gov.in

अनुवाद पुरस्कार अर्पण समारोह

4 सितंबर 2015, डिब्रूगढ़

साहित्य अकादेमी द्वारा अपने अनुवाद पुरस्कार अर्पण समारोह का आयोजन 4 सितंबर 2015 को डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया तथा अनुवाद की महत्ता को रेखांकित किया। साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने भारत के बहुभाषी विविधता को रेखांकित करते हुए कहा कि इस बहुभाषी विविधता में भारत के इस पूर्वोत्तर क्षेत्र में सबसे अधिक क्षेत्रीय भाषाएँ हैं। उन्होंने अनुवाद के सौंदर्य के बारे में भी बात की। अकादेमी द्वारा पुरस्कार के रूप में रु. 50,000/- की राशि, स्मृति पट्टिका एवं शॉल भेंट किया जाता है। इस वर्ष के अकादेमी के अनुवाद पुरस्कार प्राप्तकर्ता निम्न हैं:

- **विपुल देउरी** (असमिया) – अमिश त्रिपाठी के अंग्रेज़ी उपन्यास *द इम्मोर्टल्स ऑफ़ मेलुहा* का असमिया भाषा में अनुवाद।

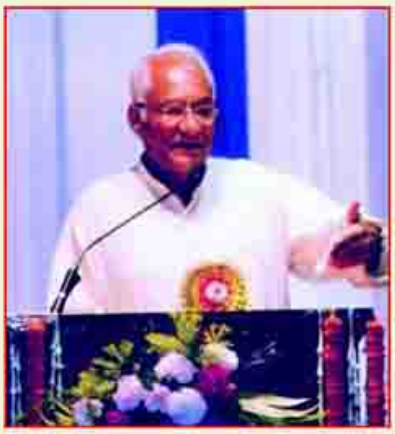

अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए
अकादेमी के अध्यक्ष विश्वनाथ प्रसाद तिवारी

- **विनय कुमार माहाता** (बाङ्ला) – सुधांशु शेखर चौधरी के मैथिली उपन्यास *ई बतहा संसार* का बाङ्ला में अनुवाद।
- **सुरथ नाज़ारी** (बोडो) – रवींद्रनाथ ठाकुर के *गीतांजलि* का बोडो में अनुवाद।
- **यशपाल 'निर्मल'** (डोगरी) – कृपासागर के पंजाबी नाटक *डीडो जम्वाल* का डोगरी में अनुवाद।
- **पद्मिनी राजप्पा** (अंग्रेज़ी) – संस्कृत के बाणभट्ट कृति *कादंबरी* का अंग्रेज़ी में अनुवाद।
- **(स्व.) नगीनदास जीवन लाल शाह** (गुजराती) – गुणरत्नम सूरी के *संस्कृत ग्रंथ* का गुजराती में अनुवाद।
- **फूलचंद मानव** (हिंदी) – बलदेव सिंह के पंजाबी उपन्यास *अन्नदाता* का हिंदी में अनुवाद।
- **जी. एन. रंगनाथ राव** (कन्नड) – राजमोहन गांधी की अंग्रेज़ी जीवनी *मोहन दास : ए ट्रू स्टोरी ऑफ़ ए मैन, हिज़ पीपल एंड एन एंपायर* का कन्नड में अनुवाद।
- **एम. एच. ज़फ़र** (कश्मीरी) – वसु गुप्त रेशी के संस्कृत निबंध *शिव सूत्र* का कश्मीरी में अनुवाद।
- **पांडुरंग काशिनाथ गावडे** (कोंकणी) – लक्ष्मण गायकवाड के मराठी आत्मकथा *उचल्या* का कोंकणी में अनुवाद।
- **रामनारायण सिंह** (मैथिली) – तक़षी शिवशंकर पिल्लै के मलयाळम् उपन्यास *चेम्मीन* का मैथिली में अनुवाद।
- **प्रिया ए. एस.** (मलयाळम्) – अरुंधती राय के अंग्रेज़ी उपन्यास *द गॉड ऑफ़ स्माल थिंग्स* का मलयाळम् में अनुवाद।
- **बाइख़ोम चा इबोतोम्बी मङ्गाङ्** (मणिपुरी) – रवींद्रनाथ ठाकुर के उपन्यास *नौका डूबी* का मणिपुरी में अनुवाद।

स्वागत वक्तव्य देते हुए
अकादेमी के सचिव के.श्रीनिवासराव

- **मधुकर सुदाम पाटिल** (मराठी) – गणेश देवी की अंग्रेज़ी कृति *ऑफ्टर अम्नेशिया* का मराठी में अनुवाद।
- **डंबर मणि प्रधान** (नेपाली) – सुरेंद्र वर्मा का हिंदी उपन्यास *मुझे चांद चाहिए* का नेपाली में अनुवाद।
- **रवींद्र कुमार प्रहराज** (ओड़िया) – टेकचंद ठाकुर के बाङ्ला उपन्यास *आलालेर घरेर दुलाल* का ओड़िया में अनुवाद।
- **तरसेम** (पंजाबी) – सुनील गंगोपाध्याय के बाङ्ला उपन्यास *मनेर मानुष* का पंजाबी में अनुवाद
- **कैलाश मंडेला** (राजस्थानी) – तिरुवल्लुवर कृत तमिळ काव्यकृति *तिरुक्कुरल* का राजस्थानी में अनुवाद।
- **नारायण दाश** (संस्कृत) – चंद्रशेखर दास वर्मा के कहानी-संग्रह *झड़ ओ अन्यान्य गल्प* का संस्कृत में अनुवाद।
- **सारो हंसदा** (संताली) – शरतचंद्र चट्टोपाध्याय के बाङ्ला उपन्यास *देवदास* का

मुख्य अतिथि वक्तव्य देते हुए

संताली में अनुवाद।

- **राम कुकरेजा** (सिंधी) – बाङ्ला यात्रा-वृत्तांत *मरु तीर्थ* का सिंधी में अनुवाद।
- **एस. देवदास** (तमिळ) – भवानी भट्टाचार्य के अंग्रेज़ी उपन्यास *शैडो फ्रॉम लद्दाख* का तमिळ में अनुवाद।
- **आर. शांता सुंदरी** (तेलुगु) – शिवरानी देवी की प्रेमचंद पर लिखी हिंदी जीवनी *प्रेमचंद घर में* का तेलुगु में अनुवाद।
- **वेद राही** (उर्दू) – वेद राही द्वारा रचित डोगरी उपन्यास *ललद्यद* का स्वयं द्वारा उर्दू में अनुवाद।

पुरस्कार अर्पण समारोह के बाद समारोह की मुख्य अतिथि ओड़िया की लब्धप्रतिष्ठ कथाकार डॉ. प्रतिभा राय ने सभा को संबोधित किया। अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि अनुवाद कितना कठिन एवं दुष्कर कार्य है। डॉ. राय ने आगे कहा कि अनुवाद प्रक्रिया में मूल भाव के कुछ अंश के नष्ट होने का भय सदैव बना रहता है। उन्होंने अनुवादकों को सलाह दी कि उन्हें उन्हीं पुस्तकों के अनुवाद करना चाहिए जिन्हें वे बहुत पसंद करते हैं। डॉ. राय ने लेखकों से आह्वान किया कि कमियों के बावजूद अनुवाद को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए। कार्यक्रम का समापन अनवर ख़ाँ मंगनियार एवं ग्रुप द्वारा राजस्थानी लोकगीतों की शानदार प्रस्तुति के साथ हुआ।

पुरस्कार ग्रहण करते हुए सुश्री सारो हांसदा

आविष्कार

9 सितंबर 2015, नासिक

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा कुसुमाग्रज प्रतिष्ठान, नासिक के सहयोग से 9 सितंबर 2015 को कुसुमाग्रज स्मारक हॉल, नासिक में 'आविष्कार' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल की सदस्य डॉ. अरुणा ढेरे ने अतिथियों का स्वागत करते हुए अपनी कुछ कविताओं का पाठ किया साथ ही कविता तथा कला के दूसरे पक्षों जैसे नृत्य, पेंटिंग एवं संगीत के अंतर्संबंधों को रेखांकित किया। उनके अनुसार कविता लेखन एक त्वरित प्रक्रिया है।

सुश्री शमा मटे लब्धप्रतिष्ठ कथक नर्तकी ने कविता और नृत्य के बीच रिश्तों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि नृत्य कला का एक पवित्र रूप है। शब्द के तात्पर्य को आसानी से समझा जा सकता है, किंतु कला को जानने के लिए परंपराओं के सिद्धांतों को जानना पड़ता है उन्होंने कविताओं का पाठ किया तथा कविता पाठ के दौरान उनकी शिष्यों द्वारा नृत्य का उत्कृष्ट प्रदर्शन किया गया।

मशहूर पेंटर श्री चंद्रमोहन कुलकर्णी ने संक्षेप में कविता एवं पेंटिंग कला के बीच संबंधों की बात की। उन्होंने स्पष्ट रूप से श्रोताओं के साथ साझा किया कि एक कविता के लिए पेंटिंग करते हुए वे कविता के कवि को एक किनारे कर देते हैं और कविता के अर्थ की बहुलता में शामिल हो जाते हैं। उन्होंने कविताओं पर बनाए गए अपने कुछ चित्रों को प्रदर्शित किया।

प्रसिद्ध शास्त्रीय गायक पंडित सत्यशील देशपांडे ने कहा कि एक शब्द धुन के अनुरूप एक राग में तब्दील हो जाता है। किसी शब्द का अर्थ सरल होता है लेकिन जैसे ही वह गीत में इस्तेमाल होता है उसकी धारणा बदल जाती है।

श्रोताओं द्वारा 'आविष्कार' की इस प्रस्तुति को सराहा गया।

11 अक्टूबर 2015, जम्मू

साहित्य अकादेमी द्वारा डोगरी संस्था, जम्मू के सहयोग से के. एल. सहगल हॉल जम्मू में 'आविष्कार' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें डोगरी के प्रसिद्ध कवि दीनू भाई पंत की कविताओं को लब्धप्रतिष्ठ गायक सुरेश चौहान ने प्रस्तुत किया तथा जिसे संगीतबद्ध किया था श्री बृजमोहन ने। सुश्री सोनाली डोगरा ने भी दो कविताओं को स्वरबद्ध किया था। बाँसुरी पर श्री सुनील शर्मा, गिटार पर श्री संजय पाशी, करण मल्होत्रा तबला और बृजमोहन ने हारमोनियम पर संगत किया।

अनुवादक सम्मिलन

5 सितंबर 2015, डिब्रूगढ़

साहित्य अकादेमी द्वारा पुरस्कृत अनुवादकों का सम्मिलन 5 सितंबर 2015 को डिब्रूगढ़ में किया गया, जिसकी अध्यक्षता अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका कर्बी डेका हज़ारिका ने की। सम्मिलन में बोलते हुए बोडो के सुरथ नार्ज़ारी ने कहा कि अनुवाद करते हुए मुझे लगा कि मूल रचनाकार के भाव का अनुवाद बहुत मुश्किल होता है। डोगरी के श्री यशपाल निर्मल ने कहा कि मेरा दृढ़ विश्वास है कि आज जबकि पूरा विश्व सूचना तकनीक के माध्यम से एक गाँव बन चुका है, अनुवाद की भूमिका अतुल्य है। ओड़िया भाषा के लिए पुरस्कृत रवींद्र कुमार प्रहराज ने कहा कि मुझे जिस वाड्ला उपन्यास के अनुवाद पर पुरस्कार दिया गया है, संभवतः भारतीय साहित्य में यह पहला उपन्यास है जिसमें आम आदमी और उसकी गतिविधियों को चित्रित किया गया है जबकि दूसरी भाषाओं में ऐतिहासिक एवं पौराणिक रोमांस को दर्शाया गया है। अंग्रेज़ी के लिए सम्मानित पद्मिनी राजप्पा ने कहा कि मेरा मानना है कि सभी अनुवादकों का सामना पठनीयता बनाम सच्चाई से होता है। उन्होंने आगे कहा कि समस्याओं के दो पहलू हैं- लेखक की शैली की सच्चाई तथा रचना की सामग्री की सच्चाई।

हिंदी के लिए पुरस्कृत फूलचंद मानव ने कहा कि उन्हें कविता का अनुवाद करना अच्छा लगता है क्योंकि वे कविता की व्याख्या अपने ढंग से कर सकते हैं। कन्नड भाषा के लिए पुरस्कृत जी. एन. रंगनाथन राव ने कहा कि एक अनुवादक के लिए पूरी तरह से अर्थ और मूल रचना की बारीकियों की समझ होना ज़रूरी है। अनुवादक को दोनों भाषाओं की निष्पक्ष काव्य शास्त्र, अर्थ के ज्ञान और स्वनिम होना चाहिए। कश्मीरी के एम. एच. ज़फ़र ने कहा कि जब हम उस परंपरा की जाँच गहराई से करते हैं तो हमें अपनी जड़ों का मध्ययुगीन कश्मीर के आध्यात्मिक और रहस्यवादी संस्कृति में जाने का एहसास होता है। कोंकणी भाषा के लिए सम्मानित पांडुरंग काशीनाथ गावडे ने कहा कि कोंकणी साहित्य में दलित साहित्य बहुत कम है। *उचल्या* जैसी दलित प्रेरित रचनाएँ जनसाधारण को जागरूक एवं शिक्षित करती हैं। मैथिली के श्री रामनारायण सिंह ने कहा कि वे जो कुछ भी लिखते हैं खुद की खुशी और संतुष्टि के लिए लिखते हैं। यह उनके अनुवाद कर्म में भी परिलक्षित होता है। नेपाली के डंबर मणि प्रधान ने दुनिया में अनुवाद के विकास के बारे में बात की। कुछ प्रसिद्ध लेखकों का हवाला देते हुए उन्होंने कहा कि दुनिया विभिन्न अनुवाद के माध्यम से हर व्यक्ति के लिए एक छोटी जगह हो गई है। पंजाबी के श्री तरसेम ने कहा कि अनुवाद इसलिए महत्त्वपूर्ण है कि एक भाषा के माध्यम से हम दूसरी भाषा की रचना को जान सकते हैं।

राजस्थानी के कैलाश मंडेला ने कहा कि कुरल काव्य के द्वारा हम दैनिक जीवन को कैसे एक आदर्श मानदंड के अनुसार व्यतीत कर सकते हैं। संस्कृत के नारायण दाश ने कहा कि अनुवाद करते समय मौलिक स्रोत को बरक़रार रखना चाहिए। संताली की सारो हंसदा ने कहा कि वे फ़िल्मों से बहुत ज़्यादा प्रभावित हैं। *देवदास* का अनुवाद करने में उन्हें लगभग दो वर्ष का समय लग गया। तमिळ के एस. देवदास ने कहा कि मुझे कथेतर साहित्य को अनुवाद करना अच्छा और चुनौतीपूर्ण लगता है। असमिया के बिपुल देउरी ने कहा कि शुरू में मुझे लगा था कि अनुवाद कठिन कार्य नहीं है लेकिन बाद में पता चला कि अनुवाद करना एक दुष्कर कार्य है।

बक्तव्य देते हुए अंग्रेज़ी के लिए पुरस्कृत श्रीमती पद्मिनी राजप्पा

हिंदी के लिए पुरस्कृत फूलचंद मानव

अभिव्यक्ति

5 सितंबर 2015, डिब्रूगढ़

साहित्य अकादेमी द्वारा अनुवाद पुरस्कार अर्पण समारोह के दौरान 5 सितंबर 2015 को अभिव्यक्ति कार्यक्रम का आयोजन डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय में किया गया जिसमें विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों/कवियों को रचना पाठ के लिए आमंत्रित किया गया था। इस अवसर पर अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि एक रचनाकार के लिए सबसे बड़ी चुनौती यह होती है कि स्वयं को कैसे अभिव्यक्त किया जाए। कई बार ऐसा भी होता है कि बोली गई भाषा को जब शब्दों का रूप दिया जाता है तो वे अपना बहुत-सा सार खो देते हैं। इस अवसर पर विशिष्ट अतिथि के रूप में पधारे डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. अलक कुमार रगोहाईं ने विज्ञान एवं रचनात्मक लेखन के मर्ज पर बात की। अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. कर्बी डेका हज़ारिका ने कहा कि साहित्य किस प्रकार अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है तथा अकादेमी को इस आयोजन के लिए बधाई दी।

बोडो के श्री रत्नेश्वर बसुमतारी ने अपनी बोडो कविताओं को प्रस्तुत किया तत्पश्चात् उनके हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किए। मणिपुरी के डॉ. गुरुमायूम बिजय कुमार शर्मा ने अपनी मणिपुरी कविताओं को पहले मणिपुरी में फिर कुछ कविताओं के हिंदी अनुवाद प्रस्तुत किए। नेपाली के श्री अरुणचंद्र राय ने अपनी कुछ कविताएँ नेपाली तथा अंग्रेज़ी में प्रस्तुत कीं। तमिळ के श्री अयप्पा माधवन ने अपनी कुछ तमिळ कविताओं के अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए। असमिया के श्री जीबन नाराह ने भी अपनी कुछ कविताएँ प्रस्तुत कीं। सत्र के अंतिम कवि उर्दू के श्री रऊफ़ ख़ैर ने अपनी उर्दू नज़्में और ग़ज़लें प्रस्तुत कीं जिसे श्रोताओं द्वारा सराहा गया।

सत्र का समापन डिब्रूगढ़ विश्वविद्यालय के सेंटर फ़ॉर परफ़ार्मिंग आर्ट्स के छात्रों की नृत्य प्रस्तुति से हुआ।

6 सितंबर 2015 को प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध लेखक श्री नगेन सइकिया ने की तथा सत्र का विषय था 'मेरी दुनिया मेरा लेखन'। बाङ्ला के सिलादित्य सेन ने इंदर ठाकुर और विभूति भूषण के चरित्रों पर प्रकाश डाला तथा कहा कि ये चरित्र मानवजीवन के आदर्श उदाहरण हैं तथा उनके अलग-अलग अनुभवों और भावनाओं के कारण सामने आते हैं। मलयाळम् लेखक पी. सच्चिदानंदन ने सेना की अपनी सेवाओं को याद करते हुए चीन द्वारा तथा पूर्वी पाकिस्तान के पूर्वोत्तर में आक्रमण को रेखांकित किया। उन अनुभवों ने सामाजिक आर्थिक समस्याओं पर लेखन को विवश किया। मणिपुरी के आई. देवेन सिंह ने जो कि पेशे से एक चिकित्सक हैं, ने कहा कि लेखक को अपने लेखन द्वारा सामाजिक परिवर्तन लाने की कोशिश करनी चाहिए।

मराठी के श्री राजन गवास ने कहा कि समाज और क़ानून एक बार फिर केंद्र में है। उन्होंने देवदासी आंदोलन के बारे में भी बात की। सत्र के अध्यक्ष श्री नगेन सइकिया ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि एक लेखक को मानवता प्रेमी होना चाहिए, प्रेम के बिना कोई व्यक्ति रचनात्मक लेखक नहीं हो सकता।

दूसरा सत्र कहानी पाठ का सत्र था तथा सत्र की अध्यक्षता कोंकणी भाषा के श्री पुंडलिक नाइक ने की। श्री देबाशीष पाणिग्रही जो कि एक

अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव

अभिव्यक्ति कार्यक्रम के प्रतिभागी

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

पुलिस अधिकारी हैं, ने अपनी अनूदित कहानी का पाठ किया। सत्र के अध्यक्ष श्री पुंडलिक नाइक ने कहा कि कैसे कहानियां महत्त्वपूर्ण होती हैं और कहानियों को किस तरह रेडियो नाटक, टीवी सीरियल तथा टेलीफिल्म के रूप में रूपांतरित किया जा सकता है।

अंतिम सत्र काव्य गोष्ठी पर आधारित था तथा सत्र की अध्यक्षता राजस्थानी के श्री चंद्रप्रकाश देवल ने की। सत्र में डोगरी के कवि श्री मोहन सिंह ने अपनी तीन कविताएँ 'तपती धूप', 'वर्तमान का चित्र' एवं 'मुर्गा और आदमी' प्रस्तुत कीं। गुजराती के श्री संजू बाला ने अपनी गुजराती कविताओं तथा उनके अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए। मैथिली की सुश्री स्वयंप्रभा झा ने अपनी कविताओं का पाठ किया। संस्कृत की सुश्री जयश्री चट्टोपाध्याय ने अपनी संस्कृत कविताओं का पाठ किया। पंजाबी के श्री सतपाल भीखी ने अपनी कविताएँ पंजाबी एवं हिंदी में प्रस्तुत कीं। सत्र के अंत में सिंधी के कवि श्री हरीश करमचंदानी ने भी अपनी सिंधी एवं हिंदी कविताओं का पाठ किया।

समारोह में छात्र, अध्यापक, लेखक, कवि तथा मीडिया के लोग भारी संख्या में उपस्थित थे।

एम.एम.कलबुर्गी को श्रद्धांजलि

30 सितंबर 2015, बंगळूरु

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बंगळूरु द्वारा साहित्य अकादेमी पुरस्कृत कन्नड लेखक विद्वान डॉ. एम. एम. कलबुर्गी को श्रद्धांजलि देने के लिए एक शोक सभा का आयोजन 30 सितंबर 2015 को सीनेट हॉल में किया गया।

शोक सभा की अध्यक्षता अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने की। लब्धप्रतिष्ठ कन्नड विद्वान डॉ. एम. एस. आशादेवी, श्री एस. आर. विजयशंकर, डॉ. एस. जी. सिद्धारमैया, डॉ. हमपा नागरजैया एवं डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम के अतिरिक्त कन्नड भाषा के अनेक विद्वान लेखकों ने भाग लिया। क्षेत्रीय सचिव एस. पी. महाळिंगेश्वर ने स्वागत करते हुए दिवंगत लेखक की विरासत की बात की, विशेष रूप से अकादेमी पुरस्कृत पुस्तक Marga 4 की।

डॉ. आशादेवी ने कहा कि उन्होंने अपने जीवन में कलबुर्गी से कैसे बहुत कुछ सीखा तथा कलबुर्गी के व्यापक शोध और दलित काव्य शास्त्र के गठन में उनकी भूमिका पर प्रकाश डाला। उनकी हत्या हमारे समाज के ढाँचे पर एक गंभीर तमाचा है।

प्रसिद्ध कन्नड आलोचक श्री विजयशंकर ने डॉ. कलबुर्गी के प्रत्येक कन्नड साहित्यकार के लिए एक अनिवार्य उपकरण के रूप में कन्नड साहित्यिक परिवेश में अनुसंधान करने में निर्णायक भूमिका पर प्रकाश डाला। श्री विजयशंकर ने कहा कि कलबुर्गी की मृत्यु कन्नड एवं भारतीय साहित्य जगत के लिए अपूर्णीय क्षति है। डॉ. एस. जी. सिद्धारमैया, प्रसिद्ध कवि एवं लेखक ने कहा कि डॉ. कलबुर्गी की हत्या लोकतंत्र के दुरुपयोग के सिवा और कुछ नहीं और कट्टरपंथी शक्तियों द्वारा अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को दबाने का एक और प्रयास है।

डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने कहा कि किस प्रकार से डॉ. कलबुर्गी की मृत्यु व्यक्तिगत रूप से उनके लिए एक अपूर्णीय क्षति है। डॉ. कंबार ने यह भी कहा कि उन्होंने एक अच्छे दोस्त, साथी एवं सहलेखक को खो दिया है।

कार्यक्रम में उपस्थित समस्त लेखकों विचारकों ने एक मत से सरकार से अपराधियों को तुरंत गिरफ़्तार करने और मृतक लेखक के परिवार को न्याय दिलाने की अपील की।

दिवंगत एम.एम.कुलबर्गी का चित्र

श्रद्धांजलि अर्पित करते अकादेमी के उपाध्यक्ष एवं अन्य

संगोष्ठी

मराठी उपन्यास में नतिविस्म

01-02 सितंबर 2015, नागपुर

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा मराठी विभाग, राष्ट्रशांत तुकडोजी महाराज नागपुर यूनिवर्सिटी और गिरीश गांधी प्रतिष्ठान नागपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में नतिविस्म और मराठी उपन्यास विषयक दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन 01-02 सितंबर 2015 को नागपुर में किया गया। अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. भालचंद्र नेमाडे ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया तथा प्रतिष्ठित भाषाविद् एवं आलोचक डॉ. गणेश देवी ने सत्र की अध्यक्षता की।

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने अपने स्वागत वक्तव्य में कहा कि नतिविस्म का विचार 1980 में प्रो. भालचंद्र नेमाडे द्वारा उनके एक लेख में आया था। जिसमें कहा गया है कि नतिविस्म का घनिष्ठ संबंध एक लेखक का उसकी भूमि, लोगों, संस्कृति और साहित्यिक परंपराओं से होता है। श्री किंबहुने ने प्रो. नेमाडे को उद्धृत करते हुए कहा कि नतिविस्म का विश्वास है कि साहित्यिक आंदोलनों या लेखक की महानता अंतर्राष्ट्रीय मानदंड निर्धारित नहीं करते अपितु इसका निर्धारण आध्यात्मिक मूल्यांकन से लेकर भाषायी प्रयोग में कितना काम हुआ है, से होता है।

प्रो. भालचंद्र नेमाडे ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में कहा कि किसी भी क्षेत्र की परंपरा को एक मानक के रूप में किसी भी रूप में लेबलिंग द्वारा उपेक्षित नहीं किया जा सकता। उन्होंने कहा कि पारंपरिक भाषा को अगली पीढ़ी द्वारा पुनर्जीवित किया जाना जारी रहेगा।

मराठी परामर्श मंडल के सदस्य श्री रंगनाथ पठारे ने अपने बीज वक्तव्य में कहा कि देशीयत से मतलब हमारे अपने देश से जुड़ाव से है। देशीयत की अवधारणा में स्वदेशी भाव और नतिविस्म अच्छी तरह से शामिल हैं। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. गणेश देवी ने कहा कि देशीयत का अर्थ मानव जीवन की पिछले सत्तर हज़ार वर्षों की स्मृति है जिसके आधार पर इंसान जीवित रहने में सक्षम है। मराठी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अक्षय कुमार काले ने आरंभिक वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि किस प्रकार साहित्य पर उच्च जाति के लोगों का अधिकार है। उसके बाद ही साहित्य और भाषा एंग्लो इंडियन बनते हैं। डॉ. शैलेंद्र लेंडे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र 'देशीवाद : संकल्पना आणि स्वरूप' विषय पर था तथा सत्र की अध्यक्षता श्री अशोक बाबर ने की। डॉ. शोभा नाइक एवं श्री रवींद्र इंग्ले चावरेकर ने इस विषय पर आलेख प्रस्तुत किये। डॉ. नाइक ने अपने आलेख में इस बात की चर्चा की कि देशीवाद विशाल और बहुमुखी साहित्यिक सिद्धांत है तथा मानव संस्कृति का सिरमौर है। श्री रवींद्र इंग्ले चावरेकर ने कहा कि भूमंडलीकरण के इस दौर में देशीवाद की अवधारणा का सुझाव अपूर्ण है।

दूसरे सत्र का विषय था 'देशीयत तथा मराठी उपन्यास : अनुबंध' तथा सत्र के अध्यक्ष थे डॉ. अविनाश सप्रे। श्री संतोष कोटी और डॉ. अलका नाथरेकर कुलकर्णी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री कोटी ने कहा कि देशीवाद की जड़ें गौतम बुद्ध और महावीर के दर्शन में हैं। जहाँ तक उपन्यास का संबंध है देशीवाद पहली बार साने गुरुजी के उपन्यास में दिखता है। डॉ. नाथरेकर ने अपने आलेख में देशीवाद को राजन गवास के उपन्यास भवलीचा में रेखांकित किया।

तीसरा सत्र 'देशीवाद तथा साठोत्तरी मराठी उपन्यास' पर आधारित था तथा सत्र की अध्यक्षता श्री कैतिकराव थाले पाटील ने की। श्री रणधीर शिंदे और प्रवीण बांदेकर ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री रणधीर शिंदे ने कहा कि देशीवाद की संवेदनशीलता मराठी उपन्यास में 1960 के बाद प्रमुख रूप से प्रतीत होता है। श्री प्रवीण बांदेकर ने कहा कि देशीवाद की संस्कृति को व्यंकटेश माडगुळकर, आनंद यादव तथा उसके आगे उद्धव शेळके, डी.बी. मोकाशी, भालचन्द्र नेमाडे, भाऊ पाध्ये, मनोहर तलहर तथा अन्य के उपन्यासों में प्रत्यक्ष रूप से देखा जा सकता है।

'देशीवाद तथा मराठी उपन्यास 1990 के बाद' विषय चतुर्थ सत्र का था तथा इस सत्र के अध्यक्ष प्रो. वासुदेव सावंत थे। श्री नितिन रिंधे और नंद कुमार मोरे ने विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। 1990 के बाद मराठी उपन्यास ने आधुनिकता में परख के लिए एक वास्तविक दृष्टिकोण की स्थापना की। देशीवाद की विशेषताओं को कृष्णात खोत, रमेश इंगले, राजन गवास, गणेश अवटे तथा श्री नितिन रिंधे के उपन्यासों में देखा जा सकता है। श्री नंद कुमार मोरे ने श्याम मनोहर, विलास सारंग, अनिळ दामवने , मकरंद साठे तथा विश्राम गुप्ते के उपन्यासों में देशीवाद को रेखांकित किया।

अंतिम सत्र की अध्यक्षता डॉ. केशव एम. सदरे ने की। डॉ. सुषमा कारोगळ, एवं डॉ. प्राची गुर्जर पाध्ये ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। डॉ. सुषमा कारोगळ ने देशीवाद और साहित्य पर गुजराती में अपने विचार रखे तथा डॉ. प्राची गुर्जर पाध्ये ने महाश्वेता देवी के उपन्यास में देशीवाद की पड़ताल की। श्री सुरेश द्वादशिवर ने समापन वक्तव्य दिया। मराठी विभाग के डॉ. प्रमोद मुंघटे ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

जन्मशतवार्षिकी उरुब

03-04 सितंबर 2015, तिरुर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बंगळूरु द्वारा श्री शंकराचार्य यूनिवर्सिटी ऑफ़ संस्कृत रीजनल सेंटर तिरुर के सहयोग से उरुब के जन्मशतवार्षिकी के अवसर पर एक संगोष्ठी का आयोजन 03-04 सितंबर 2015 को यूनिवर्सिटी के नीला ऑडिटोरियम में किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए उरुब के योगदान को रेखांकित किया। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के सदस्य श्री के. एस. रविकुमार ने अपने आरंभिक वक्तव्य में उरुब के व्यक्तित्व एवं योगदान की विस्तार से चर्चा की। उन्होंने पोन्नन कलारी के गठन पर उरुब के साथ संबंध पर प्रकाश डाला। अकादेमी के मलयाळम् परामर्श मंडल के संयोजक श्री सी. राधाकृष्णन ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया और उरुब के साथ के अपने अनुभवों को साझा किया। उन्होंने कहा कि उरुब ने मलयाळम् साहित्य के इतिहास में अपनी अद्वितीय गरिमा, दया और लालित्य से दिग्गज लेखकों को पीछे छोड़ दिया। मलयाळम् यूनिवर्सिटी के कुलपति श्री के. जयकुमार ने अपने बीज वक्तव्य में उरुब के लेखन शैली, संगीत लेखन, सौंदर्य मूल्य और काव्य संवेदनाओं की अनूठी विशेषताओं के बारे में बात की। श्री शंकराचार्य यूनिवर्सिटी ऑफ़ संस्कृत के कुलपति श्री एम. सी. दिलीप कुमार ने सत्र की अध्यक्षता की और उरुब की सामाजिक, राजनीतिक और साहित्यिक क्षेत्र में योगदान के बारे में बात की। उन्होंने यह भी कहा कि उरुब वास्तव में एक इंसान थे और उन्होंने इंसानियत को महत्त्व दिया। मलयाळम् विभाग के श्री उन्नीकृष्ण पिल्लै ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता कालिकट विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र के श्री पी. के. पोक्कर ने की। श्री पोक्कर ने कहा कि उरुब का लेखन आधुनिकता और आधुनिक संवेदनशीलता को प्रतिबिंबित करता है। श्री पी. पद्मिनी ने उरुब के लेखन में परिवार की अवधारणा विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। उन्होंने कहा कि उरुब के उपन्यास और कहानियों में महिलाओं के चरित्र का सशक्त चित्रण किया गया है।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध आलोचक श्री के. पी. शंकरन ने की। श्री लिसी मैथिव, श्री प्रदीप पापिरीक्कुन्नू और श्री सी. पी. बीजू ने क्रमशः 'उरुब के लेखन में दूरस्थ अवधारणाएँ' 'उरुब की फ़िल्में' और 'उरुब की कहानियाँ' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री शंकरन ने कहा कि उरुब ने धारावाहिक लेखन की शुरुआत की।

अतिथियों का स्वागत करते क्षेत्रीय सचिव एस.पी. महालिंगेश्वर

तृतीय सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध विद्वान, नाटककार एवं चित्रपट लेखक श्री एन. शशिधरण ने की। श्री सुनील पी. एवं श्री सुजा सुसन जॉर्ज ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री शशिधरण ने कहा कि उरुब ने समाज में हाशिये पर खड़े वर्ग को आवाज़ दी। श्री सुनील ने कहा कि उरुब के लेखन ने इतिहास के नए स्वरूप प्रस्तुत किए। सुसान जॉर्ज ने कहा कि उरुब एक बहुत अच्छे इंसान थे और उनका लेखन उनके मानवीय दृष्टिकोण का प्रतिबिंब है।

लब्धप्रतिष्ठ मलयाळम् लेखक श्री अकबर

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

एक सत्र का दृश्य

कक्कत्तिल चौथे सत्र के अध्यक्ष थे। श्री पी. सुरेंद्रन तथा एल. सुषमा ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री अकबर ने कहा कि उरुब ने अपने लेखन में धर्म और समुदायों की बाधाओं से परे मानवीय मूल्यों पर प्रकाश डाला है। एल. सुषमा की दलील थी कि साहित्यिक इतिहास उरुब की कभी उपेक्षा नहीं कर सकता और उनका अपना ही स्थान और समय है।

समापन सत्र की अध्यक्षता श्री उन्नीकृष्ण पिल्लै ने की। उन्होंने कहा कि उरुब एक महान व्यक्ति थे और कुछ लेखकों को अपने जीवन में ही बहुत कुछ मान्यताएँ मिल जाती हैं, लेकिन उनके बाद उन मान्यताओं पर समय की गर्द पड़ जाती है। श्री सी. वी. बालकृष्णन ने समापन वक्तव्य दिया। श्रीमती रुक्मणी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

आधुनिक मैथिली साहित्य एवं पुनर्जागरण

13-14 सितंबर 2015, इलाहाबाद (उ.प्र.)

साहित्य अकादेमी और मिथिला सांस्कृतिक संगम, इलाहाबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में 13-14 सितंबर 2015 को इलाहाबाद में 'आधुनिक मैथिली साहित्य एवं पुनर्जागरण' विषयक द्वि-दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन बनारस हिंदू विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीशचंद्र त्रिपाठी ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में उन्होंने मैथिली भाषा के माधुर्य एवं प्राचीनता के साथ-साथ इसकी समृद्ध साहित्यिक परंपरा का उल्लेख किया। संगोष्ठी का विषय-प्रवर्तन करते हुए साहित्य अकादेमी में मैथिली भाषा परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. वीणा ठाकुर ने पुनर्जागरण और आधुनिकता को परिभाषित करते हुए इसकी पृष्ठभूमि में मैथिली साहित्य का संक्षिप्त आकलन प्रस्तुत किया। बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए प्रख्यात मैथिली विद्वान प्रो. वासुकीनाथ झा ने आधुनिक भारतीय भाषा के साथ-साथ मैथिली भाषा एवं साहित्य पर पुनर्जागरण के प्रभाव एवं परिवर्तन को रेखांकित किया। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए मिथिला सांस्कृतिक परिषद् के अध्यक्ष धरणीधर झा ने मातृभाषा के महत्त्व के साथ-साथ वर्तमान में विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं की स्थिति पर प्रकाश डाला। आरंभ में साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने स्वागत भाषण करते हुए अकादेमी के विस्तृत गतिविधियों का संक्षेप में उल्लेख किया। सत्रांत में परिषद् की तरफ से अखिलेश झा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

संपूर्ण संगोष्ठी चार सत्रों में विभाजित थी, क्रमशः जिनकी अध्यक्षता सर्वश्री रमानंद झा 'रमण', डॉ. प्रभाश कुमार झा, डॉ. योगानंद झा और डॉ. उमारमण झा द्वारा की गई। सत्रों में सर्वश्री अमलेंदुशेखर पाठक, पंकज पराशर, पंचानन मिश्र, योगानंद झा, शंकर देव झा, ताराकांत झा, नवीन चौधरी, जयशंकर मिश्र, मंजर सुलेमान, अशोक अविचल और श्रीमती रेवती मिश्र ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रस्तुत आलेखों में पुनर्जागरण कालीन विभिन्न मैथिली विद्वानों, यथा : गंगानाथ झा, अमरनाथ झा, जयकांत मिश्र, उमेश मिश्र, जीवन झा और सीताराम झा की साहित्यिक कृतियों को मूल्यांकित करते हुए उनके अवदान को रेखांकित किया गया। सत्रों का संचालन डॉ. वीणा ठाकुर ने किया तथा संगोष्ठी के अंत में सभी प्रतिभागियों और साहित्य-प्रेमियों के प्रति सफल आयोजन के लिए औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

बोडो का कथेतर गद्य : अतीत, वर्तमान एवं भविष्य

25 सितंबर 2015, दुधोनी, असम

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा बोडो साहित्य सभा के सहयोग से 25 सितंबर 2015 को दुधोनी कॉलेज, दुधोनी में 'बोडो का कथेतर गद्य : अतीत, वर्तमान एवं भविष्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

प्रभारी श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया। अकादेमी के बोडो परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. प्रेमानंद मशहरी ने आरंभिक वक्तव्य दिया। बोडो साहित्य सभा के अध्यक्ष श्री कामेश्वर ब्रह्म ने संगोष्ठी का उद्घाटन किया। बोडो साहित्य सभा के उपाध्यक्ष श्री विशेश्वर बसुमतारी ने बीज वक्तव्य दिया। बोडो साहित्य सभा के सचिव श्री कमलाकांत मुशहरी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में श्रीमती इंदिरा बोरो एवं श्रीमती स्वर्णप्रभा चैनरी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा श्री भुपेन नाज़ारी ने अध्यक्षता की। दूसरे सत्र में श्री जिबेरबर कोच एवं श्री फूकन बसुमतारी ने आलेख प्रस्तुत किए जबकि डॉ. अनिल बोरो ने सत्र की अध्यक्षता की।

तमिळ में युवा लेखन

30 सितंबर - 01 अक्टूबर 2015, मदुरै

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा लेडी डोक कॉलेज मदुरै के तमिळ विभाग के सहयोग से तमिळ में युवा लेखन विषय पर दो दिवसीय संगोष्ठी का आयोजन 30 सितंबर तथा 01 अक्टूबर 2015 को कॉलेज के प्रेक्षागृह में किया गया।

कार्यालय प्रभारी श्री के. पी. राधाकृष्णन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी द्वारा युवा लेखकों, कवियों के प्रोत्साहन के लिए अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों को रेखांकित किया। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नाचिमुथु ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि युवा किसी भी सभ्य समाज की रीढ़ होते हैं, इसलिए साहित्य के

विकास के लिए युवाओं को बढ़ावा देने की आवश्यकता है। उन्होंने इस संदर्भ में अकादेमी के प्रयासों की सराहना की। *कनेयाझी* के संपादक श्री एम. राजेंद्रन ने बीज वक्तव्य में तमिळ साहित्य में युवा लेखन का एक विस्तृत परिचय दिया तथा वर्तमान परिदृश्य में कुछ युवा तमिळ लेखकों पर प्रकाश डाला। तमिळ विभाग के डॉ. मनिमेगलई ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र का विषय 'मैं और मेरा लेखन' था तथा सत्र की अध्यक्षता सुश्री अंदाल प्रियदर्शिनी ने की। तीन युवा लेखक श्री आर. अभिलाष, श्री की. वीरप्पंडियन एवं सुश्री लक्ष्मी श्रवण कुमार ने अपने रचना संसार के बारे में बात करते हुए अपनी रचना प्रक्रिया को साझा किया।

द्वितीय सत्र 'तमिळ में आज का युवा लेखन' पर आधारित था तथा सत्र की अध्यक्षता सुश्री तमिळ सेल्वी ने की। श्री सुरेश कुमार इंद्रजीत तथा सुश्री चंद्रा ने 'तमिळ में आज का युवा लेखन' पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

तीसरा सत्र रचना पाठ को समर्पित था तथा सत्र की अध्यक्षता प्रो. पी. सिवकामी ने की। लेडी डोक कॉलेज के युवा रचनाकारों ने अपनी कहानियाँ एवं कविताएँ प्रस्तुत कीं।

चतुर्थ सत्र का विषय था 'होनहार युवा लेखन' तथा सत्र की अध्यक्षता श्री एन. शिवसुब्रह्मण्यम ने की। श्री वी. आनंद कुमार, श्री के. प्रतिभा राजा एवं श्री स्टालिन राजंगम ने विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

पंचम सत्र 'तमिळ में युवा लेखन का भविष्य' को समर्पित था। सत्र की अध्यक्षता श्री डी. सीनिचामी ने की। श्री एन. जय भास्करण, सुश्री मुबीन सादिक़ा एवं सुश्री विद्या ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

समापन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. आर. कामरसु ने की। प्रसिद्ध तमिळ लेखक श्री वन्नादासन ने समापन वक्तव्य दिया तथा डॉ. नचिमुथु ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

डोगरी साहित्य में हास्य-व्यंग्य

10-11 अक्टूबर 2015, जम्मू

साहित्य अकादेमी द्वारा डोगरी संस्था जम्मू के सहयोग से 'डोगरी साहित्य में हास्य-व्यंग्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन 10-11 अक्टूबर 2015 को के. एल. सहगल हॉल, जम्मू में किया गया। संगोष्ठी का उद्घाटन प्रोफेसर अशोक ऐमा, कुलपति, केंद्रीय विश्वविद्यालय, जम्मू द्वारा किया गया। उन्होंने इतने महत्त्वपूर्ण विषय पर संगोष्ठी आयोजित करने के लिए आयोजकों को बधाई दी। साहित्य अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया।

अकादेमी के डोगरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मगोत्रा ने संगोष्ठी की रूपरेखा के बारे में विस्तार से बात की। उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता डोगरी संस्था के अध्यक्ष श्री छत्रपाल ने की तथा संस्था के महासचिव डॉ. निर्मल विनोद ने संचालन किया। संगोष्ठी के प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर चम्पा शर्मा ने की। सत्र में कविता पर तीन आलेख श्री प्रकाश प्रेमी, श्री सुरजीत होश एवं डॉ. वंशी लाल ने प्रस्तुत किए। दूसरे सत्र में श्री सुशील बेगाना एवं श्री सुनील शर्मा ने डोगरी ग़ज़लों पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्र में डॉ. राजेश मन्हास का आलेख उनकी अनुपस्थिति में प्रो. ललित मगोत्रा ने प्रस्तुत किया। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध कवि ध्यान सिंह ने की।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के पुरस्कृत लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री दर्शन दर्शी ने की। लब्धप्रतिष्ठ कहानीकार श्री शिव मेहता ने 'डोगरी कहानियों में हास्य-व्यंग्य के तत्त्व' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। दूसरे आलेख में डॉ. चंचल भसीन ने डोगरी उपन्यासों के आधार पर हास्य-व्यंग्य की बात की।

चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता श्री एन. डी. जामवाल ने की। इस सत्र में श्री संदीप दूबे, श्री राजकुमार बहरूपिया एवं डॉ. रतन बसोतरा ने डोगरी नाटकों एवं एकांकी पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। प्रो. ललित मगोत्रा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उत्तर आधुनिक नेपाली साहित्य

17-18 अक्टूबर 2015, दार्जीलिंग

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य सम्मेलन दार्जीलिंग के सहयोग से 17-18 अक्टूबर 2015 को 'उत्तर आधुनिक नेपाली साहित्य' विषय पर एक संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

संगोष्ठी का उद्घाटन प्रख्यात नेपाली लेखक श्री नंद हाङ्खिम ने किया। अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने आरंभिक वक्तव्य दिया। नेपाली साहित्य सम्मेलन के अध्यक्ष श्री करण थामी ने सत्र की अध्यक्षता की। अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया एवं अकादेमी की गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताया। सत्र का संचालन तथा धन्यवाद ज्ञापन नेपाली साहित्य सम्मेलन के महासचिव श्री बी. राज सुनुवर ने किया। इस सत्र में अकादेमी के प्रकाशन *मुर्झाए वृक्ष, पर्यवेक्षण, यो प्राचीन वीणा* (ओ. एन. वी. कुरुप की मलयाळम् कविताओं का नेपाली अनुवाद) *चौरंग* (कोंकणी नाटकों का नेपाली अनुवाद) तथा *भारतीय नेपाली एकांकी संचयन* का लोकार्पण किया गया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध नेपाली कवि एवं आलोचक डॉ. जीवन नामदुंग ने की। श्री अर्जुन प्रधान, सुश्री मोनिका मुखिया एवं डॉ. राजकुमार क्षेत्री ने क्रमशः 'भारतीय नेपाली साहित्य में उत्तर आधुनिकता के प्रभाव एवं परिणाम', 'भारतीय नेपाली साहित्य में उत्तर आधुनिकता के सैद्धांतिक पहलू' तथा

'समकालीन भारतीय नेपाली साहित्य के संदर्भ में उत्तर आधुनिक लेखन' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र में डॉ. बीना हाङ्खिम ने 'भारतीय नेपाली कविताओं में उत्तर आधुनिकता' विषय पर तथा डॉ. नवीन पादयाल ने 'भारतीय नेपाली नाटकों में उत्तर आधुनिकता' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। इस सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध नेपाली लेखक श्री लक्ष्मण श्रीमल ने की।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. गोकुल सिन्हा ने की तथा डॉ. बीनेश प्रधान ने 'भारतीय नेपाली उपन्यासों में उत्तर आधुनिकता' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री ज्ञानबहादुर क्षेत्री ने 'पूर्वोत्तर भारत में उत्तर आधुनिक नेपाली साहित्य' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य श्री सी. के. राय ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

फतुरानंद जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी

18 अक्टूबर 2015, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी द्वारा फतुरानंद जन्म-शतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन 18 अक्टूबर 2015 को स्टेट आर्काइव ऑडिटोरियम, भुवनेश्वर में किया गया।

गौर हरिदास अतिथियों का स्वागत करते हुए

उद्घाटन सत्र का एक दृश्य

संगोष्ठी का उद्घाटन करते हुए *संवाद* के संपादक सौम्यरंजन पटनायक ने कहा कि फतुरानंद को एक साहित्यकार के रूप में उनके जीवन में वह मान्यता नहीं मिली जिसके वे योग्य थे। वे एक हास्य एवं व्यंग्यकार थे। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. बिजयनंद सिंह ने बीज वक्तव्य दिया तथा फतुरानंद के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला।

अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौर हरिदास ने अतिथियों का स्वागत करते हुए फतुरानंद का परिचय दिया। फतुरानंद का मूल नाम रामचंद्र मिश्र था, लेकिन साहित्य में उनकी पहचान फतुरानंद के नाम से है।

ओडिशा साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष सतकड़ी होता ने सत्र की अध्यक्षता की तथा अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने अतिथियों एवं प्रतिभागियों का स्वागत किया।

प्रथम सत्र में डॉ. लक्ष्मीकांत त्रिपाठी ने फतुरानंद की कविताओं के बारे में बात की तथा कहा कि फतुरानंद जितना दूसरे लोगों से प्रभावित हुए उससे ज़्यादा उन्होंने दूसरों को अपने लेखन से प्रभावित किया। श्रीमती राधू मिश्र ने फतुरानंद की आत्मकथा के बारे में बात की। इस सत्र की अध्यक्षता प्रोफ़ेसर श्रीनिवास मिश्र ने की।

दूसरे सत्र में प्रोफ़ेसर अजय कुमार पटनायक ने फतुरानंद के अनुवाद और फतुरानंद के साहित्य की प्रासंगिकता पर विचार-विमर्श किया। श्री मृणाल चटर्जी ने फतुरानंद का कथा एवं शिशु साहित्य पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री चटर्जी ने यह भी कहा कि फतुरानंद को बाल साहित्य के रूप में ब्रांडेड नहीं किया जा सकता, यद्यपि उन्होंने बच्चों के लिए बहुत लिखा है। इस सत्र की अध्यक्षता विभूति पटनायक ने की। श्री पटनायक ने उन दिनों की याद को साझा किया जब उन्होंने पत्रिका *गल्प* के लिए श्री फतुरानंद का साक्षात्कार किया। प्रोफ़ेसर निखिलानंद पाणिग्रही ने समापन वक्तव्य दिया। श्री प्रतिभा राउतरे ने समापन सत्र की अध्यक्षता की।

राष्ट्रीय चेतना और असमिया साहित्य

28 अक्टूबर 2015, गुवाहाटी

साहित्य अकादेमी द्वारा सिनामारा कॉलेज गुवाहाटी के सहयोग से 28 अक्टूबर 2015 को 'राष्ट्रीय चेतना एवं असमिया साहित्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन किया गया। सिनामारा कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अर्जन सइकिया ने

अतिथियों का स्वागत करते हुए कॉलेज के ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को रेखांकित किया। अकादेमी के प्रभारी श्री गौतम पाल ने अकादेमी की गतिविधियों के बारे में चर्चा करते हुए कॉलेज के प्रति आभार व्यक्त किया।

संगोष्ठी का उद्घाटन असम साहित्य सभा के पूर्व अध्यक्ष डॉ. लक्ष्मीनंदन बोरा ने किया। अपने उद्घाटन वक्तव्य में श्री बोरा ने स्वतंत्रता पूर्व से 21वीं शताब्दी तक राष्ट्रीय चेतना पर असमिया साहित्य के प्रभाव की विस्तार से चर्चा की। बीज वक्तव्य तेजपुर विश्वविद्यालय के अंग्रेज़ी एवं विदेशी विभाग के प्रोफ़ेसर डॉ. मदन शर्मा ने दिया। डॉ. शर्मा के अनुसार राष्ट्रीय चेतना भावना की समझ है और यह कभी-कभी एक विशेष क्षेत्र से संबंधित होता है। संगोष्ठी के समन्वयक श्री दिपेन नाथ ने आभार व्यक्त किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता डॉ. लक्ष्मीनंदन बोरा ने की। इस सत्र में 'असमिया के रचनात्मक साहित्य में राष्ट्रीय चेतना का प्रतिविंब' विषय पर डॉ. कुसमवर बरुआ ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। 'असमिया संगीत साहित्य के माध्यम से राष्ट्रीय चेतना' विषय पर लक्ष्मीकांत बेज़बरुआ, ज्योतिप्रसाद अग्रवाल, विष्णु प्रसाद रामा के गीतों एवं कविताओं में राष्ट्रीय चेतना की परख की गई थी।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता गुवाहाटी उच्च न्यायालय के वरिष्ठ अधिवक्ता श्री दुर्लव चंद्र महंता ने की। सत्र में श्री राजीव बोरा ने 'आधुनिक असमिया कविता में राष्ट्रीय चेतना का प्रतिविंब' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री पद्मालोसन नाथ ने 'असम में समाजवादी सोच का अध्ययन और असमिया साहित्य में उनका विंब' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

संगोष्ठी के समापन सत्र की अध्यक्षता श्री आनंद सइकिया ने की। डॉ. प्रदीप कुमार बरुआ ने समापन वक्तव्य दिया तथा कॉलेज के डॉ. बोसाली बोर ठाकुर ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

संस्कृत साहित्य में स्त्री-विमर्श

29-30 अक्टूबर 2015, सागर (म.प्र.)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 29-30 अक्टूबर 2015 को 'संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श विषयक राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया।

उद्घाटन सत्र में स्वागत भाषण एवं बीज भाषण प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी, संयोजक, संस्कृत परामर्श मंडल ने किया। विषय प्रवर्तन प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, अध्यक्ष संस्कृत विभाग, डॉ. हरीसिंह विश्वविद्यालय ने किया। मुख्य अतिथि प्रो. शशिप्रभा कुमार, कुलपति, साँची बौद्ध भारतीय अध्ययन विश्वविद्यालय, साँची रहीं। अध्यक्षता प्रो. एस.पी.व्यास, प्रभारी कुलपति, डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय ने की।

संस्कृत साहित्य में लगभग 100 स्मृतियाँ हैं, जिनमें स्त्री की दशा उसके पुरुष के प्रति कर्तव्यों का विस्तार से विमोचन प्राप्त होता है। मनु स्मृति सत्री के विवाह विच्छेद, संतानोत्पत्ति, परिवार के मुख्य कर्तव्यों का विवेचन करती है, परंतु मनु स्मृति के प्रति समाज का जो नज़रिया है उसे समझने की आवश्यकता हैं यह बात राष्ट्रीय संस्कृत संस्थानम, नई दिल्ली के पूर्व कुलपति प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली एवं डॉ. हरीसिंह गौर विवि के संस्कृत विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में दो दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के उद्घाटन पर बीज वक्तव्य में कही।

मुख्य अतिथि सांची विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. शशिप्रभा कुमार ने कहा कि वैदिक संहिताओं में स्त्री विमर्श प्रत्येक दृष्टि से प्राप्त होता हैं। सत्र के अध्यक्ष प्रो. एस.पी. व्यास ने कहा कि संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श के साथ समस्त विश्व की प्राच्यनव्य समस्याओं पर बहुत पहले विमर्श किया जा चुका है। स्वागत भाषण विभागाध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने दिया। उद्घाटन सत्र में धर्मेंद्र कुमार सिंह देव की पत्रिका *पद्यबंधा* और डॉ. किरण आर्या की पुस्तक *राजतरंगिणी के विविध आयाम* का विमोचन हुआ। पहले सत्र में डॉ. नौनिहाल गौतम, डॉ. सुखदेव बाजपेयी ने शोध पत्र पढ़े। अध्यक्षत डॉ. रामरतन पांडे ने की। दूसरे सत्र में प्रो. उमारानी त्रिपाठी, डॉ. रामहेत गौत, डॉ. पूर्णचंद्र उपाध्यक्ष, डॉ. संजय कुमार, डॉ. शशि कुमार सिंह ने आलेख पढ़े।

नारियों को भारतीय समाज में विश्व में सर्वाधिक महत्व मिलता रहा है। कुछ अपवादों के कारण नारियों को समस्याओं का सामना करना पड़ा है। यह बात डॉ. हरीसिंह गौर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. आर.पी. तिवारी ने संगोष्ठी के अंतिम दिन कही।

समापन सत्र में मुख्य अतिथि प्रो. अभिराज राजेंद्र मिश्र ने कहा कि नारी शक्ति की प्रतीक है। नारी ही पुरुष का निर्माण करती है, जिस प्रकार गंगा की पवित्रता में आज भी विश्वास बना हुआ है उसी प्रकार नारी के साथ लगातार अनुचित व्यवहार होता रहने पर भी उसके माता के रूप में, बहन के रूप में, पुत्री के रूप में श्रद्धा बनी हुई है प्रो. राधावल्लभ त्रिपाठी ने कहा कि हमें ऐसे समाज की आवश्यकता है, जिसमें स्त्री-पुरुष दोनों समान रूप से स्वतंत्र रहें। समाज के हित में किया गया चिंतन, मनन, लेखन कभी व्यर्थ नहीं जाता है। प्रो. रमाकांत शुक्ल ने कहा कि लिंग के आधार पर मानवों के बीच भेद-भाव के सुरक्षा मिले। नारी शक्ति स्वरूप है, वह सर्वदा सम्मान की पात्र होती है।

प्रो. कुसुम भूरिया दत्ता ने चतुर्थ सत्र की अध्यक्षता की। इसमें प्रो. सरोज कौशल, प्रो. मंजूलता शर्मा, डॉ. अर्चना चौधरी, डॉ. धर्मेंद्र कुमार सिंह देव ने शोधपत्र पढ़े। विभागाध्यक्ष प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने आभार व्यक्त किया। संचालन डॉ. शशिकुमार सिंह ने किया।

युवा मराठी काव्योत्सव

27-28 अक्टूबर 2015, मुंबई

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा पहली बार युवा मराठी काव्योत्सव का आयोजन अकादेमी के सभागार में 27-28 अक्टूबर 2015 को किया गया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के अद्वितीय काव्योत्सव के सुझाव के लिए आभार व्यक्त किया, जिसके द्वारा महाराष्ट्र के ग्रामीण एवं नगरी युवा लेखक एक मंच पर एकत्र हो रहे हैं।

मराठी के लब्धप्रतिष्ठ कवि एवं आलोचक श्री वसंत पाटणकर ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में इस बात को दोहराया कि कवि को अपने विचारों की स्वतंत्रता का दुरुपयोग नहीं करना चाहिए। कवि को तकनीक के प्रभाव में नहीं आना चाहिए तथा उन्हें सदैव अपनी आत्मा की खोज करनी चाहिए। प्रसिद्ध मराठी कवि श्री वसंत आबा जी. ढहाके ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कहा कि एक कवि के लिए कविता उसके विचारों की अभिव्यक्ति होती है। क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता प्रसिद्ध मराठी कवि सतीश कालसेकर ने की। इस सत्र में छोटे नगर से पधारे युवा कवि नामदेव कोली ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। उनकी कविताएँ प्रकृति से प्रभावित थीं। पुणे से आई तथा पुलिस बल में कार्यरत युवा कवयित्री सुश्री बालिका दनन्यदेव बीताले ने दृढ़ता से कहा कि कविता लेखन स्वयं की अभिव्यक्ति का माध्यम है। उन्होंने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। उनकी कविताएँ कामकाजी महिलाओं की वर्तमान पीड़ा से प्रेरित थीं। एक अन्य कवि वीरा राठोड़ जिनका संबंध अनुसूचित जनजाति से है, ने कहा कि वे कविता इसलिए लिखते हैं कि यह उनकी जीवन शक्ति है। श्री

उद्घाटन सत्र में अतिथियों का स्वागत करते
अकादेमी के सचिव के. श्रीनिवासराव

राठोड़ ने अपनी चुनिंदा कविताएँ प्रस्तुत कीं। सत्र के अंत में सत्रअध्यक्ष सतीश कालसेकर ने सभी कवियों की यथार्थवादी के रूप में तथा वर्तमान सामाजिक परिदृश्य के साथ अद्यतन समीक्षा की। श्री कालसेकर ने भी अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

दूसरे सत्र में उद्गीर से पधारे दलित कवि चंद्रशेखर मलकमपट्टे ने अपनी कविताओं का पाठ किया। उनकी कविताएँ शब्दों का एक सामूहिक लोककथा तथा परधी समुदाय से प्रेरित थीं। वसई से पधारे शहरी सोच के कवि इग्नोशियस डायस ने अपनी कविताएँ नई शब्दावलियों जैसे लॉग इन, शटडाउन, साइन इन, साइन आउट के साथ प्रस्तुत कीं। वे एक अलग पहचान और मूल्यों के कवि हैं। किसान परिवार की दौंड ताल्लुका से आई युवा कवयित्री कल्पना दूधल ने अपनी मार्मिक एवं विचारोत्तेजक कविताएँ प्रस्तुत कीं। प्रसिद्ध मराठी कवि एवं आलोचक गणेश विस्पुते ने सत्र की अध्यक्षता की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि आज की कविता जीवंत है, एक कवि के पास

तीसरे सत्र का आरंभ साहित्य जगत के नए युवा कवि अनिल साबले की कविताओं से हुआ। उनकी कविताएँ आदिवासी समुदाय की दरिद्रता से प्रेरित थीं। वसई के फेलिक्स डिसूज़ा ने भी अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं। नांदेड़ यूनिवर्सिटी के प्रोफ़ेसर पृथ्वीराज तौर ने अपनी कविताओं का पाठ किया। उनकी कविताएँ महिला केंद्रित तथा सांप्रदायिक दंगों से प्रभावित थीं। इस सत्र की अध्यक्षता मराठी की प्रसिद्ध कवयित्री नीरजा ने की।

चतुर्थ सत्र में भुसावल से पधारे सत्यपाल सिंह राजपूत ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं तथा कहा कि कविता विचारों का बना बनाया प्रपत्र होता है। बीड से आए कवि बालाजी सुतार ने अपनी कविताओं का पाठ किया। उनकी कविताएँ असहाय महिलाओं पर अत्याचार को दर्शाती हैं। सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल की सदस्य एवं कवयित्री प्रभा गानोर्कर ने की। वे युवा कवियों द्वारा प्रस्तुत कविताओं से अभिभूत थीं।

परिसंवाद

तमिळ एवं मलयाळम् साहित्य में प्रवृत्तियाँ

07 सितंबर 2015, तिरुअनंतपुरम

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बंगळूरु द्वारा तिरुअनंतपुरम तमिळ संगम के सहयोग से तमिळ एवं मलयाळम् साहित्य में प्रवृत्तियाँ विषयक परिसंवाद का आयोजन 07 सितंबर 2015 को पी. आर. एस. हाल, तमिळ संगम, तिरुअनंतपुरम में किया गया।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. कृष्णस्वामी नाचिमुथु ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया तथा दोनों भाषाओं के वर्तमान प्रवृत्तियों का एक सर्वे प्रस्तुत किया। उन्होंने यह भी कहा कि तमिळ के विपरीत मलयाळम् में पाठकों की संख्या अधिक है। क्षेत्रीय सचिव एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। तमिळ संगम के अध्यक्ष श्री एम. मुथुरामन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र रचनात्मक साहित्य पर आधारित था तथा कवि सुकुमारन ने तमिळ कविता की प्रवृत्ति के बारे में बात की। उन्होंने महसूस किया कि आधुनिक तमिळ कविता की भाषा ने एक मानक प्राप्त कर लिया है और नारीवाद, दलितवाद आदि अनगिनत विषयों से सरोकार कर रही है। डॉ. सी. आर. प्रसाद ने समकालीन मलयाळम् कविता के बारे में बात की। ऐसा लगता है मलयाळम् अभी भी तमिळ की तुलना में परंपरागत रूपों के साथ अधिक व्यवहार करती है। डॉ. के. एस. रवि कुमार ने मलयाळम् कहानियों के बारे में बात की जबकि डॉ. नयनार ने तमिळ कहानियों की बात की। मलयाळम् और तमिळ कहानियाँ आम नागरिकों के नैतिक संकट को चित्रित कर रही हैं।

द्वितीय सत्र मलयाळम् उपन्यास की प्रवृत्तियों पर आधारित था तथा सत्र के अध्यक्ष डॉ. जॉर्ज ओनक्कूर थे। उन्होंने भूमंडलीकरण द्वारा पोषित किए जा रहे उपभोक्ता समाज के बारे में मलयाळम् उपन्यासों में चित्रित सांस्कृतिक

परिसंवाद का एक दृश्य

प्रो. कृष्णस्वामी नाचिमुथु अध्यक्षीय वक्तव्य देते हुए

अधोपतन के प्रवृत्ति की आलोचना की।

डॉ. आनंद कुमार ने आधुनिक प्रवृत्तियों की समाजवादी यथार्थवाद से शुरू होने वाले उत्तर आधुनिकता के बारे में जानकारी दी। तमिळ एवं मलयाळम् बाल साहित्य के बारे में डॉ. सेतुपथी एवं डॉ. एस. आर. लाल ने बात की।

समापन सत्र की अध्यक्षता प्रो. के. नचिमुथु ने की तथा श्री नील पद्मनाभन ने समापन वक्तव्य दिया। केरला तमिळ के संपादक नेल्लई सु. मुथु ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

उत्तर कर्नाटक के साहित्य में पिछड़े तत्त्व

09 सितंबर 2015, बेल्लारी

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा विजयनगर श्री कृष्णदेवार्य यूनिवर्सिटी बेल्लारी के सहयोग से उत्तर कर्नाटक के साहित्य में पिछड़े तत्त्व विषयक एक परिसंवाद का आयोजन 09 सितंबर 2015 न्यू ऑडिटोरियम में किया गया।

प्रसिद्ध कन्नड लेखक श्री सिद्धारमैया ने परिसंवाद का उद्घाटन किया। इस अवसर पर बोलते हुए श्री सिद्धारमैया ने आदिवासी समुदाय

की संस्कृति के संरक्षण पर बल दिया। ऐसी बहुत सी जनजातियाँ हैं जिनकी अपनी पहचान और संस्कृति नहीं है। विश्वविद्यालय के सचिव प्रो. टी. एम. भास्कर ने सत्र की अध्यक्षता की और कहा कि साहित्य में इन पिछड़े समूहों का चित्रण होता है इसलिए जो लेखक आदिवासी समुदाय से आते हैं उन्हें प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।

श्री राजशेखर हालमन जिन्होंने उत्तरी कर्नाटक के साहित्य में जनजातीय विचार पर अपना आलेख प्रस्तुत किया, कहा कि आदिवासी संस्कृति के विलुप्त होने का कारण है – आदिवासियों का एक समूह दूसरों की तरह जीना चाहते हैं। श्री वेंकटगिरी वी. दलवी ने भी इसी विषय पर बात करते हुए कहा कि कन्नड साहित्य में आदिवासी जीवन का चित्रण नहीं है। श्री विजय बोरट्टी ने भी आदिवासी धारणा पर अपना आलेख प्रस्तुत किया जिसमें लावणी लोकगीतों को रेखांकित किया गया था।

श्री वी. बी. तारकेश्वर ने अपना आलेख 'विविध पिछड़ा समूह' पर प्रस्तुत करते हुए कहा कि संस्कृति हर दिन और समय बदलता है और यह संस्कृति के विलुप्त होने की तरह नहीं है। श्री बसवराज नेल्लीसारी ने भी इसी विषय पर बोलते हुए लोगों से कहा कि जाएँ और आदिवासियों के साथ रहें, उनकी संस्कृति सीखें और उन्हें इसके संरक्षण में मदद करें।

प्रसिद्ध कन्नड लेखक श्री शिवराम शेट्टी जिन्होंने परिसंवाद की अध्यक्षता भी की छात्रों से आग्रह किया कि आज के दिन की चर्चा को अपने जीवन और राष्ट्र में उतारें।

मलयाळम् कविता का पाठ एवं प्रतिबिंब

12 सितंबर 2015, कालिकट

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बंगळूरु व अन्वेषी महिला काउंसलिंग सेंटर की पत्रिका संगदिथा के सहयोग से मलयाळम् कविता पाठ एवं प्रतिबिंब विषयक परिसंवाद का आयोजन शिक्षा सदन हॉल, कालिकट में 12 सितंबर 2015 को किया गया। विभिन्न कॉलेजों से चुनी हुई उभरती महिला कवयित्री-छात्राओं को इस कार्यक्रम हेतु आमंत्रित किया गया।

क्षेत्रीय कार्यालय बंगळूरु की सुश्री जयंती ने प्रतिभागियों अतिथियों का स्वागत किया। परिसंवाद की संयोजिका सुश्री चारुलता ने आरंभिक वक्तव्य में दिसंबर 2010 में अपनी स्थापना के बाद से हर महीने पत्रिका के निर्बाध प्रकाशन पर प्रसन्नता व्यक्त की।

परिसंवाद का उद्घाटन प्रसिद्ध मलयाळम् कवयित्री एवं अकादेमी की मलयाळम् परामर्श मंडल की सदस्य श्रीमती सावित्री राजीवन ने किया। अपने उद्घाटन भाषण में कविता के बारे में टिप्पणी करते हुए इतिहास के विभिन्न युगों में कविता की भूमिका को रेखांकित किया।

मलयाळम् लेखिका डॉ. टी. वी. सुनीता ने बीज वक्तव्य दिया। उन्होंने कहा कि केरल के इतिहास में इस प्रकार का परिसंवाद पहली बार महिलाओं द्वारा, महिलाओं के लिए आयोजित हो रहा है। उन्होंने हर किसी को याद दिलाया कि यह केवल महिलाओं की नारीवादी पत्रिका द्वारा आयोजित किया गया है।

संगदिथा की प्रबंध संपादक एवं अन्वेषी की अध्यक्ष सुश्री के. अजीता ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में इस बात पर संतोष व्यक्त किया कि इस परिसंवाद में उभरती लेखिकाओं को स्थान दिया गया है। अन्वेषी की सचिव सिरिजा ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता मलयाळम् के विद्वान कलपेता नारायणन ने की तथा पुरुष-स्त्री संबंधों की बात की। उन्होंने कहा कि क्लासिकी कवि कुमारासन ने शक्तिहीनों की भाषा को समझा था। सुश्री वी. एम. गिरिजा ने क्लासिकी मलयाळम् कवि बालमणि अम्मा की कविताओं के बारे में बात करते हुए उन्हें सबसे साहसी लेखिका बताया। डॉ. पी. एम. गिरीश ने कविता की भाषा विज्ञान की बात करते हुए कहा कि कैसे एक कवि की भाषा में रूपक और लक्षणालंकार एक अलग चित्रमान प्रस्तुत करते हैं।

भोजनोपरांत सत्र में सुश्री उषा कुमारी ने 'नई कविताएँ नयी कल्पनाएँ' विषय पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। सुश्री गिरिजा पपेक्कर ने नारी होने के नाते प्रकाशन में होने वाली कठिनाइयों को साझा किया। सुश्री शीबा दिवाकरण ने भी अपने व्यक्तिगत अनुभवों को साझा किया।

परिसंवाद में भारी संख्या में लेखक, छात्र, श्रोता उपस्थित थे।

डोगरी साहित्य में अवचेतना

19 सितंबर 2015, पालमपुर

साहित्य अकादेमी द्वारा 19 सितंबर 2015 को डी. ए.वी. कन्या महाविद्यालय, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश में 'डोगरी साहित्य में अवचेतना' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन किया गया। आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने औपचारिक स्वागत भाषण करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताते हुए कहा कि अकादेमी विभिन्न भाषा क्षेत्रों के सुदूर स्थलों तक पहुँचने का भी है, ताकि उत्कृष्ट साहित्य को प्रचार-प्रसार मिले। डोगरी-हिंदी के प्रतिष्ठित लेखक तथा साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. प्रत्यूष गुलेरी की अध्यक्षता में संपन्न इस परिसंवाद में बीज भाषण प्रो. ललित मगोत्रा द्वारा प्रस्तुत किया गया, जो अकादेमी में डोगरी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक हैं। परिसंवाद में डॉ. बंसी लाल तथा डॉ. निर्मल विनोद ने क्रमशः 'डोगरी कविता एवं अवचेतना' तथा 'डोगरी उपन्यास एवं अवचेतना' शीर्षक आलेख प्रस्तुत किए। छत्रपाल की अनुपस्थिति में उनके द्वारा प्रेषित आलेख 'डोगरी कहानी एवं अवचेतना' का पाठ भी किया गया। कार्यक्रम के अंत में के.एल.बी.डी.ए.वी. कन्या

परिसंवाद का एक दृश्य

महाविद्यालय के प्रधानाचार्य डॉ. एन.डी. शर्मा ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

नेपाली गीति साहित्य

24 सितंबर 2015, गेजिंग (पश्चिम सिक्किम)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और पश्चिम सिक्किम साहित्य प्रकाशन, गेजिंग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'नेपाली गीति साहित्य' पर एक परिसंवाद का आयोजन 24 सितंबर 2015 को गेजिंग में किया गया।

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता साहित्य अकादेमी के नेपाली भाषा परामर्श मंडल के सदस्य श्री प्रद्युम्न श्रेष्ठ ने की, जबकि बीज भाषण साहित्य अकादेमी की सामान्य परिषद् के सदस्य श्री थिरू प्रसाद नेपाल ने दिया। आरंभ में अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने स्वागत भाषण करते हुए नेपाली भाषा में अकादेमी द्वारा संचालित गतिविधियों के बारे में बताते हुए गीति साहित्य के परिदृश्य पर संक्षिप्त प्रकाश डाला। श्री नेपाल ने नेपाली में गीति साहित्य सर्जन की परंपरा को काफी समृद्ध बताया और इसकी विकास-यात्रा को रेखांकित किया। श्री श्रेष्ठ ने कहा कि गीत हमारा जीवन है। गीत की अनुपस्थिति से मनुष्य क्रूर और निष्ठुर बन जाता है।

सत्रांत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने बताया कि किस प्रकार अकादेमी इसके लिए प्रयत्नशील है कि सुदूर क्षेत्रों में भी पहुँचकर साहित्य प्रेमियों को श्रेष्ठ भारतीय साहित्य उपलब्ध कराया जाए।

परिसंवाद का विचार सत्र प्रख्यात नेपाली लेखक और नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य श्री भूपेंद्र अधिकारी की अध्यक्षता में संपन्न हुआ। इस सत्र में श्री सचेन राई, श्री विजय कुमार सुब्बा और श्री कमल रेग्मी ने क्रमशः 'स्वतंत्रता पूर्व का भारतीय नेपाली गीति साहित्य', 'भारतीय नेपाली गीति साहित्य की वर्तमान स्थिति' तथा 'स्वतंत्र्योत्तर भारतीय नेपाली गीति साहित्य' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए। विद्वानों ने अपने आलेखों में महत्त्वपूर्ण नेपाली गीतों को संदर्भित किया था, जिनका उन्होंने सस्वर पाठ भी किया।

आधुनिक असमिया ड्रामा : समकालीन भारतीय ड्रामा के परिप्रेक्ष्य में

26 सितंबर 2015, कोकराझार, असम

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा बोडोलैंड विश्वविद्यालय के असमिया विभाग के सहयोग से 26 सितंबर 2015 को 'आधुनिक असमिया ड्रामाः समकालीन भारतीय ड्रामा के परिप्रेक्ष्य में' विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

बोडोलैंड विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. हेमंत कुमार बरुआ ने द्वीप प्रज्वलित कर परिसंवाद का उद्घाटन किया। अकादेमी के असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. कवीं डेका हज़ारिका ने अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. नवज्योति सरमा ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा नॉर्थ ईस्ट हिल्स यूनिवर्सिटी के डॉ. हितेंद्र कुमार मिश्र ने बीज वक्तव्य दिया।

प्रथम सत्र में डॉ. जगदीश पतगिरी, डॉ. नरेन पतगिरी एवं डॉ. इस्माइल हुसैन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा सत्र की अध्यक्षता सत्यकाम बोरठाकुर ने की। द्वितीय सत्र में बीनिता बोरा देवचौधुरी, डॉ. इंदिरा बोरो, डॉ.

परिसंवाद का एक दृश्य

हेमंत कुमार दास और श्रीमती रेणु देवनाथ ने अपने आलेख प्रस्तुत किए तथा डॉ. भवेंद्र कलिता ने सत्र की अध्यक्षता की।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि डॉ. शेखर ब्रह्म, कुल सचिव, बोडोलैंड विश्वविद्यालय थे तथा सत्र के अध्यक्ष डॉ. हितेंद्र कुमार मिश्र थे। समापन वक्तव्य डॉ. जगदीश पतगिरी ने दिया।

भारतीय नेपाली नाटक

26 सितंबर 2015, कालेबुङ (पश्चिम बंगाल)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और नेपाली साहित्य अध्ययन समिति, कालेबुङ के संयुक्त तत्त्वावधान में 'भारतीय नेपाली नाटक' पर एक परिसंवाद का आयोजन 26 सितंबर 2015 को वर्शिप सेंटर, कालेबुङ में किया गया।

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता नेपाली साहित्य अध्ययन समिति के अध्यक्ष श्री ज्ञान सुतार ने की। आरंभ में स्वागत भाषण करते हुए, साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने विषय की गंभीरता की ओर सबका ध्यान आकृष्ट किया। बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए सिक्किम विश्वविद्यालय के संकायाध्यक्ष (डीन) ने भारतीय नेपाली नाटक की विकास यात्रा को रेखांकित करते हुए इस बात पर बल दिया कि नेपाली नाट्यालोचकों को स्वयं का नाट्यशास्त्र विकसित करना चाहिए, क्योंकि वे इसके लिए अन्य भाषाओं पर आश्रित हैं। सत्रांत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए, अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं, विशेषकर नेपाली भाषा एवं साहित्य के विकास के क्षेत्र में अकादेमी द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताया।

परिसंवाद के विचार सत्र की अध्यक्षता वरिष्ठ नेपाली नाट्यकार श्री नंद हाङ्खिम ने की। इस सत्र में श्री मुक्ति प्रसाद उपाध्याय, डॉ. कृष्णराज घतानी और डॉ. ममता लामा ने क्रमशः 'भारतीय नेपाली नाटक में पौराणिक संदर्भ', 'भारतीय आधुनिक नेपाली नाटक में प्रयोगात्मक पक्ष का चित्रावलोकन' तथा 'कालेबुङ के नेपाली नाट्यकार' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्रों का संचालन नेपाली अध्ययन समिति के महासचिव श्री बलभद्र शर्मा ने किया।

तमिलनाडु में उर्दू शायरी

27 सितम्बर 2015, चेन्नई

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा बुख़ारी हॉल, न्यू कॉलेज, चेन्नई में 27 सितंबर 2015 को 'तमिलनाडु में उर्दू शायरी' विषय पर एक-दिवसीय परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल ने की और उद्घाटन व्याख्यान प्रसिद्ध बुद्धिजीवी श्री मूसा रज़ा ने दिया। साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने सभी प्रतिभागियों, कवियों, लेखकों तथा श्रोताओं का स्वागत किया और डॉ. सैयद सज्जाद हुसैन ने बीज-भाषण दिया। श्री मूसा रज़ा ने इस अवसर पर कहा कि तमिलनाडु में उर्दू शायरी की परंपरा बहुत मज़बूत और भविष्य उज्ज्वल है। उन्होंने कहा कि उत्तर भारत की तरह दक्षिण भारत में भी मेयारी साहित्य लिखा जा रहा है। श्री चंद्रभान ख़याल ने कहा कि चेन्नई में इस परिसंवाद के आयोजन का मक़सद उर्दू साहित्य को प्रोत्साहन देना है और यहाँ के कवियों की शायरी को दूर दूर तक पहुँचाना है। सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के उद्देश्य पर प्रकाश डाला और तमिलनाडु की साहित्यिक कार्यक्रमों के आयोजन पर अपनी प्रसन्नता व्यक्त की। आख़िर में साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी ने तमाम श्रोताओं तथा प्रतिभागियों का धन्यवाद किया।

उद्घाटन सत्र के बाद प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री मूसा रज़ा ने की जिसमें डॉ. के.एच. कलीमुल्लाह और डॉ. एम. सईदुद्दीन ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता डॉ. क़ाज़ी हबीब अहमद ने की, जिसमें डॉ. एम.बी.अमानुल्लाह, डॉ. तैयब ख़िरादी और डॉ. मुज़फ़्फ़रुद्दीन ने अपने आलेख पेश किए।

इस अवसर पर चेन्नई के साहित्य रसिक बड़ी संख्या में उपस्थित थे।

के.श्रीनिवासराव, मूसा रज़ा, चंद्रभान ख़याल, मलिकुल अज़ीज़ और माइक पर सज्जाद हुसैन

स्वातंत्र्योत्तर नेपाली साहित्य की प्रवृत्तियाँ

27 सितंबर 2015, सिलिगुड़ी (पश्चिम बंगाल)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और नंदी तिवारी स्मृति प्रतिष्ठान, सिलिगुड़ी के संयुक्त तत्वावधान में 'स्वातंत्र्योत्तर नेपाली साहित्य की प्रवृत्तियाँ' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन 27 सितंबर 2015 को सिलिगुड़ी (पश्चिम बंगाल) में किया गया।

परिसंवाद के उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात नेपाली साहित्यकार श्री एम. बी. प्रधान ने की। आरंभ में स्वागत भाषण देते हुए साहित्य अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने विषय प्रवर्तन किया। बीज भाषण प्रस्तुत करते हुए प्रख्यात नेपाली कवि एवं आलोचक डॉ. जीवन नामदुंग ने स्वतंत्रतापूर्व और स्वातंत्र्योत्तर समालोचना की विशिष्टताओं को रेखांकित किया और बताया कि किस प्रकार स्वातंत्र्योत्तर प्रवृत्तियों में उत्तर-आधुनिकता और उत्तर-संरचनावादी प्रवृत्ति तक का समावेश हो गया है। अपने अध्यक्षीय भाषण में श्री एम. बी. प्रधान ने कहा कि भूमंडलीकरण के इस युग में हमारी भाषा भी दूसरी भाषाओं के प्रभाव में है। सत्रांत में धन्यवाद ज्ञापन करते हुए अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अकादेमी द्वारा विभिन्न भारतीय भाषाओं, विशेषकर नेपाली भाषा एवं साहित्य के विकास के क्षेत्र में अकादेमी द्वारा संचालित की जा रही विभिन्न गतिविधियों के बारे में संक्षेप में बताया।

परिसंवाद के विचार सत्र की अध्यक्षता प्रख्यात नेपाली साहित्यकार और नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. जस योंजन 'प्यासी' ने की। इस सत्र में श्री नरेश चंद्र खाती, श्री जय क्याक्टस, श्री तेजमान बराइली और श्री मेघनाथ छेत्री ने क्रमशः 'कविता के संदर्भ में भारतीय नेपाली आलोचना की स्वातंत्र्योत्तर प्रवृत्तियाँ', 'कथासाहित्य के संदर्भ में भारतीय नेपाली आलोचना की स्वातंत्र्योत्तर प्रवृत्तियाँ', 'नाट्य साहित्य के संदर्भ में भारतीय नेपाली आलोचना की स्वातंत्र्योत्तर प्रवृत्तियाँ' तथा 'भारतीय नेपाली आलोचना की स्वातंत्र्योत्तर प्रवृत्तियाँ' शीर्षक अपने आलेख प्रस्तुत किए। सत्रांत में विद्वानों ने श्रोताओं के प्रश्नों के उत्तर भी दिए।

पल्ल दुर्गेय जन्मशतवार्षिकी

04 अक्टूबर 2015, हैदराबाद

क्षेत्रीय कार्यालय बंगळूरु द्वारा आंध्रा सारस्वत परिषद् हैदराबाद के सहयोग से 04 अक्टूबर 2015 को पल्ल दुर्गेय जन्मशतवार्षिकी पर एक परिसंवाद का आयोजन किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महालिंगेश्वर ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया। श्री महालिंगेश्वर ने यह भी बताया कि पल्ल दुर्गेय उस्मानिया यूनिवर्सिटी में 1942 में एम. ए. तेलुगु के प्रथम छात्र थे।

अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में डॉ. एन. गोपी ने कहा कि पल्ल दुर्गेय का लेखन बहुत अधिक संख्या में नहीं है, लेकिन जो है वह उत्कृष्ट है। फिर उन्होंने दुर्गेय की कुछ कविताओं का वाचन किया।

सत्र के मुख्य अतिथि श्री के. वी. रमनधारी ने अपने वक्तव्य में कहा कि पल्ल दुर्गेय ख़ामोशी और विश्वास के एक अवतार थे। इस तरह के व्यक्तित्व तेलंगाना के साहित्य का एक गौरव हैं। डॉ. अमंगी वेणुगोपाल ने अपने बीज वक्तव्य में पल्ल दुर्गेय की सादगी और चरित्र जैसे गुणों पर प्रकाश डाला। श्री वेणुगोपाल ने पल्ल दुर्गेय द्वारा तेलुगु कवियों के बारे में की गई टिप्पणी के बारे में बताया।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री मसान चेनप्पा ने की। अध्यक्षता के अतिरिक्त श्री चेनप्पा ने तेलंगाना ग्रामीण जीवन के चित्रण पर अपना आलेख प्रस्तुत किया।

दूसरे सत्र में श्री गणमराजू गिरिजा मनोहर बाबू एवं श्री जी. चेना केशव रेड्डी ने क्रमशः 'पल्ल दुर्गेय का पालवेल : काव्य उत्कृष्टता का एक अध्ययन' तथा 'पल्ल दुर्गेय की गेय कविता का आलेचनात्मक अध्ययन' विषय पर आलेख प्रस्तुत किए। श्री रेड्डी ने पल्ल दुर्गेय के ग्रामीण जीवन का वर्णन करते हुए उन दिनों के किसानों की दयनीय स्थिति पर प्रकाश डाला।

समापन सत्र के मुख्य अतिथि वरिष्ठ कवि डॉ. सी. नारायण रेड्डी ने परिसंवाद के इस आयोजन पर हर्ष व्यक्त किया। उन्होंने पल्ल की पुस्तकों के संशोधित संस्करण को प्रकाशित करने का सुझाव दिया। समापन सत्र की अध्यक्षता डॉ. एन. गोपी ने की।

पंडित एन. खेलचन्द्र सिंह : व्यक्ति एवं कृति

10 अक्टूबर 2015, इंफाल

साहित्य अकादेमी द्वारा मणिपुरी साहित्य परिषद् इंफाल के सहयोग से पंडित एन. खेलचंद्र सिंह, व्यक्ति एवं कृति विषय पर एक परिसंवाद का आयोजन 10 अक्टूबर 2015 को राजकीय डांस कॉलेज, इंफाल में किया गया।

अकादेमी के प्रभारी श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए पंडित एन. खेलचंद्र सिंह के मणिपुरी भाषा एवं साहित्य में योगदान को रेखांकित किया। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह ने अपने आरंभिक वक्तव्य में बहुमुखी प्रतिभा के धनी पंडित खेलचंद्र सिंह की उपलब्धियों की चर्चा की। श्री सिंह ने यह भी बताया कि पंडित खेलचंद्र सिंह मार्शल आर्ट्स, मंत्रों, ज्योतिष आदि के भी ज्ञाता थे। अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रोफ़ेसर थ. तोंबी सिंह ने पंडित खेलचंद्र सिंह को सम्मानजनक शब्दों के द्वारा याद किया। प्रोफ़ेसर तोंबी ने इस बात पर ज़ोर दिया कि मणिपुर के समकालीन समाज के लिए पंडित जी की प्रासंगिकता के कारण महत्त्व

पंडित खेलचंद्र परिसंवाद का एक दृश्य

दिया जाता है। मणिपुरी साहित्य परिषद् के सदस्य श्री एल. सदानंद सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया। श्री बी. कुलाचंद्र शर्मा ने अपने आलेख में खेलचंद्र सिंह के जीवन और लेखन कर्म के सभी पहलुओं पर प्रकाश डाला। मणिपुरी संस्कृति और साहित्य में श्री पंडित का बड़ा योगदान है। श्री एन. इंद्रामणि ने अपने आलेख में पुराने मणिपुरी भाषा के साथ पंडित खेलचंद्र सिंह के व्यवहारिक योगदान को विशेष रूप से रेखांकित किया। डॉ. इबोहंबी सिंह ने भी अपना आलेख प्रस्तुत किया। सत्र के अध्यक्ष श्री आर. के. झालजीत सिंह ने पंडित खेलचंद्र सिंह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि पंडित जी ने भविष्य के शोधकर्ताओं के लिए पुराने मणिपुरी संस्कृति भाषा और साहित्य के कई पहलुओं को छोड़ा है।

श्री एल. शरतचंद्र सिंह ने अपने आलेख में श्री पंडित के मणिपुर के मार्शल आर्ट के सिद्धांतों, ऐतिहासिक पृष्ठभूमि, प्रतीकात्मक अर्थ आदि के योगदान को इंगित किया। श्री बीरचंद्र ने अपने आलेख में पंडित खेलचंद्र के ऐतिहासिक आलेख, औपनिवेशिक और उत्तर औपनिवेशिक दस्तावेज़ों के संरक्षण का उल्लेख किया। डॉ. वाय. कुंजबिहारी सिंह ने अपने आलेख में खेलचंद्र के मणिपुरी सभ्यता के संस्थापक के रूप में जीवनपर्यन्त काम करते रहने को रेखांकित किया। प्रोफ़ेसर एन. तोंबी सिंह ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि इस सत्र में पंडित खेलचंद्र के जीवन के कुछ अनछुए पहलुओं को उजागर किया गया। श्री ई. प्रियब्रत सिंह ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कीरत बाबाणी : व्यक्ति एवं साहित्य

11 अक्टूबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा प्रसिद्ध सिंधी लेखक, अनुवादक श्री किरत बबाणी पर एक परिसंवाद का आयोजन 11 अक्टूबर 2015 को अकादेमी के ऑडिटोरियम में किया गया।

अकादेमी के क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किंबहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री बाबाणी को एक विशिष्ट सिंधी साहित्यकार के रूप में, अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित एवं सिंधी साहित्य का एक स्तंभ बताया।

सुश्री कला प्रकाश ने उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता करते हुए बाबाणी के साथ बिताए गए अपने साहित्यिक यादों को साझा किया। अकादेमी के सिंधी परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रकाश ने बीज वक्तव्य दिया। अपने बीज वक्तव्य में उन्होंने बाबाणी को नदी की बहती लहरों के समान बताया जो रुकावटों के बाद भी बहती रहती है। उन्हें सिंधी साहित्य के स्तंभों में से एक माना जाता है।

परिसंवाद के प्रथम सत्र की अध्यक्षता श्री लक्ष्मण दूबे ने की तथा श्री मोहन गेहाणी ने किरत बाबानी के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। वे कीरत बाबाणी के साथ बहुत निकट से 60 वर्षों तक जुड़े रहे थे। श्री जेठो लालवाणी ने कीरत बाबाणी की कहानियों एवं

आलेख प्रस्तुत करते हुए मोहन गेहाणी

उद्घाटन सत्र में अध्यक्षीय वक्तव्य देती सुश्री कला प्रकाश

नाटकों के संदर्भ में बात करते हुए उनके अकादेमी पुरस्कृत नाटक *धरती जो साड* के बारे में चर्चा की। सुश्री संध्या कुंदनानी ने बाबाणी के आत्मकथात्मक लेखन के बारे में बात की।

दूसरे सत्र में श्री लक्ष्मण दूबे ने बाबाणी के काव्यात्मक लेखन पर अपना आलेख प्रस्तुत किया। श्री हुंदराज बलवानी का आलेख 'बाबाणी के लेखन में सिंधियत' विषय पर था। उनका कहना था कि बाबाणी का लेखन सचमुच सिंधी का जीवंत रेखाचित्र है। इस सत्र की अध्यक्षता सुश्री मीना रूपचंदानी ने की।

तीसरे सत्र की अध्यक्षता श्री मोहन गेहाणी ने की। इस सत्र में 'सिंधी आलोचना में बाबानी का योगदान' तथा 'बाबाणी का यात्रावृत्तांत' विषय पर क्रमशः सुश्री मीना रूपचंदानी एवं सुश्री शोभा लालचंदानी ने अपने आलेख प्रस्तुत किए। वास्तव में यह परिसंवाद कीरत बाबाणी को सच्ची श्रद्धांजलि थी।

उन्नीसवीं सदी के उर्दू अख़बारात व रिसाइल का लिसानियाती मुताला

31 अक्टूबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई के सभागार में 31 अक्टूबर 2015 को 'उन्नीसवीं सदी के उर्दू अख़बारात व रिसाइल का लिसानियाती मुताला' विषय पर एक-दिवसरीय परिसंवाद का आयोजन किया गया, जिसके उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता बेगम आबिदा इनामदार, अध्यक्ष दकन मुस्लिम इंस्टीट्यूट, पूणे ने किया।

बीज भाषण उर्दू के प्रसिद्ध विद्वान एवं आलोचक शमीम तारिक़ ने दिया। उन्होंने उन्नीसवीं सदी की उर्दू पत्र-पत्रिकाओं के विभिन्न पहलुओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि उर्दू पत्रकारिता ने अमन और शांति का दामन कभी नहीं छोड़ा और स्वतंत्रता संग्राम में भरपूर हिस्सा लिया। इस सत्र में सैयद यहया नशीत ने अपना आलेख प्रस्तुत किया। साहित्य अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मुश्ताक़ सदफ़ ने सभी प्रतिभागियों तथा श्रोताओं का स्वागत किया। बेगम आबिदा इनामदार ने अपने अध्यक्षीय भाषण में साहित्य अकादेमी के कार्यक्रमों की सराहना करते हुए कहा कि उन्नीसवीं सदी के पत्र-पत्रिकाओं के विषय पर इस परिसंवाद का आयोजन करके अकादेमी ने हमें बीते दिनों के पत्रकारिता पर विचार-विमर्श करने का अवसर प्रदान किया है।

दूसरे सत्र की अध्यक्षता उर्दू दैनिक *इंक़लाब*, मुंबई के संपादक शाहिद लतीफ़ ने की और इस सत्र में सलीम शहज़ाद, अतहर अज़ीज़ और शकील रशीद ने अपने-अपने आलेख प्रस्तुत किए।

इस अवसर पर मुंबई के साहित्य जगत के बड़ी हस्तियाँ उपस्थित थीं।

बायें से: मुश्ताक़ सदफ़, बेगम आबिदा इनामदार, शमीम तारिक़ एवं यहिया नशीत

लेखक सम्मिलन

उत्तर-पूर्व एवं दक्षिण लेखक सम्मिलन

19-20 सितंबर 2015, पुदुचेरी

उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई द्वारा पांडिचेरी इंस्टिट्यूट ऑफ़ लिंग्विस्टिक एंड कल्चर के सहयोग से उत्तर-पूर्व एवं दक्षिणी लेखक सम्मिलन का आयोजन पांडिचेरी स्टेट को-ऑपरेटिव हॉल पुदुचेरी में 19-20 सितंबर 2015 को किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए उत्तर-पूर्वी तथा भारत के अन्य क्षेत्रों के लेखकों के सम्मेलन का साहित्य अकादेमी द्वारा आयोजन के औचित्य के बारे में बताया। उन्होंने उत्तर-पूर्वी राज्यों और भारत के अन्य भाग विशेष रूप से तमिलनाडु के बीच सांस्कृतिक और साहित्यिक समानताओं पर प्रकाश डाला। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नाचिमुथु ने अपने आरंभिक वक्तव्य में कहा कि पूर्वोत्तर भारत एवं देश के अन्य भागों के समुदायों के मध्य साहित्य एक ठोस पुल का निर्माण कर सकता है तथा अच्छे अनुवादकों की कमी इन क्षेत्रों और शेष भारत के बीच बेहतर समझ में बाधा है। लब्धप्रतिष्ठ ओड़िया लेखक तथा अकादेमी के महत्तर सदस्य श्री मनोज दास ने अपने उद्घाटन वक्तव्य में भारत की विविध भाषायी और साहित्यिक परंपराओं के बारे में बात की तथा उन्हें एकीकृत एवं एकजुट करने के प्रयासों की साहित्य अकादेमी की प्रशंसा की। अकादेमी के उपाध्यक्ष डॉ. चंद्रशेखर कंबार ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में संस्कृतियों एवं परंपराओं को एकजुट करने के निरंतर प्रयासों को रेखांकित किया तथा यह भी कहा कि यद्यपि व्यक्तिगत एवं कुछ संस्थानों द्वारा अनुवाद के कार्य किए जा रहे हैं लेकिन ये पर्याप्त नहीं हैं। प्रो. के.सी. बराळ ने अपने विशेष संबोधन में मन और परंपराओं के संगम की बात की, तथा संस्कृति, भाषायी एवं साहित्यिक परंपराओं के बारे में बात की। उन्होंने यह भी कहा कि नदियों व महासागरों के संगम की तरह इन परंपराओं का संगम भी शानदार उत्पादन प्रदान करेगा। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य श्री सुंदर मुरुगन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

इस सत्र में चार लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री प्रेमानारायण नाथ (असमिया), सुश्री जोगमाया चकमा (चकमा), श्री नागथीहल्ली रमेश (कन्नड) एवं श्री एस. सुकुमारन (तमिळ) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

प्रथम सत्र 'संस्कृति का अनुवाद' विषय पर पैनल चर्चा का सत्र था तथा सत्र की अध्यक्षता डॉ. नरहल्ली बालसुब्रह्मण्यम ने की। श्री बसवराज देवनूर (कन्नड), श्री रणजीत तोकचोम (मणिपुरी) एवं डॉ. आर. संबत (तमिळ) ने संबंधित भाषाओं के दृष्टिकोण रखे।

शाम को 'लोक : विविध स्वर' का आयोजन था जिसमें असमिया समूह द्वारा बीहू गीत एवं नृत्य प्रस्तुत किया गया।

द्वितीय सत्र कहानी-पाठ को समर्पित था तथा सत्र की अध्यक्षता श्री जी.पी. सरमा ने की। पाँच प्रसिद्ध कथाकार श्री हलेमने राजशेखर (कन्नड), श्री सुमेश चंद्रोत (मलयाळम्), सुश्री सुर्मा एन. देवी (मणिपुरी), डॉ. सी. सेतुपति (तमिळ), एवं श्री दतला देवदानम राजू (तेलुगु) ने अपनी कहानियाँ प्रस्तुत कीं।

तीसरे सत्र का विषय था 'मैं क्यों लिखता हूँ?' तथा सत्र की अध्यक्षता श्री जी.पी. सरमा ने की। श्री देबव्रत दास (असमिया), श्री शमशेर अळी (नेपाली), प्रो. के. पंचगंम (तमिळ) एवं श्री जे. एस. मूर्ति (तेलुगु) ने रचनात्मक लेखन प्रक्रिया एवं रचनात्मक जीवन के बारे में अपने दृष्टिकोण प्रस्तुत किए।

चौथा सत्र काव्य गोष्ठी के लिए था तथा सत्र की अध्यक्षता प्रो. एन. गोपी ने की। श्री नवीन मल्ल बोरो (बोडो), श्री बोद्धराई देव बरमा (कोकबोराक), श्री विनोद रेसिळी (नेपाली), सुश्री एस. विजयलक्ष्मी (तमिळ) एवं श्री दमेरा रमुलु (तेलुगु) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

बहुभाषी लेखक सम्मिलन

20-21 सितंबर 2015, गंगटोक

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा नेपाली साहित्य परिषद् सिक्किम के सहयोग से 20-21 सितंबर 2015 को एक बहुभाषी लेखक सम्मिलन का आयोजन किया गया। अकादेमी के प्रभारी श्री गौतम पाल ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया एवं बहुभाषी लेखक सम्मिलन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला।

अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने अपने आरंभिक वक्तव्य में इस प्रकार के सम्मिलनों को समय की मांग बताया, विशेष रूप से भारत के पूर्वोत्तर भाग में।

सिक्किम विश्वविद्यालय के प्रोफ़ेसर प्रतापचंद्र प्रधान ने अपने बीज वक्तव्य में और अधिक सक्रिय एवं सुसंगत बहुभाषीय सम्मिलनों की आवश्यकता पर बल दिया। उन्होंने साहित्य की महत्ता पर भी प्रकाश डाला कि साहित्य समाज का दर्पण होता है। श्री मदन चिंतरी जो कि इस सत्र के मुख्य अतिथि थे, ने सिक्किम साहित्य परिषद् को इस आयोजन के लिए बधाई दी।

बहुभाषी लेखक सम्मिलन में अपना वक्तव्य देते हुए रामकुमार मुखोपाध्याय

उन्होंने यह भी कहा कि बहुभाषी का तात्पर्य मात्र विभिन्न भाषाओं में लेखन या अभिव्यक्ति नहीं है बल्कि भाषाओं का संबंध एवं रिश्तों से भी है।

अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन सामान्य तथ्यों को रेखांकित किया जो पूर्वोत्तर क्षेत्र के साहित्य में समान रूप से पाए जाते हैं। अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य श्री प्रद्युम्न श्रेष्ठ ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए श्री एच. बिहारी सिंह ने पूर्वी क्षेत्र के साहित्य में आम कारकों की अवधारणा को दोहराया। इस सत्र में श्री इमरान हुसैन (असमिया), श्रीमती आयशा ख़ातून (बाङ्ला), श्री देवकांत रामचेरी (बोडो), श्री श्यामचंद झा (मैथिली) एवं श्री पवन राय नामदुंग ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अकादेमी की असमिया परामर्श मंडल की संयोजिका प्रो. कर्बी डेका हज़ारिका ने की तथा अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में उन्होंने कहा कि साहित्य में कविता का एक अलग महत्त्व है एवं कविता जीवन की साधारण समस्याओं को असाधारण ढंग से प्रस्तुत करती है।

श्री कमल कुमार तांती (असमिया), श्री रजत सुमार (बाङ्ला), श्रीमती रश्मि चौधरी (बोडो), श्री कमल मोहन ठाकुर, श्री बीरू बांग्डेल (नेपाली) ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं।

दूसरे दिन का प्रथम सत्र कहानी पाठ का सत्र था। इस सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौर हरिदास ने की। श्री दास अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में क्षेत्रीय भाषाओं की रचनाओं को अधिकतर लोगों तक पहुँचाए जाने पर ज़ोर दिया। श्री बुद्धिचंद्र हेसनाम (बोडो), श्री के. एस. रणपहेली तथा श्री सदानंद त्रिपाठी (हिंदी) ने अपनी कहानियों का पाठ किया।

द्वितीय सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के संताली परामर्श मंडल के संयोजक श्री गंगाधर हांसदा ने की। अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में श्री हांसदा ने कहा कि कविता के माध्यम से साधारण से साधारण समस्याओं को भी उजागर किया जा सकता है। बहुभाषी सम्मिलन क्षेत्रीय भाषाओं के विकास में सहायक होते हैं। श्रीमती हाओबम नलिनी देवी (मणिपुरी), श्री अशोक बिस्वा, श्रीमती ललिता शर्मा (नेपाली), श्री दशरथ माझी (संताली), श्री बिपिन नायक (ओड़िया) ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

समापन सत्र की अध्यक्षता नेपाली साहित्य परिषद् के अध्यक्ष श्री पारस मणि ढांगल ने की तथा कार्यक्रम का समापन धन्यवाद ज्ञापन से हुआ।

प्रथम सत्र की अध्यक्षता करते हुए एच. बिहारी सिंह

साहित्य मंच

साहित्य मंच

3 सितंबर 2015, वसई

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा सेंट गॉसालो ग्रेसिया कॉलेज, वसई के सहयोग से 3 सितंबर 2015 को साहित्य मंच का आयोजन किया गया। डॉ. सेजल शाह (गुजराती), सुश्री फिलोमिना संफ्रोसिस्को (कोंकणी), डॉ. महेश केलुस्कर (मराठी) तथा डॉ. संध्या कुंदनानी (सिंधी) ने कार्यक्रम में भाग लिया।

फ़ादर मचादो ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में कहा कि संस्कृति हमारे जीवन का महत्त्वपूर्ण अंग है जो हमारे जीवन को अर्थ देता है। संस्कृति मानव जीवन को पशुओं से अलग करती है। कविता भी संस्कृति का हिस्सा है। उन्होंने इस बात पर बल दिया कि भारत बहुसंस्कृतियों का देश है।

नानावती कॉलेज के गुजराती विभाग की डॉ. सेजल शाह ने अपनी गुजराती कविताएँ 'किल्ले के अंदर सिटी', 'सर्किल', 'मैंने किले में प्रवेश कर लिया है', 'उलझन एवं मोक्ष कहाँ है', प्रस्तुत की तत्पश्चात् इनके हिंदी अनुवाद भी प्रस्तुत किए। सुश्री फिलोमिना संफ्रोसिस्को कोंकणी कवयित्री एवं अनुवादक ने सर्वप्रथम अपनी कविता कोंकणी में तत्पश्चात उनके मराठी अनुवाद प्रस्तुत किये। मराठी के लब्धप्रतिष्ठ कवि डॉ. महेश केलुस्कर ने अपनी मराठी कविताएँ प्रस्तुत कीं, जिन्हें श्रोताओं द्वारा सराहा गया। सिंधी की कवयित्री एवं कहानीकार डॉ. संध्या कुंदनानी ने अपनी कविताएँ पहले सिंधी में फिर उसके अंग्रेज़ी अनुवाद प्रस्तुत किए।

ग्रेसिया कॉलेज के मराठी विभाग की डॉ. अंजली नाइक ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य मंच

5 सितंबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा मुंबई विश्वविद्यालय के कन्नड विभाग के सहयोग से थियेटर विषय पर परिचर्चा का आयोजन 05 सितंबर 2015 को कलीना कैंपस, मुंबई में किया गया। कार्यक्रम के समन्वयक अकादेमी के सदस्य, तथा कन्नड विभाग के प्रमुख डॉ. जी. एन. उपाध्याय थे। प्रसिद्ध नाटककार, निदेशक डॉ. मंजूनाथ, प्रसिद्ध रंगमंच निदेशक डॉ. भरत कुमार पोलिपु, प्रसिद्ध अभिनेता श्री मोहन मरनाड एवं प्रसिद्ध अभिनेत्री अहल्या बल्लाल प्रतिभागी के रूप में शामिल हुए।

डॉ. भरत कुमार ने कहा कि नाटक एक सशक्त माध्यम है और नाटककार व निर्देशक सदैव सामाजिक ज़िम्मेदारियों से बँधे होते हैं। श्री मोहन मरनाड के अनुसार एक अभिनेता को अभिनय के लिए जो भूमिका दी जाती है, उसमें समाहित होना चाहिए और अभिनय बनावटी नहीं होना चाहिए। सुश्री अहल्या बल्लाल ने कहा कि मुंबई जैसे मेट्रो शहरों में ड्रामा रिहर्सल के लिए शामिल होना बहुत मुश्किल होता है। नाटक समस्त ललित कलाओं का भावनात्मक मिश्रण होता है।

डॉ. मंजूनाथ ने कहा कि ग्रीक और फ्रेंच नाटक मात्र संगीत और ओपेरा के प्रभाव से प्रसिद्ध हैं। मराठी एवं गुजराती ड्रामों में भी संगीत को महत्त्व दिया जाता है।

डॉ. जी. वी. कुलकर्णी ने कार्यक्रम की अध्यक्षता की तथा कहा कि थियेटर लोगों और समाज के जीवन में बदलाव व परिवर्तन लाता है। डॉ. जी. एन. उपाध्याय ने कहा कि मुंबई में थियेटर का विस्तृत और लंबे समय का इतिहास है। यह अभी भी गतिशील और जीवंत है।

कार्यक्रम में दो मिनट का मौन रखकर डॉ. एम. एम. कलबुर्गी को श्रद्धांजलि दी गई। कार्यक्रम में शोध छात्र, नाटककार, विद्वान, लेखक भारी संख्या में उपस्थित थे।

साहित्य मंच

11 सितंबर 2015, डोम्बिवली

क्षेत्रीय कार्यालय मुंबई द्वारा 11 सितंबर 2015 को डॉ. बाबा साहब अंबेडकर हॉल डोम्बिवली में एक साहित्य मंच तथा पुस्तक प्रदर्शनी का आयोजन किया गया। पुस्तक प्रदर्शनी का उद्घाटन प्रसिद्ध मराठी आलोचक श्री दीपक घरे द्वारा किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री कृष्णा किम्बहुने ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा आमंत्रित कवियों का परिचय प्रस्तुत किया।

श्री नारायण लाल ने गैरेज, घुसमत, डम्मी, हेयरकट, उत्खनन आदि कविताओं का पाठ किया। श्री नीलकंठ कदम ने भी अपनी कुछ नई तथा कुछ पुरानी कविताओं का पाठ किया।

श्री अजय कंदार एवं सुश्री सुलभा कोरे ने भी अपनी कविताओं का पाठ किया। कार्यक्रम का समापन धन्यवाद प्रस्ताव से हुआ।

साहित्य मंच, आधुनिक तमिळ साहित्य

16 सितंबर 2015, तिरुप्पुर

उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई द्वारा चिक्कन्ना गवर्नमेंट आर्ट्स कॉलेज, तिरुप्पुर के सहयोग से 'आधुनिक तमिळ साहित्य' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कॉलेज के प्राचार्य प्रो. के. शानमुगासुंदरम ने स्वागत

करते हुए तमिळ साहित्य के विभिन्न पक्षों के बारे में बात की। तमिळ के लब्धप्रतिष्ठ साहित्यकार, सुब्रभारती मणियम, कुळां देवेलु एवं थंदावकोन ले तमिळ उपन्यास तथा इसके आधुनिक पक्ष, 'आधुनिक तमिळ कहानियाँ एवं हाशिये के लोगों की दुनिया' एवं 'मीडिया तथा आधुनिक तमिळ साहित्य' विषयों पर क्रमशः बात की। प्रो. एन. बालसुब्रह्मण्यम ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य मंच - साहित्यिक रुझान

25 सितंबर 2015, त्रिची

उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई द्वारा विशप हैबर कॉलेज त्रिची के सहयोग से 'साहित्यिक रुझान' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन 25 सितंबर 2015 को कॉलेज प्रांगण में किया गया। कॉलेज के उप प्राचार्य डॉ. ए.सी. हेनरी अमृतराज ने कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए तमिळ भाषा के साहित्यिक परिवेश के बदलते रुझान के बारे में बात की तथा संगम काल के बाद से तमिळ साहित्यिक प्रवृत्तियों के बारे में बात की। अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. आर. कमारासु ने अपने आरंभिक वक्तव्य में प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए साहित्य अकादेमी द्वारा तमिळ साहित्य के विकास के लिए किए जा रहे प्रयासों की चर्चा की। लब्धप्रतिष्ठ तमिळ साहित्यकार श्री अंथोनी क्रुज, श्री पी. भातीवानन एवं श्री ए. गुणाशेखरन ने 'कविता का रुझान', 'कहानी का रुझान' एवं 'उपन्यास का रुझान' विषय पर क्रमशः अपने विचार व्यक्त किए। विशप हैबर कॉलेज के तमिळ विभाग के अध्यक्ष डॉ. आर. विजयरानी ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कविता पाठ

27 सितंबर 2015, चेन्नई

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा बुख़ारी हॉल, न्यू कॉलेज, चेन्नई में 27 सितंबर 2015 को सायं 4 बजे साहित्य मंच के अंतर्गत कविता पाठ का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता सेक्रेट्री, न्यू कॉलेज ने की। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डा. मुश्ताक़ सदफ़ ने सभी कवियों का परिचय पेश किया और साहित्य मंच कार्यक्रम की उपयोगिता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का संचालन प्रसिद्ध कवि मलिकुल अज़ीज़ ने की। कविता पाठ में चंद्रभान ख़याल, मूसा रज़ा, हसन फ़ैयाज़, अतीक़ अहमद जाज़िब, कातिब मोहम्मद हनीफ़, सैयद असलम सदाउल आमरी और मलिकुल अज़ीज़ ने अपनी कविताएँ प्रस्तुत कीं जिन्हें श्रोताओं ने ख़ूब पसंद किया। आख़िर में साहित्य अकादेमी, चेन्नई के ऑफ़िसर इंचार्ज़ एवं कार्यक्रम अधिकारी श्री के.पी.राधाकृष्णन ने धन्यवाद ज्ञापन दिया। इस अवसर पर बड़ी संख्या में लेखक, साहित्य रसिक और श्रोता उपस्थित थे।

27 सितंबर 2015 को वरंगल, तिलंगाना में 'सहरिदया' साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थान के सहयोग से 'तेलुगु कथा' विषय पर 'साहित्य मंच' आयोजित कार्यक्रम का एक दृश्य।

साहित्य मंच

28 सितंबर 2015, पांडिचेरी

उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई द्वारा पांडिचेरी इंस्टिट्यूट ऑफ़ लिंग्विस्टिक एंड कल्चर के सहयोग से 'भाषा एवं साहित्य' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन 28 सितंबर 2015 को इंस्टिट्यूट के प्रांगण में किया गया। अकादेमी के सामान्य परिषद् के सदस्य डॉ. आर. संबत ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा संक्षेप में अकादेमी की गतिविधियों के बारे में बताया। श्री अरिमापॉडियन, श्री ना.मु. तमिझमणि एवं सुश्री पुंगोदी प्रंगुसम ने तमिळ के साहित्यिक और सांस्कृतिक परिवेश में भाषा और साहित्य पर विभिन्न आधुनिक दृष्टिकोण प्रस्तुत किए।

तमिळ परामर्श मंडल के सदस्य श्री सुंदर मुरुगन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य मंच

02 अक्टूबर 2015, मुंबई

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा मुंबई विश्वविद्यालय के कन्नड विभाग के सहयोग से 'आधुनिक कन्नड कविता में छोटी कविता' विषय पर साहित्य मंच का आयोजन 02 अक्टूबर 2015 को मुंबई विश्वविद्यालय में किया गया।

साहित्य अकादेमी के कन्नड परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. जी. एम. उपाध्याय ने प्रतिभागियों

एवं अतिथियों का स्वागत किया। लब्धप्रतिष्ठ कन्नड कवि एच. दुंडीराज ने अपने बीज वक्तव्य में कन्नड साहित्य में लघु कविता के बारे में बात की। उन्होंने कहा कि किस प्रकार लघु कविताओं में अनुप्रास, पंच एवं व्यंग्य महत्त्वपूर्ण हैं। उन्होंने अपनी पुस्तक से कुछ उदाहरण भी प्रस्तुत किए।

प्रसिद्ध कन्नड कवि एवं आलोचक वी. ग. नायक ने लघु कविताओं के बारे में अपने विचार व्यक्त किए। मशहूर कन्नड लेखक डॉ. के. के. कुलकर्णी ने लघु कविताओं की सुंदरता के बारे में बात की। डॉ. सीतालक्ष्मी ने कहा कि किस प्रकार कन्नड में लघु कविताएँ धीरे-धीरे विकसित हो रही हैं एवं वे किस प्रकार लोकप्रिय हो रही हैं। इस अवसर पर तीन कन्नड पुस्तकों का लोकार्पण भी किया गया। कार्यक्रम में स्थानीय लेखक, कवि, पत्रकार तथा मीडिया के लोग उपस्थित थे।

साहित्य मंच – लिम पोक्चम हरचंद्र सिंह

11 अक्टूबर 2015, इंफाल

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकाता द्वारा गुलापी नाटा संकीर्तन एकेडमी इंफाल के सहयोग से 11 अक्टूबर 2015 को देव लिट्रेचर कैंपस, इंफाल में साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यालय प्रभारी श्री गौतम पाल ने अतिथियों का स्वागत किया। गुलापी नाटा संकीर्तन एकेडमी के निदेशक श्री एल. लकपति सिंह ने बीज वक्तव्य दिया। अकादेमी के मणिपुरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. एच. बिहारी सिंह मुख्य अतिथि थे। श्री एस. थानिक सिंह विशेष अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए तथा श्री आर. के. सनातोंबा सिंह ने सत्र की अध्यक्षता की। गुलापी नाटा संकीर्तन एकेडमी के सचिव ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

प्रथम सत्र में श्री हाङ्वम नंदा शर्मा, श्री अरिबम चितरेश्वर शर्मा एवं श्री एन. खोलो सिंह ने क्रमशः 'एल. हरचंद्र सिंह, गौरा लीला के गुरु के रूप में', 'मणिपुरी साहित्य में एल. हरचंद्र सिंह का योगदान' एवं 'एल. हरचंद्र सिंह : नाट संकीर्तन के रूप में' विषय पर अपने आलेख प्रस्तुत किए। श्री एल. देवेंद्र कुमार ने सत्र की अध्यक्षता की।

द्वितीय सत्र में श्री आर. के. संतोंबा सिंह, श्रीमती ख. सुंदरी देवी एवं श्री पी. जमेस सिंह ने अपने आलेख प्रस्तुत किए।

व्यक्ति एवं कृति

कर्नल सुकुल प्रधान

17 अक्टूबर 2015, दार्जीलिंग

साहित्य अकादेमी द्वारा कर्नल सुकुल प्रधान के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन नेपाली साहित्य सम्मेलन दार्जीलिंग के सहयोग से 17 अक्टूबर 2015 को किया गया।

अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अतिथियों का स्वागत किया तथा कार्यक्रम के बारे में विस्तार से चर्चा की। अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने कर्नल सुकुल प्रधान का परिचय दिया। श्री सुकुल ने कहा कि यद्यपि उन्होंने किसी साहित्यिक पुस्तक की रचना नहीं की, लेकिन कई पुस्तकों ने उन्हें प्रभावित किया है और उन्हें ऊर्जावान बनाया है। उन्होंने *भानुभक्त रामायण* तथा अन्य नेपाली पुस्तकों के साथ कुछ हिंदी पुस्तकों को भी रेखांकित किया। अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य श्री सी. के. राय ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

रचना पाठ

24 सितंबर 2015, गेजिंग (पश्चिम सिक्किम)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और पश्चिम सिक्किम साहित्य प्रकाशन, गेजिंग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'नेपाली रचना पाठ' कार्यक्रम का आयोजन 24 सितंबर 2015 को गेजिंग में किया गया।

नेपाली रचना पाठ का यह कार्यक्रम प्रख्यात नेपाली साहित्यकार श्री गोपीचंद्र प्रधान की अध्यक्षता में संपन्न हुआ, जिसमें आठ कवियों ने अपनी कविताओं का पाठ किया : श्रीमती रिक्की ल्हामु लेप्चा, श्रीमती फूर्बा खांडु गुरुङ, श्री संतोष आले, श्री गोवर्धन बस्तोला, श्री उपमान बस्नेत, श्री सी. के. राई, श्री शेरमान सुब्बा और श्री लक्ष्मी प्रसाद गुरुङ। पठित कविताओं में जहाँ नेपाली समाज और जनजीवन पर आधुनिक प्रभावों और मनोभावों को लेकर लिखी गई कविताएँ, शामिल थीं, वहीं वैसी कविताएँ भी थीं, जिनमें शाश्वत मूल्यबोधों की बात की गई थी। कार्यक्रम के अंत में पश्चिम सिक्किम साहित्य प्रकाशन की महासचिव श्रीमती फूर्बा खांडु गुरुङ ने औपचारिक धन्यवाद ज्ञापन किया।

साहित्य अकादेमी की पत्रिका के ग्राहक बनें

समकालीन भारतीय साहित्य (हिंदी द्वैमासिक)

(अतिथि संपादक : प्रभाकर श्रोत्रिय)

एक प्रति : 25 रु.

वार्षिक सदस्यता शुल्क : 125 रु., त्रिवार्षिक सदस्यता शुल्क : 350 रु.

लेखक से भेंट

पीयूष गुलेरी

19 सितंबर 2015, पालमपुर

साहित्य अकादेमी द्वारा 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत 19 सितंबर 2015 को डी.ए.वी. कन्या महाविद्यालय, पालमपुर, हिमाचल प्रदेश में प्रतिष्ठित डोगरी-पहाड़ी लेखक प्रो. पीयूष गुलेरी के साथ श्रोताओं के भेंट का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम के प्रारंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम की परिकल्पना पर प्रकाश डाला तथा अकादेमी के डोगरी भाषा परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. ललित मगोत्रा ने उनके साहित्यिक योगदान का परिचय देते हुए संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत किया। इस अवसर पर डॉ. पीयूष गुलेरी ने अपनी साहित्यिक यात्र पर प्रकाश डालते हुए अपनी साहित्यिक प्रेरणाओं और प्रभावों का उल्लेख किया। उन्होंने कुछ संस्मरण तथा 'धवलाधार' पर्वत शिखर पर केंद्रित अपनी डोगरी कविताओं का पाठ भी किया। अंत में श्रोताओं ने उनसे जुड़े कुछ प्रश्न भी किए, जिनका उन्होंने संतोषजनक उत्तर दिया। कार्यक्रम में बड़ी संख्या में स्थानीय साहित्य-प्रेमी, गुलेरी परिवार और महाविद्यालय की छात्राएँ और शिक्षक उपस्थित थे।

केदार गुरुङ

24 सितंबर 2015, गेजिंग (पश्चिम सिक्किम)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और पश्चिम सिक्किम साहित्य प्रकाशन, गेजिंग के संयुक्त तत्त्वावधान में 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम के अंतर्गत प्रख्यात नेपाली साहित्यकार केदार गुरुङ के व्याख्यान का आयोजन 24 सितंबर 2015 को गेजिंग में किया गया।

आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने इस कार्यक्रम शृंखला की परिकल्पना और उद्देश्य पर प्रकाश डाला। अकादेमी के परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने श्री केदार गुरुङ का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए उन्हें एक सशक्त प्रयोगवादी कवि बताया और नेपाली साहित्य में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित किया। अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए श्री गुरुङ ने अपनी जीवन-यात्रा और साहित्यिक सृजन के विभिन्न पड़ावों के बारे में बताया। श्री गुरुङ ने नेपाली आंदोलन, पुस्तक प्रकाशन व्यवसाय और 'सृष्टा' जैसी पत्रिका के प्रकाशन की शुरुआत और लंबी यात्रा के बारे में विस्तार से बताया तथा अपनी कुछ कविताओं का पाठ भी किया। उल्लेखनीय है कि श्री गुरुङ ने अपने पचास वर्षों की रचना-यात्रा में नेपाली साहित्य संसार को डेढ़ दर्जन मौलिक ग्रंथों की अमूल्य निधि प्रदान की है, जिसमें दस कविता-संग्रह, तीन कहानी-संग्रह और अन्य कृतियाँ शामिल हैं। उन्हें उनके साहित्यिक योगदान के लिए पाँच दर्जन पुरस्कार प्राप्त हैं, जिनमें भारत सरकार का पद्मश्री अलंकरण भी सम्मिलित है।

सा. कंडासामी

26 सितंबर 2015, चेन्नई

उपक्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई द्वारा प्रसिद्ध तमिळ लेखक / आलोचक श्री सा. कंडासामी के साथ 26 सितंबर 2015 को बुक प्वाइंट ऑडिटोरियम चेन्नई में 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने आमंत्रित लेखक एवं अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि साहित्य अकादेमी का श्री कंडासामी से तीस वर्षों से अधिक का साथ है। श्री कंडासामी ने अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया तथा अपने जीवन, लेखन, अपने लेखन पर प्रभाव तथा अपनी रचना प्रक्रिया, अपने कार्य में समानताओं, आलोचना की प्रासंगिकता तथा आधुनिक तमिळ लेखकों की कृतियों के बीच आम आदमी की जगह आदि के बारे में बात की।

अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नाचिमुथु ने अतिथि लेखक का स्वागत किया तथा परामर्श मंडल के सदस्य श्री माळन ने धन्यवाद ज्ञापन किया। श्री कंडासामी से उपस्थित श्रोताओं द्वारा कुछ प्रश्न किए गए जिनके उत्तर श्री कंडासामी ने सहजता से दिए।

समीरण छेत्री 'प्रियदर्शी'

27 सितंबर 2015, सिलिगुड़ी (पश्चिम बंगाल)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और नंदी तिवारी स्मृति प्रतिष्ठान, सिलिगुड़ी के संयुक्त तत्त्वावधान में 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम के अंतर्गत प्रख्यात नेपाली कथाकार श्री समीरण छेत्री 'प्रियदर्शी' के व्याख्यान का आयोजन 27 सितंबर 2015 को सिलिगुड़ी में किया गया।

आरंभ में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने इस कार्यक्रम शृंखला की परिकल्पना और उद्देश्य पर प्रकाश डाला। अकादेमी के परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने श्री समीरण छेत्री 'प्रियदर्शी' का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए नेपाली साहित्य में उनके महत्त्वपूर्ण योगदान को रेखांकित किया। अपना व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए श्री प्रियदर्शी ने अपने जीवन, साहित्य और पत्रकारिता के विभिन्न पहलुओं की चर्चा की। उल्लेखनीय है कि साहित्य अकादेमी पुरस्कार तथा अन्य अनेक पुरस्कार-सम्मानों से विभूषित श्री प्रियदर्शी के छह कहानी-संग्रह, दो उपन्यास, एक नाटक और एक

इतिहास पुस्तक प्रकाशित हैं। वे नेपाली पत्रकारिता के आरंभिक और शीर्षस्थ पत्रकारों में से एक हैं। उनके द्वारा संपादित 'हिमाली आभा' बड़े आकार और वृहत पैमाने पर प्रकाशित होनवाला प्रथम नेपाली दैनिक था। समाज के भोगे हुए यथार्थ का व्यंग्यपूर्ण चित्रण उनके साहित्य में प्राप्त होता है।

कपिलवाच लिंगामूर्ति

03 अक्टूबर 2015, हैदराबाद

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय बंगळूरु द्वारा आंध्रा सारस्वत परिषद्, हैदराबाद में 03 अक्टूबर 2015 को 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें प्रसिद्ध तेलुगु कवि, आलोचक एवं शोषक कपिलवाच लिंगामूर्ति को आमंत्रित किया गया।

अकादेमी के तेलुगु परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. एन. गोपी ने आमंत्रित कवि का स्वागत करते हुए कहा कि श्री लिंगामूर्ति 100 से अधिक पुस्तकों के लेखक हैं तथा उनके लेखन पर छः पी एच. डी. शोध हो चुके हैं। उनका स्थान लोगों के दिलों में सुरक्षित है और इसीलिए उन्हें लीविंग लेजेंड कहा जा सकता है।

श्री लिंगामूर्ति ने अपनी साहित्यिक यात्रा के बारे में बात करते हुए कहा कि उन्होंने साहित्य की लगभग 20 विधाओं में अभ्यास किया है जैसे, मीटर के द्वारा कविता, गीत, हरिकथा, व्याख्यान, कहानियाँ, समीक्षाएँ, उपन्यास, शोध पत्र, निबंध, नाटक आदि। उन्होंने कहा कि हमेशा अपनी कविता में उन्होंने नवीनता को प्रदर्शित करने की कोशिश की है। श्रोताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर उन्होंने सहजता से दिए।

रामचंद्र बेहेरा

18 अक्टूबर 2015, भुवनेश्वर

अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, कोलकता द्वारा

'लेखक से भेंट' कार्यक्रम में रामचंद्र बेहेरा

लब्धप्रतिष्ठ ओडिया लेखक रामचंद्र बेहेरा के साथ 18 अक्टूबर 2015 को भुवनेश्वर में 'लेखक से भेंट कार्यक्रम' का आयोजन किया गया। अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरिदास ने आमंत्रित लेखक का स्वागत करते हुए उनका परिचय दिया। श्री रामचंद्र बेहेरा का जन्म 1945 को बहिरापुर के घटागांव में हुआ था। उनकी पुस्तक *गोपीपुर* के लिए 2005 में साहित्य अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित किया गया। आपके सत्रह कहानी-संग्रह एवं चौदह उपन्यास प्रकाशित हो चुके हैं।

इस अवसर पर श्री बेहेरा ने अपने जीवन के अनछुए पहलुओं एवं रचना प्रक्रिया को साझा करते हुए कहा कि दुख, दर्द और निम्न मध्यवर्गीय परिवार और मनुष्य के अथक भावना के लिए संघर्ष की बेबसी मेरी कहानियों में परिलक्षित होते हैं। उन्होंने कहा कि प्रत्येक लेखक की एक विशेष शैली होती है। इस अवसर पर उन्होंने अपनी कहानी 'कैंछा' का पाठ भी किया।

सुश्री सानिया

31 अक्टूबर 2015, सांगली

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा महाराष्ट्र साहित्य परिषद् के सांगली शाखा एवं चतुरंग प्रकाशन के सहयोग से 31 अक्टूबर 2015 को गरवारे गर्ल्स कॉलेज, सांगली में मराठी कथाकार सुश्री सानिया के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

अकादेमी के मराठी परामर्श मंडल के सदस्य डॉ. अविनाश सप्रे ने अतिथियों का स्वागत किया तथा सुश्री सानिया का परिचय कराया। सुश्री सानिया ने कहा कि उनकी पहली कहानी जब वे 16 वर्ष की थीं तब प्रकाशित हुई थी तथा उन्होंने अपने नाम के साथ उपनाम नहीं लगाने का निर्णय लिया था। उन्होंने कहा कि उनकी मातृभाषा मराठी है और वे उससे प्रेम करती हैं तथा मराठी में लिखना पसंद करती हैं। उन्होंने आगे कहा कि उन्होंने स्वयं को नारीवादी कहे जाने की कभी परवाह नहीं की। उन्होंने यह भी कहा कि लेखक को अन्याय के विरुद्ध सदैव खड़ा होना चाहिए।

कार्यक्रम में भारी संख्या में छात्र, लेखक, कवि तथा पत्रकार मौजूद थे।

कवि सम्मेलन

4 सितंबर 2015, मायिलादुथुरै

साहित्य अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नै द्वारा ए.वी.सी. कालेज मयिलादुथुरै के सहयोग से 4 सितंबर 2015 को एक कवि सम्मेलन का आयोजन किया गया। साहित्य अकादेमी के तमिल परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नचिमुथु ने सम्मेलन की अध्यक्षता की तथा तमिलनाडु की काव्य परंपरा और साहित्य अकादेमी द्वारा ऐसी परंपराओं को बढ़ावा देने के लिए किये जा रहे प्रयास की बारे में संक्षेप में बात की। ए.वी.सी. कालेज के तमिळ विभाग के अध्यक्ष डॉ. दुरई गुणाशेखरन ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया। प्रतिभागी कवि अरासियन बान, पनीरसेलवन तथा ए.एम. जवाहर ने अपनी कविताएं प्रस्तुत कीं। डॉ. एस. तमिलवेळु ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कवि संधि

आलम खुर्शीद

4 सितंबर 2015, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा प्रसिद्ध उर्दू कवि आलम खुर्शीद (पटना) के साथ एक 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन 4 सितंबर 2015 को अकादेमी सभागार (तृतीय तल), नई दिल्ली में सायं 5 बजे किया गया। अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डा. मुश्ताक़ सदफ़ ने अतिथि का स्वागत करते हुए श्री आलम खुर्शीद का परिचय दिया।

श्री आलम खुर्शीद ने श्रोताओं एवं अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त करते हुए अपने लेखन प्रक्रिया को साझा किया और अपनी कविताओं के साथ ग़ज़लें प्रस्तुत कीं जिसे श्रोताओं ने ख़ूब पसंद किया। उन्होंने इस अवसर पर कहा कि मैं साहित्य में किसी आंदोलन या सिद्धांत का क़ायल नहीं। मैंने कोशिश की है कि मैं अपने एहसासात को आज़ादाना तौर पर पेश कर सकूँ। मेरे लिए यह कभी समस्या नहीं रही कि किस विषय पर लिखना चाहिए या किस विषय पर नहीं लिखना चाहिए या किस तरह लिखना चाहिए और किस तरह नहीं लिखना चाहिए।

ग़ज़लें प्रस्तुत करते आलम खुर्शीद

उन्होंने यह भी कहा कि कवि या लेखक को ज़माने के बदलते परिदृश्य में लिखना चाहिए और हमें बदलती परिस्थितियों को स्वीकार करना चाहिए। उन्होंने इस अवसर पर 'बदलता हुआ मंज़रनामा', 'नया ख़्वाब' के शीर्षक से कविताएँ और कई ग़ज़लें प्रस्तुत कीं।

लकीर खींच के बैठी है तिश्नगी मेरी
बस एक ज़िद है कि दरिया यहीं पे आएगा

———

बहुत सुकून से रहते थे हम अँधेरे में
फ़साद पैदा हुआ रोशनी के आने से

उर्दू परामर्श मंडल के संयोजक श्री चंद्रभान ख़याल भी इस अवसर पर उपस्थित थे। उन्होंने अकादेमी के कवि-संधि प्रोग्राम के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम में दिल्ली की मानी जानी साहित्य प्रेमी उपस्थित रहे।

कवि संधि - हरिश्चंद्र हरित

13 सितंबर 2015, इलाहाबाद

साहित्य अकादेमी और मिथिला सांस्कृतिक संगम, इलाहाबाद के संयुक्त तत्त्वावधान में 'कविसंधि' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत 13 सितंबर 2015 को इलाहाबाद में मैथिली के वरिष्ठ कवि हरिश्चंद्र 'हरित' के एकल कविता-पाठ का आयोजन किया गया। पेशे से शिक्षक हरित जी के दो कविता-संग्रह प्रकाशित हैं : 'छुच्छे-अकटा' तथा 'ने लिखू इतिहास'। उनके द्वारा प्रस्तुत कविताओं में मिथिलांचल के संपूर्ण जनजीवन की आकांक्षा, आशा और संघर्ष की अभिव्यक्ति थी। साथ ही उस पर आधुनिकता के प्रभाव की प्रतिच्छवियों का चित्रण भी किया गया था। आरंभ में अकादेमी के मैथिली परामर्श मंडल की संयोजिका डॉ. वीणा ठाकुर ने उनका संक्षिप्त परिचय देते हुए मैथिली साहित्य में उनके योगदान पर प्रकाश डाला।

ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म

25 सितंबर 2015, कोकराझार

साहित्य अकादेमी द्वारा बोडोलैंड विश्वविद्यालय के बोडो विभाग के सहयोग से बोडो कवि ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन 25 सितंबर 2015 को किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष डॉ. अनिल कुमार बोरो ने आमंत्रित कवि का परिचय कराया। श्री ब्रजेंद्र कुमार ने अपने लेखन के बारे में बेबाकी से बात की। तत्पश्चात् अपनी कविताओं का पाठ किया।

श्रोताओं ने श्री ब्रह्म से उनके लेखन शैली के बोर में कुछ प्रश्न किए जिनके उत्तर श्री ब्रह्म ने बड़ी सहजता से दिए। बोडो परामर्श मंडल के सदस्य श्री प्रणव ज्योति नाज़ारी के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

विष्णु शर्मा

26 सितंबर 2015, कालेबुङ (पश्चिम बंगाल)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और नंदी तिवारी स्मृति प्रतिष्ठान, सिलिगुड़ी के संयुक्त तत्त्वावधान में 'कवि संधि' कार्यक्रम के अंतर्गत प्रख्यात नेपाली कवि-कथाकार श्री विष्णु शर्मा अधिकारी के रचना पाठ का आयोजन 27 सितंबर 2015 को सिलिगुड़ी में किया गया।

श्री अधिकारी ने इस अवसर पर अपने रचनात्मक अनुभवों को साझा करते हुए अपनी कुछ कविताओं का पाठ किया। उनकी कविताओं में जीवन की सघन अनुभूतियों के सहज चित्रण ने श्रोताओं का मन मोह लिया।

एस. वी. सत्यनारायण

04 अक्टूबर 2015, हैदराबाद

क्षेत्रीय कार्यालय, बंगळूरु द्वारा प्रसिद्ध तेलुगु कवि एस. वी. सत्यनारायण के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन 04 अक्टूबर 2015 को आंध्रा सारस्वत प्रतिष्ठान में किया गया।

क्षेत्रीय सचिव श्री एस. पी. महाळिंगेश्वर ने अतिथियों को स्वागत किया। डॉ. एन. गोपी ने आमंत्रित कवि का परिचय देते हुए कहा कि श्री सत्यनारायण 1969 के तेलंगाना आंदोलन में सक्रिय रूप से शामिल थे।

श्री एस. वी. सत्यनारायण ने अपनी युवा अवस्था के बारे में विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि उन्होंने विभिन्न सामाजिक बुराइयों, ख़ासतौर से अन्याय के विरुद्ध पुरज़ोर आवाज़ उठाई है। ऐसा करते हुए वास्तव में उन्होंने अपनी ज़िंदगी को ख़तरे में डाला था। उनका मत था कि वास्तविकता सौंदर्य और दर्शन कविता के आवश्यक तत्त्व हैं। तत्पश्चात उन्होंने अपनी कुछ कविताओं का पाठ भी किया। श्रोताओं द्वारा पूछे गए प्रश्नों के उत्तर उन्होंने सहजता से दिए।

मोहन सिंह

10 अक्टूबर 2015, जम्मू

साहित्य अकादेमी द्वारा डोगरी संस्था, जम्मू के सहयोग से कवि संधि कार्यक्रम का आयोजन प्रसिद्ध डोगरी कवि मोहन सिंह के साथ 10 अक्टूबर 2015 को किया गया।

श्री मोहन सिंह अपनी इंक़लाबी शायरी के कारण पहचाने जाते हैं। श्री सिंह ने अपनी ग़ज़लों एवं टप्पों का पाठ किया। श्री सिंह ने अपनी लेखन प्रक्रिया को भी साझा किया।

अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने अतिथियों का स्वागत करते हुए आमंत्रित लेखक का परिचय दिया। प्रो. ललित मगोत्रा ने आमंत्रित कवि के बारे में विस्तार से चर्चा करते हुए उनके साहित्यिक योगदान को रेखांकित किया।

नोरजन सिङ्देन

18 अक्टूबर 2015, दार्जीलिंग

साहित्य अकादेमी द्वारा नेपाली साहित्य सम्मेलन के सहयोग से प्रसिद्ध कवि नोरजन सिङ्देन के साथ 18 अक्टूबर 2015 को दार्जीलिंग में 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने अतिथियों का स्वागत किया। अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के संयोजक श्री प्रेम प्रधान ने नोरजन सिङ्देन का परिचय दिया। श्री सिङ्देन ने अपनी लेखन यात्रा की चर्चा की तथा अपनी कविताओं एवं ग़ज़लों का पाठ किया। अकादेमी के नेपाली परामर्श मंडल के सदस्य श्री सी. के. राय ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कथा संधि

जनिल कुमार ब्रह्म

25 सितंबर 2015, कोकराझार

साहित्य अकादेमी द्वारा बोडोलैंड विश्वविद्यालय के बोडो विभाग के सहयोग से विभाग में प्रसिद्ध बोडो कथाकार जनिल कुमार ब्रह्म के साथ 25 सितंबर 2015 को 'कथा संधि' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

डॉ. अनिल कुमार बोरो ने आमंत्रित लेखक का स्वागत करते हुए परिचय दिया। श्री जनिल कुमार ने अपनी दो कहानियों का पाठ किया और अपने लेखन प्रक्रिया को श्रोताओं से साझा किया।

सलोन कार्थक

26 सितंबर 2015, कालेबुङ (पश्चिम बंगाल)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और नेपाली साहित्य अध्ययन समिति, कालेबुङ के संयुक्त तत्त्वावधान में 'कथा संधि' कार्यक्रम के अंतर्गत 26 सितंबर 2015 को वर्शिप सेंटर, कालेबुङ में प्रख्यात नेपाली कथाकार एवं यात्रावृत्तांत लेखक श्री सलोन कार्थक के रचनापाठ का आयोजन किया गया। श्री कार्थक ने 'रेलीको बगरमा कथा टिप्दा' शीर्षक एक कहानी तथा 'कालापानीको पानी कालो थिएन' शीर्षक यात्रावृत्तांत का पाठ किया। उनकी कहानी में नदी-किनारे बसे समुदाय के जनजीवन का प्रभावी चित्रण था। अंडमान निकोबार की यात्रा-संबंधी उनकी रचना के सूक्ष्म विवरणों और विशिष्ट दृष्टि ने भी श्रोताओं को प्रभावित किया।

काव्य गोष्ठी

03 अक्टूबर 2015, वेदारण्यम

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई द्वारा एक काव्यगोष्ठी का आयोजन पेंशनर्स एसोसिएशन ऑफ़िस में 03 अक्टूबर 2015 को किया गया। अकादेमी के साधारण सभा के सदस्य डॉ. आर. कामारासू ने गोष्ठी की अध्यक्षता की। श्री पुयाल कुमार, श्री वैमैनाथन, श्री वेत्तीपेरोली, सुश्री इरा वेत्रिशेलवी, एवं सुश्री पु. इंदिरा गांधी ने अपनी कविताओं का पाठ किया।

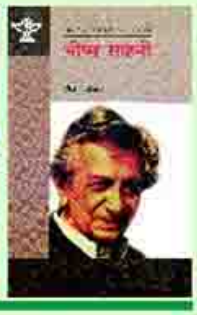

राजभाषा

राजभाषा - ग़ज़ल पाठ

17 सितंबर 2015, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी के प्रधान कार्यालय में राजभाषा सप्ताह के दौरान 'राजभाषा मंच' के अंतर्गत हिंदी ग़ज़ल पाठ का आयोजन अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 17 सितंबर 2015 को किया गया। इस कार्यक्रम में हिंदी के चार प्रतिष्ठित ग़ज़लकारों को ग़ज़ल पाठ के लिए आमंत्रित किया गया था : राजेंद्र तिवारी, आचार्य सारथि 'रूमी', नित्यानंद तुषार और गौतम राजरिशी। युवा गजलकार गौतम राजरिशी ने प्रेम विषयक अनेक ग़ज़लों के साथ अपने फौजी पृठभूमि की अनुभूतियों से पगी ग़ज़लें भी सुनाईं : *"हमारे हौसलों को ठीक से जब जान लेते हैं। अलग ही रास्ते फिर आँधी और तूफान लेते हैं।।"* नित्यानंद तुषार ने अपने पाठ की शुरुआत रूमानी ग़ज़ल से की, लेकिन बाद में समय-समाज के अनुभवों से जुड़ी ग़ज़लें पढ़ीं : *"नयी दुनिया बनानी है, नयी दुनिया बसाएँगे। सितम की उम्र छोटी है, ज़रा उनको बता देना।।"* आचार्य सारथि 'रूमी' ने आध्यात्मिक अनुभूतियों को अभिव्यक्त करनेवाली ग़ज़लें सुनाईं : *"नये आस्माँ की तलाश में सभी मंज़िलों से गुजर गया। तू चिराग़ था मेरी राह का, मुझे ये बता तू किधर गया।।"* राजेंद्र तिवारी की ग़ज़लों में हिंदी ग़ज़ल का आधुनिक और नया तेवर देखने को मिला : *"तुम्हारे सजने-सँवरने के काम आवेंगे। मेरे ख़याल के जेवर सम्भाल के रखना।।"* प्रस्तुत ग़ज़लों को श्रोताओं की पर्याप्त सराहना मिली। कार्यक्रम का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

राजभाषा कार्यान्वयन : चुनौतियाँ एवं समाधान

21 सितंबर 2015, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी द्वारा 21 सितंबर 2015 को अकादेमी सभागार, नई दिल्ली में 'राजभाषा कार्यान्वयन : चुनौतियाँ एवं समाधान' विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी को उद्घाटन सत्र सहित तीन सत्रों में विभाजित किया गया था।

उद्घाटन सत्र की अध्यक्षता अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने की। आरंभिक वक्तव्य संस्कृति मंत्रालय के राजभाषा निदेशक श्री बी.पी. गौड़ ने दिया। मुख्य अतिथि के रूप में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के सचिव श्री गिरीश शंकर उपस्थित थे। आरंभ में डॉ. के. श्रीनिवासराव, सचिव, साहित्य अकादेमी ने स्वागत भाषण किया।

श्री गिरीश शंकर ने अपने भाषण में कहा कि राजभाषा हिंदी साहित्यिक भाषा से अलग है जिस भाषा का प्रयोग राजभाषा के रूप में करते हैं वह तकनीकी भाषा है, न बोलचाल की और न ही साहित्य की।

श्री वी. पी. गौड़ ने अपने आरंभिक भाषण में राजभाषा हिंदी की दशा-दिशा को रेखांकित करते हुए कहा कि हिंदी मानवीय एकता, सांस्कृतिक एकता की भाषा है; लेकिन हमें अनुवाद की भाषा से बचना होगा, सीधी-सरल हिंदी का प्रयोग आवश्यक है।

अपने अध्यक्षीय भाषण में प्रो. तिवारी ने कहा कि हमारे भीतर राष्ट्रीय भावना की कमी है। हमारा देश वैविध्यपूर्ण है, पर भाषा तो एक होनी चाहिए। झंडा एक है तो भाषा भी एक होनी चाहिए। हमें हिंदी लिखने-बोलने का अभ्यास करना चाहिए। लेकिन दुर्भाग्यपूर्ण है कि हम पखवाड़े मनाते हैं और आत्मतोष प्राप्त कर लेते हैं बस।

प्रथम सत्र 'राजभाषा कार्यान्वयन : दशा और दिशा' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता केंद्रीय हिंदी निदेशालय के निदेशक तथा वैज्ञानिक एवं तकनीकी शब्दावली आयोग के अध्यक्ष प्रो. केसरीलाल वर्मा ने की। इस सत्र में भाषा विज्ञानी डॉ. कृष्ण कुमार गोस्वामी, केंद्रीय हिंदी प्रशिक्षण संस्थान के निदेशक डॉ. जयप्रकाश कर्दम तथा ललित कला अकादेमी के संपादक एवं हिंदी आलोचक डॉ. ज्योतिष जोशी ने अपने विचार व्यक्त किए।

द्वितीय सत्र 'राजभाषा कार्यान्वयन : विविध आयाम' विषय पर केंद्रित था, जिसकी अध्यक्षता प्रख्यात हिंदी लेखक तथा केंद्रीय हिंदी निदेशालय के पूर्व निदेशक डॉ. गंगा प्रसाद विमल ने की।

इस सत्र में डॉ. ए. अरविंदाक्षन, डॉ. रीता रानी पालीवाल तथा डॉ. चांदम इंगो सिंह ने क्रमशः दक्षिण भारत, उत्तर भारत तथा पूर्वोत्तर भारत के राज्यों में राजभाषा कार्यान्वयन की स्थिति पर अपने आलेख प्रस्तुत किए।

संगोष्ठी के नराकास (मध्य क्षेत्र) के सभी सदस्य कार्यालयों को आमंत्रित किया गया था। राजभाषा दिवस/सप्ताह के कार्यक्रमों के बावजूद अनेक कार्यालयों ने अपनी सक्रिय भागीदारी दर्ज कराई।

संगोष्ठी का संचालन अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेंद्र कुमार देवेश ने किया।

नारी चेतना

16 अक्टूबर 2015, त्रिवरुर

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई द्वारा रवियम्माल अहमद मेदीन कॉलेज फ़ॉर वीमेन के सहयोग से 16 अक्टूबर 2015 को 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कॉलेज के तमिळ विभाग के अध्यक्ष प्रो. डी. मसिलामनी ने प्रतिभागियों एवं अतिथियों का स्वागत किया तथा प्रतिभागियों का परिचय दिया। अकादेमी के तमिळ परामर्श मंडल के संयोजक प्रो. के. नच्चिमुथु ने अपने अध्यक्षीय वक्तव्य में साहित्य अकादेमी द्वारा महिला लेखन, विशेष रूप से तमिळ में प्रोत्साहित किए जाने की चर्चा की। कॉलेज की प्राचार्य प्रो. ए. वलियम्मइ ने अकादेमी द्वारा कॉलेज में कार्यक्रम के आयोजन पर अकादेमी के प्रति आभार व्यक्त किया। सुश्री लेनमुझी, सुश्री नीता एझिलारसी, एवं सुश्री नगइ कविन ने तमिळ महिला लेखन और उनके संघर्ष पर अपने विचार व्यक्त किए। कॉलेज के सचिव श्री एस. एम. मिस्कन ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

17 अक्टूबर 2015, भुवनेश्वर

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय द्वारा स्टेट आर्काइव ऑडिटोरियम, भुवनेश्वर में 17 अक्टूबर 2015 को 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें कला, संगीत, समाज सेवा, एवं जनसेवाओं से जुड़ी विशेष महिलाओं को आमंत्रित किया गया।

अकादेमी के ओड़िया परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. गौरहरि दास ने आरंभिक वक्तव्य दिया तथा कहा कि हमारे समाज द्वारा महिलाओं के लिए एक निश्चित दिनचर्या बना दिया गया है, लेकिन यह छः महिलाएँ इससे बाहर आ गई हैं।

आरंभिक वक्तव्य देते गौरहरि दास

आमंत्रित प्रतिभागी श्रीमती अरुणा मोहंती, श्रीमती ईरा मोहंती, श्रीमती ममता महापात्रा, श्रीमती संगीता रथ, श्रीमती शशिपर्व विंधनी एवं श्रीमती श्रीमयी श्वेता स्निग्धा मिश्र ने अपने लेखकीय अनुभवों को साझा किया। गुरु गंगाधर प्रधान की शिष्या एवं ओडिसी नृत्य शिक्षिका गुरु अरुणा मोहंती ने कहा कि "मैं भीड़ में नहीं जाती और जीवन में अपनी पहचान पाने के लिए अकेली जाती हूँ, तभी मैं जीवन में कुछ करने योग्य बन सकी हूँ।" गायिका श्रीमती ईरा मोहंती ने कहा, "यद्यपि मैं एक रूढ़िवादी परिवार से हूं, अपने पिता एवं बहन के सहयोग से एक गायिका के रूप में मेरी पहचान बन सकी है।" जुगाश्री जुगानरी की संपादक श्रीमती ममता महापात्रा ने कहा कि पिता के सुझाव, माता के आध्यात्मिक विचार एवं गुरु सदाशिव मिश्र के दर्शन ने मुझे बहुत प्रभावित किया है।

लब्धप्रतिष्ठ मनोवैज्ञानिक डॉ. संगीता रथ ने कहा कि मेरे पिता के लिए मैं अपने जीवन में सफल हूँ। उन्होंने आगे कहा कि बचपन में मुझे अपने भाइयों के बीच हीन भावना थी। राज्य सूचना आयुक्त श्रीमती शशिपर्व बंधिनी ने बाल विवाह के विरोध करने के अपने अनुभवों को साझा किया। श्रीमती बंधिनी ने कहा कि उन्होंने सदैव वर्तमान को महत्त्व दिया है। महिला विकास संबया निगम की अध्यक्ष श्रीमती श्वेता स्निग्धा मिश्र के प्रेरणा स्रोत राजनीति के क्षेत्र में मुख्यमंत्री नवीन पटनायक, अभिनय के क्षेत्र में माधुरी दीक्षित हैं।

अकादेमी के कार्यक्रम अधिकारी डॉ. मिहिर कुमार साहू ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में शहर के लेखक, कवि, बुद्धिजीवी एवं पत्रकार भारी संख्या में मौजूद थे।

23 अक्टूबर 2015, चेन्नई

अकादेमी के उपक्षेत्रीय कार्यालय, चेन्नई द्वारा प्रसिद्ध तमिळ आलोचक श्री वेंकट स्वामीनाथन को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए एक शोक सभा का आयोजन 23 अक्टूबर 2015 को किया गया। तथा मृत आत्मा के सम्मान में एक मिनट का मौन रखकर शांति की प्रार्थना की गई।

मेरे झरोखे से

सचिन दास

24 सितंबर 2015, कोलकाता

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन 24 सितंबर 2015 को अकादेमी के सभागार में किया गया, जिसमें प्रसिद्ध कथाकार सचिन दास को लब्धप्रतिष्ठ कथाकार प्रफुल्ल रे के जीवन-लेखन पर बात करने के लिए आमंत्रित किया गया था।

अकादेमी के प्रभारी श्री गौतम पाल ने अतिथियों का स्वागत करते हुए श्री सचिन दास का परिचय दिया। श्री दास का जन्म 1950 में कोलकाता में हुआ। पश्चिम बंगाल सरकार में सांख्यिकी अधिकारी के रूप में कार्य करते हुए श्री दास ने एक कथाकार के रूप में स्वयं को स्थापित किया। इनकी प्रकाशित पुस्तकों में *युद्ध संकट, अरण्य परब* (उपन्यास), *कोलकतार दिके रास्ता* (बच्चों की कहानियाँ), *अविष्कारेर गल्पो* (कहानियाँ) एवं *गोयंदा सुग्रीव* (बाल उपन्यास) महत्त्वपूर्ण पुस्तकें हैं।

श्री सचिन दास ने श्री प्रफुल्ल रे के जीवन एवं कृति पर विस्तार से बात करते हुए कहा कि श्री राय विभाजन के समय पाकिस्तान से साधनहीन कोलकता आए थे। उन्होंने जीवनयापन के लिए बहुत ही संघर्ष किए। आप नागालैंड के जनजातियों एवं बिहार के दलित समुदाय के साथ रहे। आपके कथाओं के पात्र समाज के हर वर्ग के लोग हैं। आपकी 150 से अधिक पुस्तकें प्रकाशित हैं, जिनमें उपन्यास एवं कहानियाँ शामिल हैं। श्री राय की कई कहानियों पर फिल्में भी बनी हैं जिनमें से कई को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त हो चुके हैं। आपको साहित्य अकादेमी सहित बंकिम पुरस्कार, भुवालकर पुरस्कार, मतिलाल पुरस्कार से सम्मानित किया जा चुका है।

अकादेमी के बाङ्ला परामर्श मंडल के संयोजक डॉ. रामकुमार मुखोपाध्याय भी उपस्थित थे। श्री गौतम पाल ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

'मेरे झरोखे कार्यक्रम' में सचिन दास

युवराज काफ्ले

26 सितंबर 2015, कालेबुङ (पश्चिम बंगाल)

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली और नेपाली साहित्य अध्ययन समिति, कालेबुङ के संयुक्त तत्त्वावधान में 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम शृंखला के अंतर्गत एक कार्यक्रम का आयोजन 26 सितंबर 2015 को वर्शिप सेंटर, कालेबुङ में किया गया। इस कार्यक्रम में प्रतिष्ठित नेपाली आलोचक श्री युवराज काफ्ले ने प्रख्यात नेपाली कवि दान खालिङ के व्यक्तित्व और कृतित्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने सरल, सहज व्यक्तित्व के धनी दान खालिङ की कविताओं के प्रवृत्तिगत अध्ययन में हम प्रगति, प्रकृतिवादी पक्ष उनकी कविताओं में पाते हैं। जीवन जीने के क्रम में उन्होंने अनुभूति एवं चिंतन की जो पूँजी इकट्ठा की है, वही उनकी कविता में प्रमुख विषय और भाव बनकर उभरे हैं। इसलिए वे एक जीवनवादी कवि हैं।

अनीस अशफ़ाक़

13 अक्टूबर 2015, लखनऊ

साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा 13 अक्टूबर 2015 को मौलाना आज़ाद नेशनल यूनिवर्सिटी के लखनऊ कैंपस में मेरे झरोखे से कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें उर्दू के लब्धप्रतिष्ठ विद्वान एवं आलोचक प्रो. शबीहुल हसन पर व्याख्यान देने के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रो. अनीस अशफ़ाक़ को आमंत्रित किया गया। प्रो. अनीस अशफ़ाक़ ने कहा कि शबीहुल हसन

व्याख्यान देते अनीस अशफ़ाक़

का व्यक्तित्व बहुमुखी प्रतिभा का था। उनकी शोहरत उनकी पुस्तक नफ़सियाती तन्क़ीद (मनोवैज्ञानिक आलोचना) से है। वे एक बहुत ही अच्छे इंसान तथा वरिष्ठ गुरु थे। अकादेमी की उर्दू परामर्श मंडल की सदस्य डॉ. वसीम बेगम ने अतिथियों का स्वागत किया। कार्यक्रम में शहर के लेखक, कवि, पत्रकार, छात्र एवं मीडिया के लोग उपस्थित थे।

अशोक शहाणे

16 अक्टूबर 2015, मुंबई

साहित्य अकादेमी के क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा लब्धप्रतिष्ठ मराठी आलोचक, संपादक, मुद्रक श्री

अशोक सहाणे

अशोक शहाणे के साथ अकादेमी के सभागार में 16 अक्टूबर 2015 को 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। श्री शहाणे ने प्रसिद्ध मराठी एवं अंग्रेज़ी कवि, अनुवादक अरुण कोलहटकर के लेखन एवं व्यक्तित्व पर व्याख्यान दिया। इसे संयोग ही कहा जाएगा कि श्री शहाणे ने अपनी प्रकाशन संस्था प्रास प्रकाशन से कोलहटकर की समस्त मराठी एवं अंग्रेज़ी काव्य संग्रहों का प्रकाशन किया है। श्री शहाणे ने कहा कि उनकी मुलाक़ात कोलहटकर से 1950-1960 के मध्य हुई थी एवं कोलटकर 60 वर्षों से अधिक समय से कविताएँ लिख रहे थे। कोलहटकर प्रायः कहा करते थे कि वे व्यावसायिक रूप से एक कवि एवं डिज़ाइनर हैं। उन्होंने कहा कि श्री कोलटकर एक कविता लगभग 10 बार लिखते थे, जब तक कि कविता उनकी इच्छानुसार नहीं हो जाती थी। इसी आधार पर ऑक्सफ़ोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस द्वारा प्रकाशित उनके काव्य संग्रह को उन्होंने निरस्त कर दिया था।

अपनी व्याख्यान के बाद श्री शहाणे ने श्रोताओं के पूछे गए प्रश्नों का उत्तर दिया।

प्रकाश पर्णिकर

17 अक्टूबर 2015, मुंबई

क्षेत्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन 17 अक्टूबर 2015 को कार्यालय के सभागार में किया गया। कार्यक्रम के लिए कोंकणी भाषा के प्रसिद्ध लेखक, आलोचक श्री प्रकाश पर्णिकर को कोंकणी के प्रसिद्ध लेखक जे. वी. मोरैस के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर व्याख्यान देने के लिए आमंत्रित किया गया। क्षेत्रीय सचिव कृष्णा किंबहुने ने आमंत्रित लेखक एवं अतिथियों का स्वागत किया। श्री पर्णिकर ने गोवा के बजाय मुंबई में इस कार्यक्रम के आयोजन के लिए अकादेमी का आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि जे. बी. मोरैस ने लगभग साहित्य की सभी विधाओं में रचना की। मोरैस का जन्म 1933 में हुआ था, यह वह समय था जब साहित्य के लिए उचित वातावरण नहीं था।

प्रकाश पर्णिकर

मोरैस का साहित्य लेखन कोंकणी के युवा पीढ़ी के लिए एक मार्ग प्रस्तुत करता है। उनकी कविताएँ आमतौर पर महिलाओं पर केंद्रित तथा समयानुरूप वे सामाजिक रूप से प्रेरित हैं। उन्होंने आगे कहा कि मोरैस स्वाभाविक रूप से कवि थे। क्षेत्रीय सचिव के धन्यवाद ज्ञापन से कार्यक्रम समाप्त हुआ।

फ़ारूक़ नाज़की एवं सैयद इफ़्तिख़ार अहमद

28 अक्टूबर 2015, श्रीनगर

साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली द्वारा 28 अक्टूबर 2015 को एकेडमी ऑफ़ आर्ट कल्चर एंड लैंग्वेजेज़, जम्मू व कश्मीर के सहयोग से एकेडमी ऑफ़ आर्ट के सेमिनार हॉल में फ़ारूक़ नाज़की तथा सैयद इफ़्तिख़ार अहमद के साथ 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

फ़ारूक़ नाज़की

फ़ारूक़ नाज़की ने लब्धप्रतिष्ठ कश्मीरी लेखक फ़ाज़िल कश्मीरी के व्यक्तित्व एवं रचनाओं पर व्याख्यान दिए जबकि सैयद इफ़्तिख़ार अहमद ने कश्मीरी लेखक गुलाम रसूल नाज़की के व्यक्तित्व एवं रचनाओं पर व्याख्यान दिए।

अकादेमी के कश्मीरी परामर्श मंडल के संयोजक प्रोफ़ेसर मुहम्मद ज़मां आज़ुर्दा ने स्वागत करते हुए अकादेमी की गतिविधियों से अवगत कराया। कार्यक्रम में लेखक, कवि, पत्रकार तथा छात्र भारी संख्या में मौजूद थे।

सैयद इफ़्तिख़ार अहमद

सितंबर-अक्टूबर 2015 के आयोजन

1-2 सितंबर 2015	नागपुर	मराठी विभाग, राष्ट्रशांत तुकडोजी महाराज नागपुर यूनिवर्सिटी और गिरीश गाँधी प्रतिष्ठान नागपुर के संयुक्त तत्त्वावधान में 'मराठी उपन्यास और देशीवाद' विषय पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन
2 सितंबर 2015	दिल्ली	डॉ. प्रतिभा राय, ओड़िया लेखक के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम
3 सितंबर 2015	ठाणे, महाराष्ट्र	सेंट गॉसालो ग्रेसिया कॉलेज ऑफ़ आर्ट्स एंड कॉमर्स, वसई के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
3-4 सितंबर 2015	मल्लापुरम, केरल	श्री शंकराचार्य यूनिवर्सिटी ऑफ़ संस्कृत रीजनल सेंटर, तिरुर के सहयोग से 'उरुव जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी' का आयोजन
4 सितंबर 2015	डिब्रूगढ़, असम	'अनुवाद पुरस्कार अर्पण समारोह' का आयोजन
4 सितंबर 2015	दिल्ली	उर्दू शायर आलम खुर्शीद के साथ कवि संधि कार्यक्रम
4 सितंबर 2015	मयिलादुथुरै, तमिलनाडु	ए.वी.सी. कॉलेज मयिलादुथुरै के सहयोग से 'कवि सम्मेलन' का आयोजन
5 सितंबर 2015	डिब्रूगढ़, असम	अनुवादक सम्मिलन का आयोजन जिसमें अनुवादकों ने अपने अनुभव साझा किए
5-6 सितंबर 2015	डिब्रूगढ़, असम	विभिन्न भारतीय भाषाओं के लेखकों के साथ 'अभिव्यक्ति' कार्यक्रम का आयोजन
5 सितंबर 2015	मुंबई	मुंबई विश्वविद्यालय के कन्नड विभाग के सहयोग से 'रंग संवाद' विषय पर साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन
5 सितंबर 2015	सोलापुर, महाराष्ट्र	श्रीमान भाऊसाहेब जडवुके महाविद्यालय, बर्शी के सहयोग से 'साहित्य मंच कार्यक्रम' का आयोजन
6 सितंबर 2015	राजामुंद्री, आंध्र प्रदेश	साहिति गौतमी, राजमुंद्री के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
7 सितंबर 2015	तिरुवनंतपुरम	तिरुअनंतपुरम तमिल संगम, त्रिवेंद्रम के सहयोग से 'तमिळ और मलयाळम् साहित्य में रुझान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
7 सितंबर 2015	दिल्ली	प्रसिद्ध हिंदी लेखिका प्रो. पुष्पिता अवस्थी तथा जानी-मानी पंजाबी लेखिका अमरजीत घुम्मन के साथ 'अस्मिता' कार्यक्रम का आयोजन
8 सितंबर 2015	दिल्ली	दिल्ली में जापानी-हिंदी के जाने माने लेखक प्रो. तोमियो मिज़ोकामी के साथ 'हिंदी शिक्षण में नाटक प्रस्तुति की शैक्षिक उपयोगिता' विषय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
9 सितंबर 2015	बेल्लारी, कर्नाटक	विजयनगर श्री कृष्णदेवार्य यूनिवर्सिटी, बेल्लारी के सहयोग से 'उत्तर कर्नाटक के साहित्य में पिछड़े तत्त्व' विषयक एक परिसंवाद का आयोजन
9 सितंबर 2015	नासिक	कुसुमाग्रज प्रतिष्ठान, नासिक के सहयोग से 'अविष्कार' कार्यक्रम का आयोजन
9-10 सितंबर 2015	श्रीनगर	मर्कज़े नूर, सेंटर फ़ॉर शैखुल आलम स्टडीज़, कश्मीर विश्वविद्यालय, श्रीनगर में बहुभाषिक कवि सम्मिलन का आयोजन
10 सितंबर 2015	कोलकाता	श्री आलोक रॉय के साथ 'आलोचक के साथ एक शाम' कार्यक्रम का आयोजन
11 सितंबर 2015	ठाणे, महाराष्ट्र	मराठी के प्रसिद्ध लेखकों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम
12 सितंबर 2015	कालीकट, केरल	अन्वेषी महिला काउंसलिंग सेंटर की पत्रिका संगदिथा के सहयोग से मलयाळम् कविता में पाठ एवं प्रतिबिंब विषयक परिसंवाद का आयोजन
12 सितंबर 2015	नेल्लोर, आंध्र प्रदेश	पिनाकिनी यूथ वेलफेयर एसोसिएशन, रथनम्मा चेरिटेबल ट्रस्ट, नेल्लोर के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
13-14 सितंबर 2015	इलाहाबाद	मिथिला सांस्कृतिक संगम, इलाहाबाद के सहयोग से 'मैथिली साहित्य एवं पुनर्जागरण' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
13 सितंबर 2015	इलाहाबाद	मिथिला सांस्कृतिक संगम, इलाहाबाद के सहयोग से प्रसिद्ध मैथिली कवि श्री हरीश चंद्र हरित के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन
14-21 सितंबर 2015	कोलकाता	अकादेमी के मुख्य कार्यालय दिल्ली तथा क्षेत्रीय कार्यालयों कोलकाता, मुंबई तथा बंगलूरु एवं उपकार्यालय चेन्नई में हिंदी सप्ताह का आयोजन
15 सितंबर 2015	श्रिण्गेरी, कर्नाटक	जे.सी.वी.एम. कॉलेज, श्रिण्गेरी के सहयोग से 'साहित्य सौरभ' विषय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन

15 सितंबर 2015	दिल्ली	विश्व हिंदी सम्मेलन में भाग लेने आए फीजी, न्यूज़ीलैंड एवं सुरीनाम के आगंतुक लेखकों का स्थानीय लेखकों के साथ संवाद का आयोजन
16 सितंबर 2015	तिरुप्पुर, तमिलनाडु	तमिळ विभाग, चिक्कन्ना गवर्नमेंट आर्ट्स कॉलेज के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम के अंतर्गत 'आधुनिक तमिळ साहित्य' विषय का आयोजन
17 सितंबर 2015	मलाप्पुरम, केरल	थुचांन एजुथाचन मलयाळम् विश्वविद्यालय, केरल के सहयोग से 'मलयाळम् साहित्य और सिनेमा' विषय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
18-19 सितंबर 2015	उदयपुर	हिंदी विभाग, मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर के सहयोग से 'कथेतर गद्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
19 सितंबर 2015	पालमपुर	'डोगरी साहित्य में चेतना' विषय पर परिसंवाद तथा लब्धप्रतिष्ठ डोगरी कवि श्री पीयुष गुलेरी के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन
19-20 सितंबर 2015	पुदुचेरी	पुडुचेरी इंस्टीट्यूट ऑफ़ लिंग्विस्टिक्स एंड कल्चर के सहयोग से 'उत्तर-पूर्व तथा दक्षिण लेखक सम्मिलन' का आयोजन
19 सितंबर 2015	पुडुचेरी	लोक : अनेक स्वर कार्यक्रम का आयोजन
20 सितंबर 2015	कडापा, कर्नाटक	ललित कला निकेतन, कडापा के सहयोग से 'रायलसीमा ड्रामा' शीर्षक से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
20-21 सितंबर 2015	गंगटोक, सिक्किम	नेपाली साहित्य परिषद्, सिक्किम के सहयोग से 'बहुभाषी लेखक सम्मिलन' कार्यक्रम का आयोजन
21 सितंबर 2015	दिल्ली	'अधिकारिक भाषा का कार्यान्वयन : चुनौतियाँ और समाधान' शीर्षक से संगोष्ठी का आयोजन
22 सितंबर 2015	मंगलोर, कर्नाटक	गोविंददास कॉलेज, सुरतकल, मंगलोर के सहयोग से साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन
22-23 सितंबर 2015	जोधपुर	रम्मत, जोधपुर के सहयोग से 'राजस्थानी मध्यकालीन साहित्य' विषयक संगोष्ठी का आयोजन
24 सितंबर 2015	कोलकाता	लब्धप्रतिष्ठ बाङ्ला लेखक श्री प्रफुल्ल रे के साथ 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन
24 सितंबर 2015	गेज़िंग, सिक्किम	पश्चिम सिक्किम साहित्य प्रकाशन, गेज़िंग के सहयोग से 'नेपाली गीतात्मक काव्य' विषयक परिसंवाद का आयोजन
24 सितंबर 2015	गेज़िंग	पश्चिम सिक्किम साहित्य प्रकाशन, गेज़िंग के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ नेपाली लेखक श्री केदार गुरुङ के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम
24 सितंबर 2015	गेज़िंग	पश्चिम सिक्किम साहित्य प्रकाशन, गेज़िंग के सहयोग से प्रमुख नेपाली रचनाकारों के साथ 'नेपाली रचना पाठ' कार्यक्रम का आयोजन
25 सितंबर 2015	गोलपारा, असम	बोडो साहित्य सभा के सहयोग से दुधोनी कॉलेज, दुधोनी में 'बोडो का कथेतर गद्य : अतीत, वर्तमान एवं भविष्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
25 सितंबर 2015	कोकराझार, असम	प्रसिद्ध बोडो कवि श्री ब्रजेंद्र कुमार ब्रह्म के साथ बोडोलैंड विश्वविद्यालय, कोकराझार, असम में 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन
25 सितंबर 2015	कोकराझार, असम	प्रसिद्ध बोडो लेखक श्री जनिल कुमार ब्रह्म के साथ बोडोलैंड विश्वविद्यालय, कोकराझार, असम में 'कथा संधि' कार्यक्रम का आयोजन
25 सितंबर 2015	त्रिची	विशप हेबर कॉलेज के सहयोग से 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
25 सितंबर 2015	श्रीदुंगरगढ़, राजस्थान	राष्ट्रभाषा हिंदी प्रचार समिति के सहयोग से श्रीदुंगरगढ़, राजस्थान में 'राजस्थानी लोक बल्लद' विषयक परिसंवाद का आयोजन
26 सितंबर 2015	कोकराझार, असम	असमिया विभाग, बोडोलैंड विश्वविद्यालय, कोकराझार के सहयोग से 'समकालीन भारतीय नाटक के संदर्भ में आधुनिक असमिया नाटक' विषयक परिसंवाद का आयोजन
26 सितंबर 2015	चेन्नई	लब्धप्रतिष्ठ तमिळ लेखक श्री सा. कंडासामी के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन
26 सितंबर 2015	बीकानेर, राजस्थान	शब्दश्री साहित्य संस्थान के सहयोग से प्रमुख राजस्थानी लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन
26 सितंबर 2015	कलिमपोंग	नेपाली साहित्य अध्ययन समिति, कलिमपोंग, पश्चिमी बंगाल के सहयोग से 'नेपाली ड्रामा' विषयक परिसंवाद का आयोजन
26 सितंबर 2015	कलिमपोंग	नेपाली साहित्य अध्ययन समिति, कलिमपोंग, पश्चिमी बंगाल के सहयोग से प्रख्यात नेपाली आलोचक

		श्री युवराज काफले के साथ श्री दान कलिंग के जीवन व कृति पर 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम के अंतर्गत व्याख्यान
26 सितंबर 2015	कलिमपोंग	नेपाली साहित्य अध्ययन समिति, कलिमपोंग, पश्चिमी बंगाल के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ नेपाली लेखक श्री सोलोन कार्थक के साथ 'कथा संधि' कार्यक्रम का आयोजन
26-27 सितंबर 2015	इंफ़ाल	कल्चरल फोरम, मणिपुर के सहयोग से 'समकालीन मणिपुरी कविता' विषयक संगोष्ठी का आयोजन
27 सितंबर 2015	चेन्नई	उर्दू लेखकों के साथ 'तमिलनाडु में उर्दू शायरी' विषय पर परिसंवाद तथा काव्य गोष्ठी का आयोजन
27 सितंबर 2015	वरंगल	'सहरिदया' साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थान के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ तेलुगु कथाकार श्री नवीन के साथ 'कथासंधि' कार्यक्रम का आयोजन
27 सितंबर 2015	वरंगल	'सहरिदया' साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संस्थान के सहयोग से 'तेलुगु कथा' विषय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
27 सितंबर 2015	विजयवाड़ा	सहिथि मितरुलु, विजयवाडा के सहयोग से 'तेलुगु कविता के विकास का एक दशक' विषय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
27 सितंबर 2015	बताड, असम	बोडो विभाग, ज्ञानपीठ डिग्री कॉलेज, बताड, असम के सहयोग से 'बोडो कविता में प्राकृतवाद' विषयक से संगोष्ठी का आयोजन
27 सितंबर 2015	इंफाल	इपाथोकोक के सहयोग से 'के. रामकुमार और उनकी साहित्यिक रचनाएँ' शीर्षक से साहित्य मंच कार्यक्रम का आयोजन
27 सितंबर 2015	बीकानेर	मुक्ति संस्था के सहयोग से 'राजस्थानी लघुकथा' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
27 सितंबर 2015	सिलिगुड़ी	नंदी तिवारी स्मृति प्रतिष्ठान के सहयोग से 'स्वतंत्र्योत्तर नेपाली साहित्य का रुझान' विषय पर 'परिसंवाद' का आयोजन
27 सितंबर 2015	सिलिगुड़ी	नंदी तिवारी स्मृति प्रतिष्ठान के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ नेपाली कथाकार श्री समीरन क्षेत्री 'प्रियदर्शी' के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन
27 सितंबर 2015	सिलिगुड़ी	नंदी तिवारी स्मृति प्रतिष्ठान के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ नेपाली कवि श्री विष्णु शर्मा अधिकारी के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन
28 सितंबर 2015	गुवाहाटी	असमिया विभाग, गुवाहाटी विश्वविद्यालय के सहयोग से 'दीनानाथ शर्मा जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी' का आयोजन
28 सितंबर 2015	मुदाबिद्री, कर्नाटक	महावीरा कॉलेज, मुदाबिद्री के सहयोग से 'साहित्य लोक' विषय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
28 सितंबर 2015	इंफाल, मणिपुर	मणिपुरी लिट्रेरी सोसायटी, इंफाल के सहयोग से 'मणिपुरी ड्रामा में जी.सी.तोंगबरा का स्थान' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
28 सितंबर 2015	श्रीनगर	एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के सहयोग से प्रसिद्ध कश्मीरी लेखक डॉ. फ़ारुक़ नाज़की के साथ प्रख्यात कश्मीरी लेखक श्री फ़ाज़िल कश्मीरी पर 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन
28 सितंबर 2015	श्रीनगर	एकेडमी ऑफ़ आर्ट, कल्चर एंड लैंग्वेजेज़ के सहयोग से प्रसिद्ध कश्मीरी लेखक श्री इफ़्तिख़ार अहमद के साथ प्रख्यात कश्मीरी लेखक श्री जी.आर. नाज़की पर 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन
28 सितंबर 2015	पॉडिचेरी	पॉडिचेरी इंस्टीट्यूट ऑफ़ लिंग्विस्टिक्स एंड कल्चर के सहयोग से 'भाषा और साहित्य' विषय पर 'परिसंवाद' का आयोजन
28-29 सितंबर 2015	तिरुपति	अंग्रेज़ी विभाग, एस.वी.यूनिवर्सिटी, तिरुपति के सहयोग से 'भारतीय साहित्य का इतिहास' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
29 सितंबर 2015	दिल्ली	प्रसिद्ध हंगरियन लेखक श्री गेबोर लैंक्ज़करो के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
30 सितंबर 2015	बैंगळूरु	एम. एम. कलबुर्गी की याद में 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
30 सितंबर 2015	कोलकाता	प्रसिद्ध नेपाली कवि श्री जस योंज्जन 'प्यासी' तथा बाङ्ला लेखिका सुश्री सेवन्ती घोष के साथ 'कवि-अनुवादक' कार्यक्रम का आयोजन
30 सितंबर 2015- 1 अक्टूबर 2015	मदुरै, तमिलनाडु	तमिळ विभाग, लेडी डोक कॉलेज के सहयोग से 'तमिल में युवा लेखन' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन

2 अक्टूबर 2015	मुंबई	कन्नड विभाग, मुंबई विश्वविद्यालय के सहयोग से 'साहित्य चिंतन' विषय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
2-6 अक्टूबर 2015	त्रिवेंद्रम	मलयाळम्-राजस्थानी अनुवाद कार्यशाला का आयोजन
3 अक्टूबर 2015	हैदराबाद	लब्धप्रतिष्ठ तेलुगु लेखक डॉ. कपिलावई लिंगामूर्ति के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम
3 अक्टूबर 2015	वेदरनयम, तमिलनाडु	तमिळ लेखकों के साथ 'काव्य गोष्ठी' कार्यक्रम का आयोजन
4 अक्टूबर 2015	हैदराबाद	पल्ल दुर्गेय जन्मशतवार्षिकी 'परिसंवाद' का आयोजन
4 अक्टूबर 2015	हैदराबाद	लब्धप्रतिष्ठ तेलुगु कवि डॉ. एस.वी.सत्यनारायण के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन
6 अक्टूबर 2015	दिल्ली	हिंदी के प्रसिद्ध कवियों के साथ 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
9 अक्टूबर 2015	मोगा, पंजाब	'नवाँ पंजाबी नाविल' विषय पर 'परिसंवाद' का आयोजन
9-10 अक्टूबर 2015	गंगटोक, सिक्किम	'लेखन के परे : लेखक और प्रकाशन का संगम' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
10 अक्टूबर 2015	इंफाल	मणिपुरी साहित्य परिषद्, इंफाल के सहयोग से 'पंडित एन. खेलचंद्र सिंह के जीवन व कृति' विषय पर 'परिसंवाद' का आयोजन
10 अक्टूबर 2015	जम्मू	डोगरी संस्था, जम्मू के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ डागेरी कवि श्री मोहन सिंह के साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन
10-11 अक्टूबर 2015	जम्मू	डोगरी संस्था के सहयोग से 'डोगरी साहित्य में हास्य-व्यंग्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
11 अक्टूबर 2015	गुंतुर, आंध्र प्रदेश	अन्नामैया कलावेदिका, गुंटूर के सहयोग से पानुगंति लक्ष्मी नरसिंह राव के 150 वीं जन्मोत्सव पर 'परिसंवाद' का आयोजन
11 अक्टूबर 2015	मुंबई	'किरत बावानी' विषय पर परिसंवाद का आयोजन
11 अक्टूबर 2015	इंफाल	गुलापी नाता संकीर्तन एकेडमी, इंफाल के सहयोग से 'एल. हेराचंद्र सिंह' विषय पर 'साहित्य मंच' कार्यक्रम का आयोजन
11 अक्टूबर 2015	जम्मू	डोगरी संस्था, जम्मू के सहयोग से श्री ब्रजमोहन और उनके मंडली द्वारा डोगरी के लब्धप्रतिष्ठ कवि दीनुभाई पंत की कविताओं की प्रस्तुति
13 अक्टूबर 2015	लखनऊ	उर्दू के विख्यात लेखक एवं आलोचक प्रो. अनीस अशफ़ाक़ के साथ लब्धप्रतिष्ठ उर्दू लेखक डॉ. सैयद शबीहुल हसन पर 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन
14-18 अक्टूबर 2015	फ्रैंकफर्ट	फ्रैंकफर्ट अंतर्राष्ट्रीय किताब मेले में साहित्य अकादेमी की 2 सदस्यीय प्रतिनिधिमंडल की प्रतिभागिता
16 अक्टूबर 2015	मुंबई	मराठी के लब्धप्रतिष्ठ आलोचक एवं लेखक श्री अशोक शहाणे के साथ मराठी एवं अंग्रेज़ी के विख्यात कवि, अनुवादक स्व. अरुण कोळटकर की जीवन एवं कृति पर 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन
16 अक्टूबर 2015	थिरुवरूर, तमिलनाडु	रवियाम्मल अहमद मैदीन कॉलेज के सहयोग से 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन
16 अक्टूबर 2015	दिल्ली	जवाहर लाल नेहरू विश्वविद्यालय के सहयोग से 'मिथक की रचना' विषय पर कार्यशाला
17 अक्टूबर 2015	मुंबई	कोंकणी के विख्यात लेखक श्री प्रकाश पर्येकार के साथ कोंकणी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक स्व. जे.वी. मोरेस की जीवन एवं कृति पर 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन
17 अक्टूबर 2015	भुवनेश्वर	ओड़िया की विख्यात लेखिकाओं के साथ 'नारी चेतना' कार्यक्रम का आयोजन
17 अक्टूबर 2015	दार्जीलिंग	नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जीलिंग के सहयोग से क. सुकुल प्रधान के साथ 'व्यक्ति एवं कृति' कार्यक्रम का आयोजन
17-18 अक्टूबर 2015	दार्जीलिंग	नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जीलिंग के सहयोग से 'भारतीय नेपाली साहित्य में उत्तर आधुनिकतावाद' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
18 अक्टूबर 2015	अहमदाबाद	गुजरात आर्ट्स एंड साईंस कॉलेज, अहमदाबाद के सहयोग से 'समकालीन काव्य विधाएँ एवं संस्कृत काव्य' विषय पर परिसंवाद कार्यक्रम का आयोजन
18 अक्टूबर 2015	भुवनेश्वर	'फतुरानंद' विषय पर जन्मशतवार्षिकी संगोष्ठी का आयोजन
18 अक्टूबर 2015	भुवनेश्वर	लब्धप्रतिष्ठ ओड़िया लेखक डॉ. रामचंद्र बेहेरा के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन
18 अक्टूबर 2015	कनीगिरी	साहिति सुधा कनीगिरी, ज़िला प्रकासम, आंध्र प्रदेश के सहयोग से 'तेळुगु काव्य गोष्ठी' का आयोजन
18 अक्टूबर 2015	दार्जीलिंग	नेपाली साहित्य सम्मेलन, दार्जीलिंग के सहयोग से नेपाली के लब्धप्रतिष्ठ कवि श्री नोरजन सयांग्देन के

		साथ 'कवि संधि' कार्यक्रम का आयोजन
21 अक्टूबर 2015	दिल्ली	आचार्य खेमचंद्र 'सुमन' जन्मशतवार्षिकी 'परिसंवाद' का आयोजन
24-25 अक्टूबर 2015	चंडीगढ़	पंजाब आर्ट्स काउंसिल के सहयोग से उत्तर-पूर्व एवं उत्तर लेखक सम्मिलन का आयोजन
27 अक्टूबर 2015	जम्मू	दुग्गर मंच जम्मू के सहयोग से डोगरी के लब्धप्रतिष्ठ लेखक प्रो. ललित मगोत्रा के साथ प्रमुख डोगरी लेखक श्री नरेंद्र खजुरिया की जीवन एवं कृति पर 'मेरे झरोखे से' कार्यक्रम का आयोजन
27-28 अक्टूबर 2015	मुंबई	युवा मराठी काव्य समारोह का आयोजन
28 अक्टूबर 2015	जोरहाट, असम	सिन्नमारा कॉलेज, जोरहाट के सहयोग से 'राष्ट्रीय चेतना एवं असमिया साहित्य' विषय पर संगोष्ठी का आयोजन
29-30 अक्टूबर 2015	सागर, म.प्र.	संस्कृत विभाग, डॉ. हरिसिंह गौर विश्वविद्यालय, सागर के सहयोग से 'संस्कृत साहित्य में स्त्री विमर्श' शीर्षक से संगोष्ठी का आयोजन
30-31 अक्टूबर 2015	जगदलपुर, छत्तीसगढ़	बस्तर विश्वविद्यालय, जगदलपुर के सहयोग से 'हल्बी भाषा सम्मेलन' का आयोजन
31 अक्टूबर 2015	मुंबई	महाराष्ट्र साहित्य परिषद, सांगली शाखा के सहयोग से लब्धप्रतिष्ठ मराठी लेखिका सुश्री सानिया के साथ 'लेखक से भेंट' कार्यक्रम का आयोजन
31 अक्टूबर 2015	मुंबई	'उन्नीसवीं शताब्दी में उर्दू समचारपत्र एवं पत्रिकाओं का भाषायी अध्ययन' शीर्षक से 'परिसंवाद' कार्यक्रम का आयोजन

हिंदी सप्ताह

14-21 सितंबर 2014, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी ने अपने प्रधान कार्यालय में 14-21 सितंबर 2014 तक "हिंदी सप्ताह" का सफल आयोजन किया। उद्घाटन समारोह में अकादेमी के विशेष कार्याधिकारी डॉ. देवेन्द्र कुमार देवेश ने कार्यक्रम का संचालन किया। श्री देवेश ने आमंत्रित अतिथि श्री विमलेश कांति वर्मा का संक्षिप्त परिचय प्रस्तुत करते हुए औपचारिक स्वागत के लिए सचिव को आमंत्रित किया। अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि हिंदी भाषा ने हमें आपस में जोड़कर रखा है। लेकिन यह दुर्भाग्य की बात है कि हमें हिंदी भाषा का दिवस मनाना पड़ता है। उन्होंने आह्वान किया कि हमें हिंदी में अधिक से अधिक कार्य करना चाहिए।

मुख्य अतिथि प्रो. विमलेश कांति वर्मा ने कहा कि आज अधिकतर समाचार चैनल हिंदी के हो गए हैं, अंग्रेज़ी के न्यूज़ चैनल ढूँढ़ने पड़ते हैं। हिंदी को देश में लाने वाले और उसे राजभाषा हिंदी बनाने वाले ग़ैर हिन्दी भाषी ही थे। शुद्ध हिंदी, उर्दू भाषा तथा हिन्दुस्तानी यह हिंदी के तीन रूप हैं। कार्यक्रम के अंत में श्री देवेश ने भारत सरकार के गृह मंत्री श्री राजनाथ सिंह का संदेश पढ़कर सुनाया तथा श्रीमती रेणु मोहन भान ने औपचारिक रूप से धन्यवाद ज्ञापन प्रस्तुत किया।

सप्ताह भर के दौरान विभिन्न प्रतियोगिताएँ, कार्यशाला, 'राजभाषा मंच' के अंतर्गत हिंदी ग़ज़ल पाठ, और राजभाषा विषयक संगोष्ठी का आयोजन किया गया। प्रतियोगिताओं के निर्णायक के रूप में सर्वश्री सुरेश ऋतुपर्ण, दिनेश मिश्र, उमाकांत खुबालकर और ओ. पी. झा को आमंत्रित किया गया था। प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को 21 सितंबर 2015 को राजभाषा संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में नकद पुरस्कार और प्रमाणपत्र प्रदान किए गए।

16 सितंबर 2015, चेन्नई

उपक्षेत्रीय कार्यालय चेन्नई द्वारा 16 सितंबर 2015 को हिंदी दिवस कार्यक्रम का आयोजन किया गया। इस अवसर पर श्री शॉरि राजन को आमंत्रित किया गया था। श्री के.पी. राधाकृष्णन ने अतिथि का स्वागत करते हुए हिंदी के विकास के लिए अकादेमी द्वारा किए जा रहे प्रयासों की संक्षेप में चर्चा की। श्री शॉरि राजन ने हिंदी की महत्ता के बारे में बात करते हुए हर नागरिक को हिंदी सीखने पर ज़ोर दिया। इस अवसर पर कार्यालय के सहकर्मियों के बीच विभिन्न प्रतियोगिताओं का भी आयोजन किया गया तथा श्री राजन द्वारा पारितोषिक वितरण किया गया।

17 सितंबर 2015, कोलकाता

क्षेत्रीय कार्यालय कोलकाता द्वारा 17 सितंबर 2015 को हिंदी सप्ताह का आयोजन किया गया, जिसमें अकादेमी द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में अकादेमी के सहयोगियों ने भाग लिया। इस अवसर पर श्रीमती रजनी पोद्दार एवं श्री उज्ज्वल सिंह को आमंत्रित किया गया। इन्होंने हिंदी की महत्ता पर प्रकाश डालते हुए हिंदी में काम करने पर बल दिया, साथ ही यह भी कहा कि राजभाषा हिंदी ही समस्त भारत को जोड़ती है।

नये प्रकाशन

असमिया

मनोज दासंका कथा अरु कहानी
(अ.पु. ओडिया कहानी संग्रह)
ले. मनोज दास, अनु. प्रतिभा गोस्वामी
पृ. 280, रु. 180/-
ISBN : 978-81-260-4887-8

संगजुतिबाद उत्तर संगजुतिबाद अरु प्राच्यकाव्यतत्त्व (अ.पु. उर्दू आलोचना, साख़्तियात, पस-साख़्तियात और मश्रिक़ी शेरियात)
ले. गोपीचन्द नारंग,
अनु. मामोनी गोगोई बोरगोहैन
पृ. 464, रु. 270/-
ISBN : 978-81-260-4808-3

संतोंबी (अ.पु. मणिपुरी उपन्यास)
ले. महाराज कुमारी विनोदिनी देवी,
अनु. इंद्रमोनी राजकुमार, पृ. 144, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4904-2 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला

अर्धनारीश्वर (अ.पु. हिंदी उपन्यास)
ले. विष्णु प्रभाकर,
अनु. कनिका वसु एवं पुष्पा मिश्र
पृ. 400, रु. 190/-
ISBN : 978-81-260-4891-5 (पुनर्मुद्रण)

अमृन्तर संतम्
ले. गोपीनाथ मोहंती,
अनु. सुधाकांत राय चौधुरी एवं
ज्योतिरिंद्रमोहन जोरदार
पृ. 576, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-2649-4 (पुनर्मुद्रण)

अरई चाल (अ.पु. हिंदी उपन्यास ढाई घर)
गिरिराज किशोर, अनु. संध्या चौधुरी
पृ. 416, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4900-4 (पुनर्मुद्रण)

आशापूर्णा देवी (विनिबंध)
मानषी दास गुप्ताए पृ. 72, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2275-5 (पुनर्मुद्रण)

बाङ्ला थियेटरेर गान
सं. एवं स. देवाजीत बंधोपाध्याय
पृ. 160, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-1766-9 (पुनर्मुद्रण)

भिटे (अ.पु. ओडिया उपन्यास)
नित्यानंद महापात्र, अनु. सुखेंदु मोहन दास
पृ. 316, रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-4890-8 (पुनर्मुद्रण)

दलित
सं. एवं सं. देवेस रे,
अनु. विभिन्न अनुवादकों द्वारा
पृ. 308, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-2010-2 (पुनर्मुद्रण)

धुरजतिप्रसाद मुखोपाध्याय (विनिबंध)
रुस्ती सेन, पृ. 152, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3019-4 (पुनर्मुद्रण)

ईपृथ्वी पगलगरड (अ.पु. मैथिली उपन्यास)
सुधांशु शेखर चौधुरी, अनु. विनॉय कुमार माहता
पृ. 200, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-4889-2 (पुनर्मुद्रण)

जिप्सी नादिर धारा (अ.पु. हिन्दी उपन्यास)
अजीत कौर, अनु. जया मित्रा
पृ. 160, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-2412-4 (पुनर्मुद्रण)

मतिर तेन
ले. शिवराम कारंत, अनु. विष्णुपदा भट्टाचार्य
पृ. 384, रु. 180/-

ISBN : 978-81-260-1106-3 (पुनर्मुद्रण)
मिथ्य सत्य (अ.पु. हिन्दी उपन्यास)
यशपाल, अनु. कलिपदा दास
पृ. 488, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-1116-2 (पुनर्मुद्रण)

ओथेलो
विलियम शेक्सपीयर,
अनु. सुनील कुमार चट्टोपाध्याय
पृ. 136, रु. 80/-
ISBN : 978-81-260-1511-5 (पुनर्मुद्रण)

राजाराम मोहन राय (विनिबंध)
ले. सौमेन्द्रनाथ टैगोर, अनु. सौमेंद्रनाथ बोस
पृ. 68, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2410-0 (पुनर्मुद्रण)

रामकृष्ण परमहंस (विनिबंध)
स्वामी लोकेश्वरानंद, पृ. 104, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2408-7 (पुनर्मुद्रण)

तमिळ गल्प संचयन
सं. ए. चिदंबसाथ चेतियार
अनु. विष्णुपद भट्टाचार्य
पृ. 294, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-2197-0 (पुनर्मुद्रण)

उत्तर बाङ्लार लोक संगीत
(उत्तर बंगाल के लोकगीतों का संग्रह)
सं एवं सं. वेणु दत्त रॉय
पृ. 139, रु. 90/-
ISBN : 978-81-260-4895-3 (पुनर्मुद्रण)

वैष्णव पदावली
स. एवं सं. सुकुमार सेन, पृ. 128, रु. 70/-
ISBN : 978-81-260-2509-1 (पुनर्मुद्रण)

योगेशचंद्रेर विद्यानिधि
अरविंदो चट्टोपाध्याय
पृ. 136, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4894-6

बोडो

बुवलिखोंव फुथुआ अंग
(अ.पु. तेलुगु कविता संग्रह)
ले. एन. गोपी, अनु. उत्तमचंद्र ब्रहम
पृ. 104, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-4888-5

अंग्रेज़ी

एंथोलोजी ऑफ कन्नड ग़ज़ल्स
सं. एवं सं. चिदानंद साली, पृ. 214, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-4676-7

भरत द नाट्य शास्त्र
ले. कपिला वात्स्यायन, पृ. 218, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-1808-9 (पुनर्मुद्रण)

फेसिनेटिंग स्टोरीज़ (बाल साहित्य संचयन)
ले. विभूतीभूषण बंद्योपाध्याय, अनु. अशोक देव
पृ. 187, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-1482-8 (पुनर्मुद्रण)

फ़्लाइंग डॉल (तमिळ का बाल क्लासिक)
ले. कालवी गोपालकृष्णन्, पृ. 65, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-1297-8 (पुनर्मुद्रण)

महर्षि देवेन्द्रनाथ टैगोर (विनिबंध)
नारायण चौधरी
पृ. 76, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3010-1 (पुनर्मुद्रण)

नेशनल बिब्लोग्राफ़ी ऑफ़ इंडियन लिट्रेचर
(द्वितीय सीरीज़ - तेलुगु)
सं. एम. शंकरा रेड्डी, पृ. 805, रु. 600/-
ISBN : 978-81-260-4954-7

रूपनाथ ब्रह्म (विनिबंध)
सुबगंचा मशाहरी, पृ. 64, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2803-0 (पुनर्मुद्रण)

सरला देवी (विनिबंध)
सचिदानंद मोहंती, पृ. 64, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3199-3 (पुनर्मुद्रण)

टेल्स एवं ट्युन्स ऑफ त्रिपुरा हिल्स
सं एवं स. चंद्रकांत मुरा सिंह
अनु. विभिन्न अनुवादकों द्वारा
पृ. 172, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4897-7 (पुनर्मुद्रण)

विद्युत प्रभा देवी (विनिबंध)
विजय कुमार नंद
पृ. 80, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2920-4 (पुनर्मुद्रण)

हिंदी

अमृता प्रीतम
(आधुनिक पंजाबी लेखिका पर विनिबंध)
ले. सुतिन्दर सिंह नूर, पृ. 103, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-3170-2 (पुनर्मुद्रण)

बाबरनामा
अनु. युगजीत नवलपुरी
पृ. 468, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-0014-7 (पुनर्मुद्रण)

बीसवीं सदी का हिंदी महिला लेखन
(महिला कवयित्रियों का कविता संग्रह) (खंड 1)
सं. सुमन राजे, पृ. 180, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-2397-4 (पुनर्मुद्रण)

बीसवीं सदी का महिला लेखन (भाग-1)
सं. सुमन राजे
पृ. 180, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-2397-4 (पुनर्मुद्रण)

भारतेन्दु हरीशचन्द्र (हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. मदन गोपाल, अनु. दामोदर अग्रवाल
पृ. 66, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2603-6 (पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ (भाग-1)
सं. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 96, रु.40/-
ISBN : 978-81-260-2676-0 (पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ (भाग-2)
सं. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 96, रु.40/-
ISBN : 978-81-260-2677-0 (पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ (भाग-3)
सं. हरिकृष्ण देवसरे, पृ. 90, रु. 40/-
ISBN : 978-81-260-2678-4 (पुनर्मुद्रण)

भारतीय बाल कहानियाँ (भाग-4)
सं. हरिकृष्ण देवसरे
पृ. 108, रु. 40/-
ISBN : 978-81-260-2740-8 (पुनर्मुद्रण)

घनानंद (मध्यकालीन हिंदी कवि पर विनिबंध)
ले. लल्लन राय, पृ. 108, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0006-6 (पुनर्मुद्रण)

गोरा (बाङ्ला क्लासिक)
ले. रवीन्द्रनाथ टैगोर, अनु. एस.एच. वात्स्यायन
पृ. 404, रु. 175/-
ISBN : 81-7201-627-1 (पुनर्मुद्रण)

गुंतेर की सर्दियाँ (स्पानी उपन्यास)
ले. ख़्वान मान्वेल मार्कोस, अनु. प्रभाती नौटियाल
पृ. 225, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-3233-8 (पुनर्मुद्रण)

गुरुगोविन्द सिंह (पंजाबी संत कवि पर विनिबंध)
ले. महीप सिंह, पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0330-8 (पुनर्मुद्रण)

ग्यारह तुर्की कहानियाँ
अनु. मस्तराम कपूर, पृ. 156, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-2433-9 (पुनर्मुद्रण)

हब्बा ख़ातून
(मध्यकालीन कश्मीरी कवयित्री पर विनिबंध)
ले. श्यामलाल साधू, अनु. एस.के. रैना
पृ. 64, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2731-6 (पुनर्मुद्रण)

हरीश भदानी (विनिबंध)
अरुण माहेश्वरी, पृ. 116, रु.50/-
ISBN : 978-81-260-4769-7

हवेली के अंदर (अ.पु. अंग्रेज़ी उपन्यास)
ले. रमा मेहता, अनु. कांति सिंह
पृ. 147, रु. 75 /-
ISBN : 978-81-7201-805-3 (पुनर्मुद्रण)

जयशंकर प्रसाद (हिंदी कवि पर विनिबंध)
ले. रमेशचंद्र शाह
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0422-3 (पुनर्मुद्रण)

जायसी (मध्यकालीन संत कवि पर विनिबंध)
ले. परमानंद श्रीवास्तव
पृ. 68, रु. 50/-
ISBN : 978-81-7201-4-1-5 (पुनर्मुद्रण)

किशोर कहानियाँ (बाङ्ला बाल कहानी संग्रह)
ले. विभूतिभूषण बंद्योपाध्याय, अनु. अमर गोस्वामी
पृ. 156, रु. 75/-
ISBN : 978-81-260-0747-9 (पुनर्मुद्रण)

महादेवी रचना संचयन
सं. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
पृ. 296, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-0437-1

मुक्तिबोध (हिंदी कवि पर विनिबंध)
ले. नंदकिशोर नवल
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0018-X (पुनर्मुद्रण)

पर्वा (आधुनिक कन्नड क्लासिक)
ले. एस.एल. भैरप्पा, अनु. के. राघवेंद्रराव
पृ. 950, रु. 450/-
ISBN : 978-81-7201-659-X (पुनर्मुद्रण)

पर्यवेक्षण (अ.पु. नेपाली लेख संग्रह)
ले. जीवन नामदुंग,
अनु. खड़गराज गिरि एवं भाविलाल लामिछाने
पृ. 344, रु.250/-
ISBN : 978-81-260-4765-9

प्रेमचंद चुनिंदा कहानियाँ (भाग-1)
(बाल कहानियाँ)
सं. अमृत राय
पृ. 96, रु. 30/-
ISBN : 978-81-7201-975-0 (पुनर्मुद्रण)

प्रेमचंद चुनिंदा कहानियाँ (भाग-2)
(बाल कहानियाँ)
सं. अमृत राय
पृ. 98, रु. 30/-
ISBN : 978-81-7201-993-9 (पुनर्मुद्रण)

रैदास (मध्यकालीन संत कवि पर विनिबंध)
ले. धर्मपाल सैनी
पृ. 64, रु. 50/-
ISBN : 978-81-7201-631-X

रहीम (मध्यकालीन हिंदी कवि पर विनिबंध)
ले. कमल किशोर गोयनका
पृ. 108, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0670-6 (पुनर्मुद्रण)

राही मासूम रज़ा (उर्दू लेखक पर विनिबंध)
ले. कुंवर पाल सिंह
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2056-3 (पुनर्मुद्रण)

रामधारी सिंह दिनकर (हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. विजयेन्द्र नारायण सिंह
पृ. 112, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2142-X (पुनर्मुद्रण)

रामवृक्ष बेनीपुरी (हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. रामवचन राय
पृ. 66, रु. 50/-
ISBN : 978-81-7201-974-2 (पुनर्मुद्रण)

रसखान (मध्यकालीन हिंदी कवि पर विनिबंध)
ले. श्याम सुंदर व्यास
पृ. 60, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0518-1 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ ठाकुर (बाङ्ला कवि पर विनिबंध)
ले. सिसिर कुमार घोष
पृ. 106, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0133-X (पुनर्मुद्रण)

रुको ओ पृथ्वी (स्पानी कविताएँ)
ले. पाब्लो नेरुदा, अनु. प्रभाती नौटियाल
पृ. 189, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-0152-1 (पुनर्मुद्रण)

सआदत हसन मंटो (उर्दू लेखक पर विनिबंध)
ले. वारिस अलवी, अनु. जानकी प्रसाद शर्मा
पृ. 96, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0134-8 (पुनर्मुद्रण)

स्वामी दयानंद सरस्वती (समाज सुधारक एवं आर्यसमाज के प्रवर्तक पर विनिबंध)
ले. विष्णु प्रभाकर
पृ. 104, रु. 50/-
ISBN : 978-81-7201-399-X (पुनर्मुद्रण)

वाल्मीकि (संस्कृत कवि पर विनिबंध)
ले. आई. पांडुरंगा राव
पृ. 108, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-0171-2 (पुनर्मुद्रण)

वीर विनोद
(स्वामी गणेशपुरी का राजस्थानी महाभारत)
सं. चंद्रप्रकाश देवल
पृ. 523, रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-2443-8 (पुनर्मुद्रण)

यशपाल (हिंदी लेखक पर विनिबंध)
ले. कमला प्रसाद
पृ. 70, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-2726-5 (पुनर्मुद्रण)

कश्मीरी

अब्दुल अहद नादिम
(कश्मीरी कवि पर विनिबंध)
ले. तलहा जहाँगीर रहमानी
पृ. 128, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4860-1

अब्दुल ग़नी ठोकार 'मशहूर'
(कश्मीरी कवि पर विनिबंध)
ले. गुलाम नबी आतश
पृ. 95, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4865-6

बी ए दिम ना वक़्तास थमी गत्व ना
(अ.पु. तेलुगु कविता)
ले. एन. गोपी
अनु. रंजूस तिलगामी
पृ. 124, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-4864-9

गुलाम रसूल निशात किश्तवारी
(कश्मीरी कवि पर विनिबंध)
ले. वली मुहम्मद असीर किश्तवारी
पृ. 140, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4863-2

मणिपुरी

गोरा (बाङ्ला क्लासिक)
रवींद्रनाथ टैगोर
अनु. एन. गुंजमोहन सिंह
पृ. 420, रु. 290/-
ISBN : 978-81-260-1119-3 (पुनर्मुद्रण)

सांबा (अ. पु. बाङ्ला उपन्यास)
कलकुत, अनु. टी. थोयबी देवी
पृ. 120, रु. 120/-
ISBN : 978-81-260-0471-3 (पुनर्मुद्रण)

मराठी

गजानन त्रिम्बक मदखोलकर
(मराठी लेखक पर विनिबंध)
ले. उषा माधव देशमुख
पृ. 100, रु. 50/-
ISBN : 81-7201-382-5 (पुनर्मुद्रण)

हज़ारी प्रसाद द्विवेदी (विनिबंध)
ले. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी
अनु. सुकन्या अगाशे
पृ. 88, रु. 50/-
ISBN : 81-260-1573-X (पुनर्मुद्रण)

मराठी दलित कविता
सं. बी. रंगा राव
पृ. 164, रु. 125/-
ISBN : 978-81-260-2020-2 (पुनर्मुद्रण)

नारायण सीताराम फड़के
ले. एवं अनु. आशा सावदेकर
पृ. 108, रु. 50/-
ISBN : 81-7201-720-0 (पुनर्मुद्रण)

रवींद्रनाथ ठाकुरांची चार नाटक
(चित्र, मालिनी, सन्यासी एवं शरदोत्सव)
अनु. छाया महाजन
पृ. 96, रु. 100/-
ISBN : 978-81-260-4908-0

ओड़िया

जगदीश चयनिका
सं. एवं स. सरोजिनी साहू
पृ. 256, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4893-9

पाकिस्तानी कहानी माला
सं. एवं स. इंतज़ार हुसैन एवं
आसिफ़ फ़रुखी
अनु. आशीष कुमार रे
पृ. 320, रु. 240/-
ISBN : 978-81-260-4903-5

स्वामी (अ. पु. मराठी उपन्यास)
रणजीत देसाई,
अनु. बासुदेव श्रीराम जोगळेकर
पृ. 416, रु. 240/-
ISBN : 978-81-260-4905-9 (पुनर्मुद्रण)

युगांत (अ. पु. मराठी क्लासिक)
इरावती कर्वे, अनु. सुर्वमणि खुंटिया
पृ. 180, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4806-9

संस्कृत

उल्लंघनम् (अ.पु. ओडिया कहानी संग्रह)
ले. प्रतिभा राय, अनु. भगीरथि नंद
पृ. 236, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-4784-0

तमिळ

आनंदरंगा पिल्लै नट कुरिप्पु उरैरंगा कट्टूरैगल
सं. आर. संबथ
पृ. 224, रु. 335/-
ISBN : 978-81-260-4881-1

वाँगामोझी चिरुकथइगल (खंड-3)
सं. अज़रु कुमार सिकदर
अनु. पी. भानुमती
पृ. 576, रु. 400/-
ISBN : 978-81-260-4819-9

कंबदासन पदइप्पालुमई
सं. आर. संबथ
पृ. 224, रु. 335/-
ISBN : 978-81-260-4822-9

कविनगर वनीदासन नुतरंडु विज़ उरैरंगा कट्टूरैगल
सं. आर. संबथ
पृ. 272, रु. 300/-
ISBN : 978-81-260-4821-2

मुदियारसाँ कविथई मुथुक्कल
सं. पारी मुदियारसन
पृ. 256, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-4828-1

परुवम (अ.पु. कन्नड उपन्यास)
ले. एस. एल. भैरप्पा, अनु. पावन्नन
पृ. 928, रु. 650/-
ISBN : 978-81-260-1438-5

शरतचंद्र चिरुकथई थोगुप्पू
ले. शरतचंद्र, अनु. पी. भानुमति
पृ. 160, रु. 140/-
ISBN : 978-81-260-4829-8

सोरकलिन मुदिविल (अ.पु. पंजाबी कविता)
ले. देव, अनु. आनैवरी आनंदन
पृ. 368, रु. 250/-
ISBN : 978-81-260-4830-4

तमिळ इलक्किया वारालारु
(तमिळ साहित्य का इतिहास)
ले. मु. वरदरासन
पृ. 456, रु. 180/-
ISBN : 81-7201-164-4 (पुनर्मुद्रण)

यज्ञनम (अ.पु. तेळुगु कहानियां)
ले. काळिपत्नम रामाराव, अनु. रुद्र तुलसीदास
पृ. 432, रु. 430/-
ISBN : 978-81-260-4833-5

उर्दू

बारोमास (अ.पु. मराठी उपन्यास)
सं. सदानंद देशमुख, अनु. ज़फ़रुल्लाह अंसारी
पृ. 455, रु. 260/-
ISBN : 978-81-260-4861-8

बिखरी बिखरी औरतें (अ.पु. अंग्रेज़ी उपन्यास)
सं. मालती राव, अनु. महजबीन निशात अंजुम
पृ. 279, रु. 160/-
ISBN : 978-81-260-4859-5

गुबारे ख़ातिर (मौलाना आज़ाद के पत्र)
सं. मालिक राम
पृ. 466, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-0132-1 (पुनर्मुद्रण)

ख़ुत्बाते आज़ाद (खंड-1)
सं. मालिक राम
पृ. 484, रु. 175/-
ISBN : 978-81-260-1155-1 (पुनर्मुद्रण)

कोहरे में क़ैद रंग (अ.पु. हिंदी उपन्यास)
ले. गोविंद मिश्र, अनु. अब्दुल नाफ़े किदवई
पृ. 227, रु. 150/-
ISBN : 978-81-260-4866-3

मोहन राकेश (विनिबंध)
ले. प्रतिभा अग्रवाल, अनु. मु. क़ासिम अंसारी
पृ. 103, रु. 50/-
ISBN : 978-81-260-4858-8

तज़्किरा (मौलाना अबुल कलाम आज़ाद पर स्मरणीय संस्करण)
सं. मालिक राम
पृ. 542, रु. 200/-
ISBN : 978-81-260-0422-3 (पुनर्मुद्रण)

प्रधान कार्यालय
रवीन्द्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23386626/27/28
फ़ैक्स : 091-11-23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in

विक्रय कार्यालय
स्वाति, मंदिर मार्ग
नई दिल्ली 110 001
दूरभाष : 011-23745297, 23364204
फ़ैक्स : 091-11-23364207
ई-मेल : ds.sales@sahitya-akademi.gov.in

मुंबई क्षेत्रीय कार्यालय
172, मुंबई मराठी ग्रंथ संग्रहालय मार्ग
दादर, मुंबई 400 014
दूरभाष : 022-24135744, 24131948
फ़ैक्स : 091-22-24147650
ई-मेल : rs.rom@sahitya-akademi.gov.in

कोलकाता क्षेत्रीय कार्यालय
4, डी.एल. खान मार्ग
कोलकाता 700 025
दूरभाष : 033-24191683, 24191705/06
फ़ैक्स : 091-33-24191684
ई-मेल : ae.rok@sahitya-akademi.gov.in

बेंगळूरु क्षेत्रीय कार्यालय
सेंट्रल कॉलेज परिसर
डॉ बी.आर.अम्बेडकर वीथी, बेंगळूरु 560 001
दूरभाष : 080-22245152
फ़ैक्स : 091-80-22121932
ई-मेल : rs.rob@sahitya-akademi.gov.in

चेन्नै कार्यालय
मेन बिल्डिंग, गुना बिल्डिंग (द्वितीय तल), 443 (304)
अन्नासलाई, तेनामपेट, चेन्नै 600 018
दूरभाष : 044-24311741, 24354815
फ़ैक्स : 091-44-24311741
ई-मेल : po.rob@sahitya-akademi.gov.in

वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in

खुर्शीद आलम द्वारा संपादित तथा के.श्रीनिवासराव, सचिव द्वारा
साहित्य अकादेमी, रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110 001 के लिए प्रकाशित
एवं विकास कंप्यूटर एंड प्रिंटर्स, दिल्ली द्वारा मुद्रित